संगीत–माला

[सस्वर वेदमन्त्र सहित]

रामकृष्ण मिशन विद्यापीठ

वैद्यनाथ–देवघर

संगीत माला

[सस्वर वेदमन्त्र सहित]

तृतीय संस्करण

रामकृष्ण मिशन विद्यापीठ

रामकृष्ण नगर (देवघर)

प्रकाशक :—

स्वामी चन्द्रानन्द

मन्त्री,

रामकृष्ण मिशन विद्यापीठ

रामकृष्णनगर, देवघर, बिहार

प्राप्तिस्थान :—

१. विद्यापीठ, देवघर,

२. उद्बोधन कार्यालय,

१, उद्बोधन लेन,

कलकत्ता-३.

३. शो रूम

वेलुड़ मठ, हावड़ा

(C) Copyright reserved by the publisher.

मुद्रक :—

श्री सुबोधकृष्ण भट्टाचार्य

इकनमिक प्रेस

२५, रायबगान स्ट्रीट, कलकत्ता-६

E. P. 2m. 2c.—1976

नम्र निवेदन

भजन तथा गाने की पुस्तक 'संगीत संग्रह' वङ्गला हरफ में छपने के कारण विद्यापीठ के भिन्नभाषियों के लिए नागरी हरफ में एक पुस्तक की चाव बढ़ी। संगीत-माला का प्रथम प्रकाशन उस चाव की पूर्ति की पहली प्रचेष्टा। पीछे चलकर इसमें वैदिक स्वरादिओं के संयोजनने इसकी परिधि चारों ओर से और भी आगे बढ़ा दी। विद्यापीठके संगीत शिक्षक का शरीर बङ्गदेशीय होने कारण तथा बहुतेरे गानों के रचयिता बङ्गीय होने के कारण पुस्तक में 'ज' तथा 'य' और 'ब' तथा 'व' का उच्चारण एकही जैसा रखा गया है। सूची में भी इसी के अनुसार वर्ण क्रम से राग-रागिणिओं के साथ सजाया गया है। कहीं-कहीं ' ो ' का प्रयोग सिर्फ मुख सुखार्थ। सब संगीत प्रेमी अपनी-अपनी सुविधा जैसी गा लेंगे—यह हमारा पूर्ण विश्वास।

इस संस्करण में पहले पहले के संस्करणों से ज्यादा संख्या में गानों के सन्निवेशन तथा सस्वर 'ईशोपनिषत्', 'नारायण सूक्त' और 'वृहदारण्यक' चतुर्थ अध्याय के पञ्चम ब्राह्मण के संयोजन तथा 'महिषासुरमर्दिनी' स्तोत्र, 'श्रीरामकृष्ण सुप्रभातम्' और अन्य-अन्य स्तोत्र आदिओं के मिलाप ने पुस्तक की विशेषता, चाव तथा परिधि और भी बढ़ा दी। कागज आदि की कीमत बढ़ जाने के कारण तथा पुस्तक का कलेबर बढ़ने के कारण कीमत भी कुछ बढ़ी।

अतीत, वर्तमान तथा भविष्यत् सब संगीत कर्ताओं के प्रति हमारी हार्दिक श्रद्धा ज्ञापन करते हुए हमारा नम्र निवेदन यह है कि छात्र, शिक्षक तथा संगीत प्रेमी भक्त सब इस पुस्तक से लाभ उठा लें।

शुभ रामनवमी
२०३३ सुदी

प्रकाशक

सूचीपत्र

अन्तरमम (भैरवी) ... १३५
अन्तरे जागिछ (सुरट् मल्लार) ... ३५
अनुपम महिम (भैरव) ... १२४
अभय पदे प्राण (प्रसादी) ... ३९
अग्निमन्त्रे दीक्षित (इमन-कल्याण) ... ४६
अयि गिरिनन्दिनि ... 21

आओरे कन्हैयारे (खमाज) ... ८२
आज आगमनीर (बाङ्गाली) ... २७
आजि कमारपुकुरे (वेहाग) ... ९४
(आजि) शंखे-शंखे (आसावरी) ... २८
आँखिया हरि (पिलु) ... ७६
आदर्श तव शंकर (मिश्र बेहाग) ... १४३
आबार यदि एले (वसन्त) ... १०१
आमार माथानत (भैरवी) ... १३०
आमरा मायेर (इमन भुपाली) ... १०८
आमार माके के (बाउल) ... ११०

आर लुकावि (वागेश्री)	...	४१
आशा बासा घोर (बेहाग)	...	३८
आसिले जननि (केदारा)	...	१०६
इतनो बिनती (सिन्धु-खमाज)	...	६१
इतनो बिनती अब (जौनपुरी)	...	८१
ईश्वरी परमा (मालकोश)	...	४५
उठगो भारत लक्ष्मी (मिश्र)	...	१३९
एइ लभिनु संग (मिश्र देश)	...	१३४
एकबार बिराजगो (कीर्तन)	...	५६
(एमा) कालभय (देश)	...	३१
एमनि माहामायार (मनोहरसाही)	...	५८
एल तोर दुष्ट (इमन खमाज)	...	११२
एलि किगो उमा (कीर्तन)	...	२७
एसेछे नूतन मानुष (बाउल)	...	९७
एसो मा एसोमा (मालकोश)	...	१७

एसो मानस (मल्लार) ... १७

ऐजे देखा याय (सिन्धु विजय) ... १२६

ओगो नवमी निशि (सिन्धु खमाज) ... ३०
ॐ ह्रीं ऋतं ... ८४

कमल आसने (मालकोश) ... १८
करुणा पाथार (खमाज) ... १११
कृष्णाय वासुदेवाय (इमन) ... ६८
कबे जाबे बल (भैरवी) ... ३०
कार बामा रणे (शंकरा) ... ४७
के गो आमार (प्रसादी) ... २५
के जाने मा तोमार (अलाहिया) ... ५८
के तुमि तमो नाशन (सिन्धु विजय) ... ९६
के तुमि नवीन योगी (सहाना) ... ११९
के तुमि बाजाले (खमाज) ... ११५
के तुमि सन्यासी (आलाहिया) ... १२०
के तोमारे जानते (प्रसादी) ... १२७

केरे नरेन्द्रबर (बागेश्री) ... ११८
के बृष परे बम बम (इमन) ... १३
केशव कुरू करूणा (मिश्रदेश) ... ७१
कोटी भास्वर निन्दित (बसन्त बहार) ... ११८
कोन हिसेवे हरहृदे (खमाज) ... ५७

खडन भब वन्धन (मिश्रबहार) ... ८३

गरजे गम्भीर (मालकोश) ... ९
गया-गंगा (परज बहार) ... ४१
गाइये गणपति (भूपाली) ... १
गाओये जगपति (भैरवी) ... १२३
गाओरे सघने (वृन्दाबनी सारंग) ... ७०
गिरधर वृजधर (दरवारी कनाड़ा) ... ५२
(गिरि) एबार आमार (पिलु) ... २४
(गिरि) गणेश आमार (मनोहर साही) २६
गिरि ! प्राण गोरी आन (केदारा) ... २९
गौराङ्ग अरधाङ्ग (दरवारी कनाड़ा) ... १३

चिन्तयमम मानस (कीर्तन) ... ६६

जगजन यौवन (भैरवी) ... ७६
जगत जननी (खमाज) ... ४२
जगत जननी जगदोम्ब (मारोवा) ... ५२
जननीं सारदां देवीं (इमन कल्याण) ... १०३
जय दुर्गे (जंगला) ... ४६
जय परमेश्वर (केदारा) ... १२
जय विवेकानन्द (आड़ाना मिश्र) ... ११६
जय वीणापाणि (मिश्र केदारा) ... २०
जय वीरेश्वर (शिवरंजनी) ... ११८
जय शिवशंकर (केदारा) ... ७
जय सीतापति (खमाज) ... ६५
जानि तुमि मङ्गलमय (काफी) ... १२४
जवाकुसुम (इमन) ... १४४
जागो जागो (आशावरी) ... १३२

यतने हृदये (फालेंड़ा) ... ५५
यदि तोर डाक (बाउल) ... १३६

याओ याओ गिरि (गुणकिरि) ... २४
या कुन्देन्दु तुषार (इमन कल्याण) ... १५
या देवी सर्वभूतेषु (इमन) ... ३२
योगासने महाध्याने (भैरव) ... १

ठुमकी चलत (झिँझिट खमाज) ... ६१

डमरू हर करे (वसन्त) ... ४
डुव डुव डुव (वाउल) ... ११२
डुव देरे मन (प्रसादी) ... ५४

तोमार चरण धोयावे (खमाज मिश्र) ... ३१
तायैया तायैया (कर्णाटी) ... ६
तारे आरति करे (बड़ाहंस सारङ्ग) ... १२५
तुइ मा आमार (मिश्र वेहाग) ... ५७
तुझसे हमने (गजल) ... १२७
तुमि कंगाल बेशे (इमन पुरवी) ... ९७
तुमि नाहि दिले देखा (जय जयन्ति) ... १३०
तुमि ब्रह्म (जय जयन्ति) ... ५८

तुमि निर्मलकर (भैरवी) ... १३१
तुम्हारे कारण (भजन) ... ७५
तुले ने राङ्गा (छायानट) ... ५३
तुँही जगत गुरू (इमन कल्याण) ... १४
तोमार असीमे (वेहाग) ... १३३
तोमारेइ करियाछि (आलाहिया) ... १२६
तोरा आज गारे (भाटीयाली) ... २५

दनुज दलनी (खमाज) ... ५०
दयाघन तोमा (खट भैरवी) ... १२६
दुखिनी ब्राह्मणी (सहाना) ... ८६
दुर्गे दलनी (अड़ाना) ... ४५
दे गो मा देखा (देश) ... १०५
देह ज्ञान दिव्य (आलाहिया) ... १२३
द्याखना समर (मल्लार) ... ५२

धनधान्ये पुष्पे (मिश्र केदार) ... १३७
धरणीर भार (भैरवी) ... १०९
धरम भेद भंजन (भैरवी) ... ११४

नब जलधर (दरबारी) ... ८१
नव सजल (हामिर) ... ५१
नयनाभिराम (पटदीप) ... ८८
नमो नमो देव (आशावरी) ... ९०
नमो नमो नमो (मिश्रकलिङ्गा) ... १०७
नमः श्री यतिराजाय (कल्याण) ... ११३
नमः शिवाय (कल्याण) ... २
नाचे पागला भोला (भैरवी) ... ६
निरंजनं नित्यं (इमन) ... ८८
नीचुर काछे नीचु (बाउल) ... १४४

परम गुरु सिद्धयोगी (मिश्र भूपाली) ६२
परब्रह्म परमेश्वर (खमाज) ... ७५
पांचजन्य पांचजन्य (मालकोश) ... ६३
पाबिना क्षेपा (परज बहार) ... ४६
पाखि तुइ ठिक (बाउल) ... १००
पीतम प्यारे (खमाज) ... ७८
पीयुष सिञ्चित (वसन्तबहार) ... १९
पीलेरे अबधूत (भाटियाली) ... ६८

प्रकृति परमां (मिश्र गौड़ सारंग) ... १०३
प्रथम प्रणति (मिश्र पुरवी) ... १४
प्रथम प्रणति वाग् (मिश्र पुरवी) ... १०
प्रभु मीशमनीश (गौड़ सारंग) ... २
प्रभु मेरे अवगुण (भैरवी) ... १२८
प्रभु मैने चाकर (भाटियाली) ... ७७
प्रेम भरे मनसे (भजन) ... १०१
प्रेमानन्दे मनरे (भैरवी) ... ८६

फुल्ल कमल परे (आलाहिया) ... २१

बङ्ग हृदय गोमुखी (पिलुबारोया) ... ५४
बड़ धूम लेगेछे (सुरटमल्लार) ... ३१
बम बम बम हर (मालकोश) ... ८
बर दे वीणावादिनी (देश) ... २३
बल बल बल सबे (मिश्र खमाज) ... १४१
बागबादिनी मातः (वहार) ... २३
बामा केरे एल (इमन कल्याण) ... ४२
बिद्यापीटेर तरुलता (मिश्र) ... ३१

विनति सुनो (वागेश्री) ... ९४
बिवेकानन्द एलोरे (सूरठ मल्लार) ... ११३
बीर दर्पे विजय (इमन कल्याण) ... ११७
बीर सेनापति (इमन कल्याण) ... ११५
बेल पाता नेय (छायानट) ... ८

भज राधाकृष्ण (मिश्र खमाज) ... ७२
भज मन राम नाम (गौड़ सारंग) ... ६२
भज मन राम राम (दुर्गा) ... ९२
भज रे श्यामापद (केदारा) ... ४०
भवानी दयानी (भैरवी) ... ४८
भारत भाग्य गगने (भैरवी) ... ९१
भाव कि भेवे (प्रसादी) ... ५३
भांग खेये विभोर (झिँझिट) ... ५
भारत काव्य निकुंजे (भैरवी) ... १६
भुलिसने भुलिसने (खट भैरवी) ... ३५
भैयारे कन्हैयारे (मिश्र खमाज) ... ७३

मङ्गल मूरती (हेमन्त) ... ६४

मजलो आमार (काफी सिन्धु) ... ४४
मन बलि भज काली (मिश्र बहार) ... ५४
मन्दिरे मम के (अड़ाना) ... १२२
मम प्राण होक (मिश्र बहार) ... १३३
मम मन मन्दिरे (मिश्र बेहाग) ... ७०
मम मानस माधवी (बेहाग खमाज) ... ७४
मलय समीरे (भैरवी) ... ९५
महाकालेर कोले (दुर्गा) ... ३४
मनुवा भजले सीताराम (भैरवी) ... ६३
मा आछेन आर आमि (बाउल) ... ४०
मा आमादेर मानुष (भैरवी) ... १०७
मा ऐसेछे (बाउल) ... १०५
मा त्वं हि तारा (भैरवी) ... ३७
मातृ मन्त्रे ओठे (मिश्र भूपाली) ... १४२
मूर्त आजिके (चन्द्रकोश) ... ४८
मूर्त महेश्वर (छाया खमाज) ... ११७
मेरे तो गिरिधर (झिँझिट) ... ७६
मोरा बिघ्न बाधा (भीमपलश्री) ... १४२

रघुवरो तुमको (पिलु) ... ६५
रण वेशे हेसे हेसे (वेहाग) ... ३८
रामकृष्ण चरण (कौमुदी खमाज) ... ९८
रामकृष्ण नाम अमिय (मूलतान) ... ६७
रामकृष्ण पदशरण (सोहिनी) ... १२१
रामकृष्ण श्याम श्याम (लझी खमाज) ... ६९
रामाय रामचन्द्राय (कल्याण) ... ६०
रिनि झिनि रिनि झिनि (मिश्र बेहाग) ... ६१

लुटकी लुटकी चलत (खमाज) ... ७३
लम्बित गले मुण्ड (कनाड़ा) ... ३९
लग रहो रे मन (मालकोश] ... ८१

शशधर तिलक भाल (भैरव) ... ४
शंकर महादेव (शंकरा) ... १०
शम्भु शुभकर (वृन्दावनी सारंग) ... ११
शिव घुचाओ आमार (वाउल) ... २
शिशुर मत मा मा मा (वाउल) ... ८७
श्यामा मा कि आमार (मिश्र आशावरी) ... ४४

श्याम सुन्दर मन (इमन भूपाली) — ७८
श्री दुर्गा नाम भुलोना (कनाड़ा भैरवी) — ४८
श्री रामकृष्ण एलोरे (सुरट मल्लार) — ९४
श्रीराम तुँही (मालकोश) — ६१
श्रीरामकृष्ण हृदय (छायानट) — १२१
श्रीरामचन्द्र कृपालु (इमन कल्याण) — ६०
श्वेत पद्मासना (वागेश्री) — १५
श्वेत शतदले (वसन्त) — १८

सरस्वती बागबादिनी (परज) — २१
सरस्वती महाभागे (कल्याण) — १५
साजे नवल किशोर (मिश्र खमाज) — ७९
साधन करना चाहिरे (भैरवी) — ७४
सारदा विद्यादायिनी (भैरवी) — २२
सिंहचारी चपथ (इमन कल्याण) — ४३
स्निग्ध शुभ्र (मालगुंज) — १९
सीमाके बीच (गजल) — ८९
सीतापति रामचन्द्र (झिँझिट) — ६३
सुन्दर तोमारि नाम (मिश्र काफी) — १२९

सुन्दर लाला नन्द (पिलु)	—	७१
सुमिरन हरिको (पुरिया)	—	६८
से कि एमनि मेयेर (जंगला)	—	४६
हओ धरमेते धीर (मिश्र)	—	१४०
हर हर हर बम (रामकेली)	—	१२
हर हर हर भूतनाथ (कनाड़ा)	—	५
हरि हरि जपतरे (राज विजय)	—	६६
हरि गुण गावे (विभाष)	—	६७
हरि बिना तेरा (आशावरी)	—	६६
हरे हर मनमोहिनी (शंकरा)	—	३७
क्षात्र वीर्य ब्रह्मतेज (मालकोश)	—	११४

वैदिक स्वरादि

शान्ति मन्त्राः	—	—	1
ईशावास्योपनिषत्	—	—	11
नारायणोपनिषत्	—	—	16
आचार्योपदेशः (तैत्तिरीय)—		—	20
बृहदारण्यकोपनिषत् (४/५)		—	22
महिषमर्दिनी	—	—	29
विद्यापीठ गीति	—	—	34
श्री रामकृष्ण सुप्रभातम्	—	—	36
श्री रामकृष्ण-मङ्गलाशासनम्		--	39

Erreta

Page	Line	Incorrect	Correct
वेदमन्त्रा—8	2	नमो	नम
		– ।	– ।
,,	2	ऋृषिभ्य	ऋषिभ्यो

श्री श्री गणपति-संगीत

(भूपाली—कव्वाली)

गाइये गणपति जगवन्दन।
शंकर-सुवन भवानी-नन्दन ॥
सिद्धि-सदन गजवदन विनायक ।
कृपासिंधु सुन्दर सब लायक ॥
मोदक - प्रिय मुद - मंगल दाता ।
विद्या-वारिधि बुद्धि-विधाता ।
मांगत तुलसीदास कर-जोरे ।
बसहिं रामसिया मानस मोरे ॥

—गो० तुलसीदास

श्रीश्री शिव-संगीत

(प्रणाम)

नमः शिवाय शान्ताय कारणत्रय-हेतवे ।
निवेदयामि चात्मानं त्वं गतिः परमेश्वर ॥

" शिवाष्टक स्तोत्रम् "

प्रभुमीशमनीशमशेषगुणं गुणहीनमहीशगराभरणम् ।
रणनिर्जितदुर्जयदैत्यपुरं प्रणमामि शिवं शिवकल्पतरुम् ॥१
गिरिराज-सुतान्वितवामतनुं तनुनिन्दितराजित कोटिविधुम् ।
विधिविष्णु शिरोधृतपादयुगं प्रणमामि शिवं शिवकल्पतरुम् ॥२
शशलाञ्छितरञ्जित-सम्मुकुटं कटिलम्बित-सुन्दर कृत्तिपटम् ।
सुरशैवलिनीकृतपूतजटं प्रणमामि शिवं शिवकल्पतरुम् ।।३
नयनत्रय भूषितचारुमुखं मुखपद्मपराजित कोटिविधुम् ।
विधुखण्डविमण्डितभालतटं प्रणमामि शिवं शिवकल्पतरुम् ॥४

वृषराजनिकेतनमादिगुरुं गरलाशनमाजि विषाणधरम् ।
प्रमथाधिप-सेवकरञ्जनकं प्रणमामि शिवं शिवकल्पतरुम् ॥५
मकरध्वजमत्तमातंगहरं करिचर्मगनागविबोधकरम् ।
वरमार्गण शूल विषाणधरं प्रणमामि शिवं शिवकल्पतरुम् ॥६
जगदुद्भव पालन नाशकरं त्रिदिवेशशिरोमणिघृष्टपदम् ।
प्रियमानव साधुजनैकगतिं प्रणमामि शिवं शिवकल्पतरुम् ॥७
अनाथं सुदीनं विभो विश्वनाथ पुनर्जन्मदुःखात् परित्राहि शम्भो ।
भजतोऽखिलदुःखसमूह हरं प्रणमामि शिवं शिवकल्पतरुम् ॥८

(भैरव—झापताल)

योगासने महाध्याने मग्न योगीवर ।
अनन्त तुषारे जेन अनन्त शेखर ॥
प्रलय - नीरब माझे, एकाकी पुरुष राजे ।
भये अग्नि भस्म माझे ढाके कलेबर ॥
शिशु शशी नाहि आर, अन्धकार निराकार,
एक, नाइ दुइ आर, प्रकृति निथर ।
कालबद्ध बर्त्तमाने, व्योमकेश व्योम पाने,
नित्य सत्य पूर्ण ज्ञाने, पूर्ण महेश्वर ॥

—गिरीशचन्द्र घोष

(भैरव—झापताल)

शशधर तिलक-भाल गंगा जटा पर,
कर लिये त्रिशूल रुद्र विराजे ॥
भस्म अंग छायि, गले रुण्डमाला,
भैरव त्रिलोचन हर योगी साजे ॥
आसन - वाहन - बृष बसन मृग छाले,
कालकूट कंठे भरा, तिमिर लाजे ।
गावत हरिगुण श्रवणे अति मधुर,
ध्यावत तान राग सदा हृदि माझे ॥

—यदूनाथ भट्ट

(बसन्त—तेवरा)

डमरू हर करे बाजे बाजे ।
त्रिशूल धर-अंग भस्म भूषण व्याल माला गले विराजे ॥
पंचबदन पिनाक धर शिव, बृषभ वाहन भूतनाथ,
रुण्ड-मुण्ड गले विराजित अजर अमर दिगम्बर रे ॥

—बिहारीलाल दूबे

(कानड़ा-सूरफाक्‌ता)

हर हर हर भूतनाथ पशुपति ।
योगीश्वर महादेव शिब पिनाकपाणि ॥
ऊर्द्ध जलत जटा जाल, नाचत व्योमकेश भाल,
सप्त भुबन धरत ताल टलमल अबनी ॥

—स्वामी विवेकानन्द

(झिझिट-एकताला)

भांग खेये बिभोर भोलानाथ भूतगण संगे नाचिछे ।
सदा काली काली बले मधुर डमरू बाजिछे ॥
शिरेते शोभिछे जटाजूट फणी,
ललाटे शोभिछे देबी मंदाकिनी,
चरण प्लाबिया भूधर धरणी,
कुलु कुलु ध्वनि करिछे ॥
बामेते शोभिछे भुबन माता,
कि कब रुप कि कब कथा,
चारि पाशे हेमलता जड़ित तड़ित रयेछे ।

कर्णेते शोभिछे धूतुरार फूल,
धूतुरा पाने आँखि ढुलु ढुल,
काली ध्याने व्याघ्रचर्म खसिया खसिया पड़िछे ।।

—प्यारी मोहन "कविरत्न"

(कर्णाटी—एकताल)

ताथैया ताथैया नाचे भोला, बम् बम् बाजे गाल ।
डिमि डिमि डिमि डमरू बाजे, दुलिछे कपाल माल ।।
गरजे गंगा जटा माझे, उगरे अनल त्रिशूल राजे ।
धक् धक् धक् मौलिबन्ध ज्वले शशांक भाल ।।

—स्वामी विवेकानन्द

(भैरवी—दादरा)

नाचे पागला भोला बाजे बम् बम् बम् ।
शिंगा बाजिछे भो भो भम् भम् भम् ।।
शिरे करिछे गंगा कल् कल् कल्
चरण चापेते धरा टल् टल् टल्

मृदंग धरे ताल ताथम् ताथम् ॥
डिमि डिमि डिमि डमरू बाजे,
फण् फण् फण् फण् फणी गरजे
नाद उठिछे सोऽहं सोहम् ॥

—स्वामी तपानन्द

(केदारा-कव्वाली)

जय शिव शंकर हर त्रिपुरारि,
पाशी पशुपति पिनाकधारी ।
शिरे जटाजूट, कंठे कालकूट,
साधक-जन-गण-मानस-बिहारी ॥
त्रिलोक पालक त्रिलोक नाशक,
परात्पर प्रभु मोक्ष बिधायक,
करुणा नयने हेर भकत जने,
लयेछि शरण चरणे तोमारि ॥

—गिरीशचन्द्र घोष

(छायानट मिश्र—कव्वाली)

बेल पाता नेय माथा पेते, गाल बाजाले हय खुशी ।
मान अपमान समान तो तार,
तार काछे नय केउ दोषी ॥
एत तो भूले थाके, नेचे आसे जे ताय डाके,
"बम भोला" बोल बले केन लओ ना जेचे जा खुशी ।
जा फेले देछे, नेय से बेछे भाल मन्द नाई हुँसई ॥
—गिरीशचन्द्र घोष

(मालकोश—एकताला)

बम् बम् बम् हर हर हर ।
वृषभ बाहन बिशाल बदन त्रिपुर नाशन ईश्वर ॥
पाद-कमले शोभे शतदल, त्रिनयने आछे शोभित भाल,
गले विलम्बित हाड़माल, जय जय शिव शंकर ॥

—गिरीशचन्द्र घोष

(बाउल—आड़ खेमटा)

शिव, घुचाओ आमार मनेर भ्रम,
बम् बम् बम् बबम् बम् ।
(आमि) तोमा बिने हये आछि
बाँश बागानेर काना डोम ॥
शिरे ढालि गंगा बारि, खुशी हबेन त्रिपुरारि,
घुचिबे भव बारि, घोड़ार डिम करबे जम ॥
—गिरीशचन्द्र घोष

(मालकोश—तेवड़ा)

गरजे गंभीर गगने कम्बू।
नाचिछे सुन्दर नाचे स्वयंभू ॥
से नाच-हिल्लोले जटा आबर्त्तने,
सागर छुटे आसे गगन-प्रांगने,
आकाशे शूल हानि, शोनाओ नब बाणी,
तरासे काँपे प्राणी, प्रसीद शंभू ॥

ललाट - शशी टलि जटाय पड़े ढलि,
से शशी चमके गो बिजूलि उठे झलि।
झाँपे नीलांचले मुख दिगंगना,
मूरछे भयभीता निशि निरंजना।
आँधारे पथ - हारा चातकी केंदे सारा,
जाचिछे बारि धारा धरा निरम्बु।

—नजरूल

(शंकरा - एकताला)

शंकर महादेव - देव सेवत सब जाके॥
भस्म अंग शीष गंग बैल वाहन अति प्रचण्ड,
गौरी अरधंग संग रंग भंग जाके॥
लपटि - झपटि जाओ व्याल और ओढ़ बाघ छाल,
रूण्ड माल चन्द्रभाल दृग विशाल जाके॥
पावत नही पार शेष नारद शारद सुरेश,
गावत गुनीगन गणेश ब्रह्मादिक जाके।

ध्यावत द्विज तुलसीदास गौरीपति चरण आस।
ऐसो हर भेख धरहीं भकति हेतु जाके॥

—गोस्वामी तुलसीदास

(वृन्दावनी सारंग - त्रिताल)

शंभु शुभकर शशांक भाल।
यम भय भंजन, उमा मनोरंजन,
गंगा जृम्भित जटा विशाल॥
भस्म विभूषण भुजंग अंगे
ब्रह्म अन्ड संहरन भ्रूभंगे
त्र्यम्बक ताण्डवे भैरव संगे,
नाच दिगम्बर कपाल माल॥
शृंग डमरूधर हर वृषभ आसन,
नीलकण्ठ दक्षाध्वर नासन
त्रिपुर विनासन अनंग शासन
मृत्यूंजय जय जय महाकाल॥

(केदार - तेताला)

जय परमेश्वर परम भिखारी,
कल्पमेरु गुरु योग आचारी ॥
तरुतल आलय, बसन दिशाचय,
भीत-निराश्रय-भवभयहारी।
हर करुणाकर बरदाभयकर,
मदन-मान-हर शिव शुभकारी ॥

—गिरीशचन्द्र घोष

(रामकेली - दादरा)

हर हर हर बम् बम् बम् बामे शोभे गौरी।
बाबा पागला भोला त्रिपुरारी ॥
आनिगे जबा तूले, मा के साजाबो फूले,
बाबाके पूजबो दूटो बिल्व दले,
बाबा भक्तिते भोले—मा भक्त नेहारे ॥

—गिरीशचन्द्र घोष

(अड़ाना—झापताल)

गौरांग अरधांगे गंगा तरंगे,
योगी महायोग का रूप राजे ॥
बाघछाल रुण्डमाल शशिभाल करताल,
ताँडेक् डिमि डिमिक डिमी डमरू बाज ।
अम्बर बाघाम्बर दिगम्बर जटाजूट
फणिधर भुजंगेश अंग विभूति छाजे ।
वाणी बिलास तुआ धाता विधाता
याता सकल दुःख सदाशिव विराजे ॥

(इमन—तेवरा)

के वृषपरे बम् बम् करे, बिमल कमले चरण दुखानि ।
त्रिशूलधारी, जटाजूट शिरे गरजे फणी ॥
हाड़माला गलेते लम्बित, इन्दु भाले विभूषित ।
आजानु लम्बित बाहु सुललित,
जटाते शोभिछे मा सुरधुनी ॥
—स्वामी विवेकानन्द

(पूरवी मिश्र - सुरफाक्ता)

प्रथम प्रणति पंचबदन हर।
कटि तटे बाघछाल शिव त्रिगुणाकर॥
भूत-प्रेत संगे, बिभूति भूषण अंगे,
धा धा धा धा धू धू धृ धू ताल धरे मृदंगे,
पिंगल जटा शिरे गले शोभे फणीहार॥

(इमन-कल्याण - झापताल)

तुंहि जगत गुरु तुंहि परमेश्वर,
आदि अनादि पिनाकधर शंकर॥
तुंहि भरण-पोषण कर सबको तारण,
सृजन प्रलय तुमसे होये विश्वेश्वर॥
भाल चंद रुण्ड माल शोभित
वृषभ वाहन और जग अघ हर।
जटाजूट मांझ गंगा विराजित
धन्य धन्य महादेव तुंहि योगेश्वर॥

गोपेश्वर वन्द्योपाध्याय

श्रीश्री सरस्वती संगीत

प्रणाम

सरस्वति महाभागे विद्ये कमल लोचने।
विश्वरुपे विशालाक्षि विद्यां देहि नमोऽस्तुते ॥

(इमन कल्याण - चौताल)

या कुन्देन्दु-तुषार-हार-धबला या शुभ्रवस्त्रावृता,
या वीणा वरदण्ड-मण्डितकरा या श्वेत-पद्मासना,
या ब्रह्माच्युत-शंकर-प्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता,
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेष-जाड्यापहा ॥

(वागेश्री-धमार)

श्वेतपद्मासना देवी श्वेतपुष्पोपशोभिता ।
श्वेताम्बरधरा नित्या श्वेतगन्धानुलेपना ॥

श्वेताक्षसूत्रहस्ता च श्वेतचन्दनचर्चिता ।
श्वेतवीणाधरा शुभ्रा श्वेतालंकारभूषिता ॥
वन्दिता सिद्धगन्धर्वैरर्चितासुरदानवैः ।
पूजिता मुनिभिः सर्वैं ऋषिभिः स्तूयते सदा ॥
स्तोत्रेणानेन तां देवीं जगद्धात्रीं सरस्वतीं ।
ये स्मरन्ति त्रिसन्ध्यायां सर्वां विद्यां लभन्ति ते ॥

(भैरवी - कहारवा)

भारत काव्य निकुञ्जे
जागो सुमंगलमयी मा।
मुंजरि तरु पिक गाहि,
करुक प्रचारित महिमा ॥
तुले लहो नीरब वीणा,
गीत-हीना अति दीना,–
हेरो भारत चिर-दुख-शयन-बिलीना ।
नीति-धर्म-मय दीपक-मन्द्रे,
जीबितो करो संजीबन मंत्रे,

(मालकोश —कहारवा)

एसो मा एसो मा वीणा-पाणि !
एसो मागो एसो, हृदासने ब'स, जगजन-मनोमोह निवारिणी।
युग युगान्त संचित तामस, चरण परशे नाश गो मा नाश।
हृदि शतदले आवार प्रकाश, शारदे शुभदे मा सितबरनी॥

—स्वामी चण्डिकानन्द

(मल्लार—कहारवा)

एसो, मानस-सरोवर बासिनी।
ढल ढल नीरे, शतदल शिरे
सुन्दर सुबिमल-हासिनी॥
मल्लार सुरे, झंकार धीरे,
रुणु रुणु झुणु झुणु चरण नुपूरे,
एसो एसो धीरे, हृदयेरि तीरे,
वीणा बिनिन्दित-भाषिणि॥

(मालकोश—धमार)

कमल - आसने धवल वसने, त्रितार करेते धरि,
एस मा अभया शिवेर तनया, सेवके करुणा करि।
आमरा तोमार अबोध संतान, जानिना जननी पूजार विधान,
विरूप ह'यो ना, चरणे ठेल ना, शिरे ढाल कृपा वारि॥
अधम आमरा नाहिक सम्वल, सेविते तोमार चरण कमल,
झरिछे सतत ताइ आँखिजल, आर किछू दिते नारि,
अभय दानिते आसियो आवार, वरष परेते सम्मुखे सवार;
हासिया खेलिया मनेर हरषे, जेन गो पूजिते पारि॥

(बसंत—तेवरा)

श्वेत शतदले शारदा राजे।
अति सुशीतल कान्ति विमल नेहारि नयन मोहिल रे॥
श्रवणे कुण्डल गले गजमति, अचला दामिनी जिनिया मूरति,
वीणा रंजित पुस्तक करे, जय जय देवो प्रणमामि ते॥
अयि मा भारती वेद मूरति, परमा शकति शिवेर कन्या,
ऋषि-आराधिता, अमर-पूजिता विश्व-वंदिता, त्रिलोक धन्या;
अज्ञान नाशिनी विज्ञान दायिनी, तुमि नारायणी वाग्वादिनी,
(जेन) वीणार झंकार गूञ्जे निरन्तर मोदेर अन्तर माझे॥

(माल गुंज—तेताला)

स्निग्ध शुभ्र कमलदल वासिनी (किवा) ।
वीणा करे शोभे वाग वादिनी ॥
थिर सुधाकर निमेष हारा,
धरनी बुके ढाले रजत धारा,
असीमे मिलाय शत राग रागिनी ॥
ज्ञान विद्या याचि तव चरणे ।
गीति सुधा आनो मर जीवने
तोमार आसन तले लुटाक ए पराण खानि ।

—निशिकान्त चक्रवर्त्ती

(बसन्त-बहार—तेताला)

पीयूष-सिंचित समीर-चंचल. कांचन अंचल दोले रे ।
संशय-शमन स्मृति-वितरण, चरणे जनमन भोले रे ॥
चम्पक अंगुली करुण परशे वीणा पंचमे बोले रे ।
ज्योतिष, गणित, वेद, दरशन, शोभे कोमल कोले रे ॥
शुभ्र हिमगिरि किरण-विकीरणे, अन्ध आँखियुग खोले रे ।
मातिल त्रिभुवन वाक्य-विधायिनी, वाणी जय रव बोले रे ॥

—रजनीकान्त सेन

(मिश्र केदारा—तेताला)

जय वीणा-पाणि सरोज-वासिनि,
नीलाम्बरा परा अम्बुज-नयनि ।
प्रफुल्ल प्रकृति फुल्ल निशापति,
प्रफुल्ल बसंते प्रफुल्ल - दायिनी,
भैरव मल्लार दीपक छायानट,
षड्राग आदि सृजनकारिणी ॥

—अज्ञात

(मिश्र-पूरवी—सुरफाक्ता)

प्रथम प्रणति वाग्देवी वीणापाणि ।
श्वेत शतदल शुभ्रा श्वेत मराल वाहिनि ॥
अज्ञान महाघोरे ज्ञान-विभा विधायिनि,
सुरासुर - नर - मोह - मुक्ति - प्रदायिनि,
किफरे कृपानेत्रे नेहार नारायणि ॥

—स्वामी चण्डिकानन्द

(परज — चौताल)

सरस्वती वाग्बाणी ब्रह्माणी दया कर दीने,
सप्तसुर तीन ग्राम शुध् वाणी।
आरोही अव्रोही अस्थायी संचारी,
श्रुति मूर्च्छना के भेद दे भवानि।
रागरंग मुद्रा शुध् संगत की तान लय,
गुरू विचार कियो दूर सोई कण्ठाणी ;
आनन्द कर दीजे मात: श्री आनन्दकिशोर को,
नाद भेद पावे सो कहावे ज्ञानी ॥

—श्री आनन्दकिशोर

(आलाहिया—जलद एकताला)

फुल्ल कमल "परे पदतल, अमल धवल वरणी।
कमल आसन कमल भूषण, विमल-कमल-हासिनी ॥
भुबन भरिल बीणार झंकारे, सुरासुरनर वन्दे तोमारे,
गुञ्जि मधुप धाय पदतले, के तुमि बीणावादिनी ॥
एस मा वस मा हृदयकमले, पूजिब चरण प्रेम अश्रुजले,
कि आछे आमार दिब उपहार, बाल्मीकि-व्यास-जननी ॥

(भैरवी— तेताल)

सारदा विद्यादानी, दयालु दुःखहरणी ।
जगतजननी, ज्वालामुखी, माता सरस्वती ॥
दीजे सुदृष्टि सेवकपर आपनि, नारायणि,
श्वेत कमलासनी, श्वेत अंगनी, श्वेत अम्बरी ॥

—शिवगोपाल राव

(काफी-सिन्धु—कहारवा)

सर्व विद्या - विधायिनि ! वाणी !
वन्दे बरदे हरि - विरञ्चि - वन्दिनि ,
नमो वाग् वादिनि वीणापाणि ।
राजहँसे राखि राङ्गा रातुल चरणे ,
सित दश शतदले विजने आपन मने ,
बाजाइछ वीणा अति ललित मोहन ताने,
श्रवण भुलिल मन गलिल मा शुनि शुनि ॥
शारदे सदया मोरे कृपा करि सशरीरे,
साध ना पुराले गो मा पा दुखानि धरि शिरे,
पिपासा मिटे ना हाय ! चाओया पाओया ना फुराय,
कि ये हय ना बुझाय जान अन्तरयामिनि ॥

—स्वामी तपानन्द

(देश—त्रिताल)

वर दे ! वीणा वादिनि वर दे !!
प्रिय स्वतन्त्र-रव अमृत-मन्त्र नव भारत में भर दे !
काट अन्ध - उर के बन्धन - स्तर
बहा जननि, ज्योतिर्मय निर्झर,
कलुष-भेद-तम हर प्रकाश भर जगमग जग कर दे !
नवगति, नवलय, ताल-छन्द नव,
नवलकंठ, नव जलद मन्द्र रव
नव नभ के नव बिहग-वृन्द को नव पर, नव स्वर दे !

—श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

(वहार—झाँपताल)

बाग्बादिनी मातः भवानी ।
नारायणी बुद्धिदानी ॥
चरन सरोज पर कत चन्द्र शोभत ।
याचे अचला भक्ति चरणे तारिणी ॥

—सुमनजी

आगमनी-संगीत

(गुणकिरि—एकताल)

जाओ जाओ गिरि, आनिते गौरी, उमा ना कि बड़ केंदेछे ।
देखेछि स्वपन, नारद वचन, उमा मा मा बोले केंदेछे ॥
सोनार बरणी गौरी आमार, भांगड़ भिखारी जामाई तोमार,
मायेर बसन भूषण सब आभरण ताओ बेचे ना कि भांग
खेयेछे ॥

(पिलू—बहार)

(गिरि) एबार आमार उमा एले आर उमाय पाठाबो ना ।
बले बलबे लोके मन्द, कारो कथा शुनबो ना ॥
यदि एसे मृत्युञ्जय, उमा नेबार कथा कय,
माये झिये क'रब झगड़ा जामाई ब'ले मान्बो ना ॥
द्विज रामप्रसाद कय; ए दुःख कि प्राणे सय,
(जामाइ) श्शाने मशाने फिरे, घरेर भावना भावेना ॥

—रामप्रसाद सेन

(भाटियाली—कहारवा)

तोरा आज गारे आगमनी।
गेये या भरेर, आसे दूर्गा-रानी।
साराटि बरस धरि, आँधार ए गिरिपुरी,
सब दुख दूरे जाबे आसिले शिबानी॥
आसे गणपति, लक्ष्मी, सरस्वती,
कार्त्तिक आसे ओई चढ़िया मयूरी,
ओई शोन केशरी; गरजे हरषे मरि रे!
साजा तोरा फूलेर साजि आसे (आमार) हृदय रानी॥

—निशाकान्त चक्रवर्त्ती

(प्रसादी, लूम-झिंझिट—एकताला)

के गो आमार मा कि एलि।
आय मा मनेर कथा बलि (ओ मा शोन मा टूटो कथा)।
एत दुःख दिये श्यामा यदि दया प्रकाशिलि,
तबे मा होये मा मायेर मत छेलेर कथा शोन् मा काली॥
दाँड़ा गो मा हृद् कमले, पूजि मानस कुसुम तुलि,
भक्ति चन्दन माखाइये पदे दिब पुष्पांजलि॥
करिब सुमहत् होम चितकुण्डे अनल ज्वालि,

पूर्णाहुति दिब ताहे 'जय काली; जय काली बलि ॥
प्राणान्त ए दक्षिणान्त, कर्मफल मा तूइ सकलि,
मायेर छेले प्रेमिक एखन, यार काछे काल कृतांजलि ॥
—प्रेमिक

(मनोहरसाही—एकताल)

गिरि गणेश आमार शुभकारी ।
पूजे गणपति पेलाम हैमवती,
चाँदेर माला जेन चाँद सारि सारि ॥
बिल्ववृक्ष मूले पातिया बोधन,
गणेशेर कल्याणे गौरीर आगमन,
घरे आनब चंडी, कर्णे शुनव चंडी,
आसबे कत दंडी जटाजूट धारी ॥
मेयेर कोले मेये दूटी रूपसी
लक्ष्मी सरस्वती शरतेर शशी
सुरेश कुमार गणेश आमार
तादेर ना देखिले झरे नयन वारि ॥
निले तार नाम पूर्ण मनष्काम
से आसिले घरे आसेन शंकरी ॥
—दाशरथी राय

(कीर्त्तन भांगासूर—एकताल)

एलि कि गो उमा, हर-मनोरमा
कैलाश-चन्द्रमा हलि कि उदय।
मा बले एक बार आय कोले आमार,
ना हेरे संसार हेरि शून्यमय ॥
प्राणेर प्राण उमा, तुइ जे प्राण-पाखी
ना हेरिले तोरे झरे दूटी आंखि!
एक बार आय आय देखि, उमा चन्द्र-मुखि!
तुइ जे आमार सर्व्व सुखेर निलय ॥
नैश-नीलाम्बरे निरखि जखन, चन्द्रमार छवि भुवन-मोहन,
मने पड़े मा, तोर ओ चन्द्रवदन
शत धारे चोखे वारिधारा बय ॥

—दीनेश शरण बसु

(बाङ्गाली—एकताल)

आज आगमनीर आवाहने कि सुर उठेछे बेजे।
दोयेल श्यामा डाक दिल ताइ बरणेर एयो सेजे ॥
भरा भादरेर भरा नदी, कुलु कुलु छोटे निरवधि!

से सूर गीतालि देय करतालि, नाचे तरंग दोलने रे ।
पूरब दीपक आरतिर दीप शत छटा मेघ जाले,
दिक् बाला ताय आलता गुलेछे रक्त आकाश थाले ।
घासेर बूकेते शिशिर नीर धोयाबे ओ रांगा-चरण धीर
सबुज आँचले मुछे नेबे ब'ले धरणी श्यामला सेजेछे रे ।।

(मिश्र आसावरी—एकताल)

(आजि) शंखे शंखे मंगल गाओ जननी एसेछे द्वारे ।
सप्तसिन्धु कल्लोल रोल बेजेछे सप्त तारे ।।
सुर सप्तक तुलेछे तान सप्त ऋषिर गाने,
सप्त स्वर्गे दून्दुभि घोषे सप्त प्रहेर टाने,
अन्तरे आज सप्त सुरेर नव जागरण स्वरे ।।
सात रांगा रबि रामधनु हाते मरणेर वाण हाने
सप्तकोटि सुसन्तान विजय माल्य आने ।
सप्त तीर्थ एक साथ हये हृदि मन्दिर द्वारे
तुले नाओ बूके तारे ।।

—गङ्गानारायण

(केदारा—एकताल)

गिरि ! प्राणगौरी आनो आमार।
उमा विधुमुख ना देखि बारेक
ए घर लागे अन्धकार ॥
आजि कालि करि दिबस जाबे,
प्राणेर उमारे आनिबे कबे,
प्रतिदिन किहे आमारे भुलाबे,
एकि तब अविचार ॥
सोनार मैनाक डुबिलो नीरे,
से शोके रयेछि पराणे धरे ;
धिक् हे आमारे धिक् हे तोमारे
जीवने कि आछे साध आर ॥
कमलाकान्त कहे नितान्त
केन्दो नाको राणि हओ गो ! शान्त ;
के पाइवे तोमार उमार अन्त,
तुमि कि भावो असार ॥ —कमलाकान्त चक्रवर्त्ती

(भैरवी-जलद-तेताला)

कबे जाबे ब'ल गिरिराज ! गौरीरे आनिते ।
व्याकुल हयेछे प्राण उमारे देखिते हे ॥
गौरी दिये दिगम्बरे, आनन्दे रयेछ घरे,
कि आछे तब अन्तरे ना पारि बुझिते ।
कामिनी करिल विधि, ताइ जे तोमारे साधि,
नारीर जनम केबल यन्त्रणा सहिते ।
सतिनी सरला नहे, स्वामी से श्मशाने रहे,
तुमि हे पाषाण ताहे, ना करो मनेते ॥

—गिरीशचन्द्र घोष

(सिन्धु-खण्बाज—यत्)

(ओगो) नवमी निशि तुमि आर येन पोहायोना,
तुमि गेले आमार उमा जावे ए दुःखीर प्राण आर बाँचवेना ।
सप्तमी अष्टमीते आमि छिलाम मनेर सुखेते,
अरे नवमी तुइ माथा खेते एलि केन बल ना ?

—अज्ञात

(खमाज मिश्र—एकताला)

तब चरण धोयाबे शारद शिशिर
शेफालि अर्घ्य देबे ।
धरणी श्यामल आसन बिछाबे
तुमि मा आसिबे जबे ॥
रक्त उषाते सिन्दुरेर टिप्
पराबे मा तोर भाले ।
चाँदिमा आरति दिये जाबे मागो
सुनील गगन तले ।
कत शत शत कमल कुमारी
तोमारे पुजिते चाहे,
दिके दिके तब आगमन गीति
दोयेल श्यामा गाबे ॥

—निशाकान्त चक्रवर्त्ती

मातृ-संगीत

या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥
सर्वमङ्गलमङ्गल्ये शिवे सर्व्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते॥
सृष्टि स्थिति विनाशानां शक्तिभूते सनातनि।
गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तुते॥
शरणागत - दीनार्त्त - परित्राण - परायणे।
सर्वस्यार्ति हरे देवि नारायणि नमोऽस्तुते॥
जय नारायणि नमोऽस्तुते, जय नारायणि नमोऽस्तुते।
जय नारायणि नमोऽस्तुते, जय नारायणि नमोऽस्तुते॥

(देश – तेवरा)

(एमा) काल भय बारिणी कपालिनी, काल रूपिणी,
शम्भुभामिनी, निशुम्भ घातिनी, समर बासिनी सुर बन्दिनी।
पुर - हर - मनोमोह कारिनी, सत्य बादिनी ;
तत्व दायिनी, त्रास नाशिनी, त्राण कारिनी, तिमिर बरणी॥

त्रिगुण धारिणी; त्रिदिब जननी, त्रिलोकेशी तेज रूपिणी ;
अन्न दायिनी, अमर पालिनी, असुर दलनी, आदि कारिणी,
आशुतोष-हृदि बिलासिनी, आत्म रूपिणी ॥

—आशुतोष देव

(सुरट-मल्लार—तेवरा)

बड़ धूम लेगेछे, हृदि कमले ।
मजा देखिछे आमार मन-पागले ॥
हतेछे पागलेर मेला खेपाते खेपीते मिले,
आनन्देते सदानन्दे आनन्दमयी पड़छे ढले ॥
देखे अबाक लेगेछे ताक् इन्द्रिय आर रिपु दले,
पेये सुजोग एइ गोलजोग ज्ञानेर कपाट गेछे खुले ॥
प्रेमिक पागल बले सकल, ता ब'ले आमार मन कि टले,
(यार) पिता माता बद्ध पागल भालो हय कि तादेर छेले ॥
शोन् मा तारा भूभार हरा एइ बेला मा डाकछि ब'ले
(जखन) आसब जले अन्त काले तनय ब'ले करिस् कोले ॥

—प्रेमिक

(दुर्गा—तेवरा)

महाकालेर कोले एसे गौरी हलो महाकाली ।
श्मशान चितार भस्म मेखे म्लान् हलो मार रूपेर डालि ॥
तबू मायेर रूप कि हाराय
से जे छड़िये आछे चन्द्रताराय ।
मायेर रूपेर आरति हय नित्य सूर्य-प्रदीप ज्वालि ॥
उमा हलो भैरबी हाय, बरण करे भैरबेरे,
हेरि शिबेर शिरे जाह्नबीरे श्मशाने मशाने फेरे ;
अन्न दिते त्रिजगते, अन्नदा मोर बेड़ाय पथे ;
भिक्षु शिबेर अनुरागे, भिक्षा मागे राजदुलाली ॥

—नजरुल

(खमाज—कहारवा)

समरे नाचेरे श्यामा शिब सीमन्तिनी ।
आलो करे कालो रूपे कराल बदनी ॥
रोषेते लोचन लाल रुधिरे चरण लाल,
रांगा पाये जबा लाल मराल गामिनी ॥
अपरूप तनु काल काल से चिकुर-जाल,
दशन झलके जेन मेघेते दामिनी ॥

—स्वामी चण्डिकानन्द

(खट्भैरवी-यत्)

भूलिसने भूलिस्‌ने ओमा
आमि जे तोर अबोध छेले ।
आमि यदि थाकि भूले
निस् मा कोले छेले बले ॥
जे - बाँधने बाँधा थाकि;
हय ना मने बारेक् डाकि
(मा) दयामयी दिस्‌ने फाँकि
भूलिस्‌ने मा दिन फूराले ॥
खेला घरे धूलो - खेला,
जतइ खेलि ततइ ज्वाला,
डाकि तोरे बिपद् - बेला
चरण दिस् मा मरण काले ॥

—कालीपद घोष

(सुरट-मल्लार—झाँपताल)

अन्तरे जागिछ गो मा, अन्तरयामिनि,
कोले कोरे आछो मोरे दिबस यामिनी ॥
अधम सुतेर प्रति केन एत स्नेह प्रीति,
प्रेमे आहा एकेबारे जेन पागलिनी ॥

कखनो आदर करि, कखनो सबले धरि,
पियाओ अमृत सुनाओ मधुर काहिनी ॥
निरवधि अविचारे कत भालबास मोरे
उद्धारिछ बारे-बारे पतितोद्धारिणी ॥
बुझेछि एबार सार, मा आमार आमि मार,
चलिब सुपथे सदा सुनि तव वाणी,
करि मातृ स्तन्यपान, हब बीर बलवान,
आनन्दे गाहिब जय ब्रह्म सनातनी ॥
—त्रैलोक्यनाथ सन्याल

(मनोहर साही—झाँपताल)

सकलि तोमार इच्छा इच्छामयी तारा तुमि ।
तोमार कर्म तुमि कर मा, लोके बोले करि आमि ॥
पङ्के बद्ध कर करी पङ्गुरे लंघाओ गिरि ।
कारे दाओ मा ब्रह्मपद, कारे कर अधोगामी ॥
आमि यन्त्र तुमि यन्त्री आमि घर तुमि घरनी ।
आमि रथ तुमि रथी येमन चालाओ तेमनि चलि ॥
प्रसाद बले क्षेपा मन, तुइ कारे करिस् भय ।
ए तनु दक्षिणा कालीर पदे करेछि बिक्रय आमि ॥
— रामप्रसाद

(शंकरा—एकताला)

हेर हरमनोमोहिनी के बले रे काल मेये।
(आमार) मायेर रूपे भुबन आलो चोख थाके तो देखना चेये ॥
बिमल हासि खरे शशी, अरुण पड़े नखे खसि,
एलोकेशी श्यामा षोड़शी,
कमल भ्रमे भ्रमर भ्रमे, बिभोर भोला चरण पेये ॥

—गिरीशचन्द्र घोष

(भैरवी—एकताला)

मा त्वं हि तारा, तुमि त्रिगुण धरा परात्परा।
आमि जानि गो ओ दीन दयामयी, दुर्गमेते दुखहरा ॥
तुमि जले तुमि स्थले, तुमि आद्यमूले गो मा,
आछ सर्व्वघटे अक्षपुटे, साकार आकार निराकारा ॥
तुमि सन्ध्या तुमि गायत्री, तुमि जगद्धात्री गो मा,
(तुमि) अकूलेर त्राणकर्त्री, सदा शिबेर मनोहरा ॥

बेहाग—कहावबा)

आशा बासा घोर-तमोनाशा बामा के (मोहिनी)
घोर घटा कान्तिछटा ब्रह्म कटा ठेकेछे।
रूपसी शिरसि शशी, हरोरसि एलोकेशी,
मुख ज्वाला सुधा ढाला कुलबाला नाचिछे ॥
द्रुत चले आस्य टले, बाहु बले दैत्यदले ;
डाके शिवा कब किबा निशि दिबा करेछे ॥
क्षीन-दीन भाग्यहीन दुष्ट चित्त सुकठिन,
रामप्रसादे कालीर बादे कि प्रमादे ठेकेछे ॥

—रामप्रसाद सेन

(बेहाग—ठुमरी)

रण बेशे हँसे हँसे ऐ बामा एसेछे।
करे असि पदे शशी कि रूपसी सेजेछे ॥
नयने अनल ज्वले, नरशिर शोभे गले,
दलिते दनुज दले ढले ढले चलेछे ॥
रुधिर लेगेछे गाय, नील जले जबा प्राय,
आँखि ना फिरिते चाय; कि सुखेते मजेछे,
आ मरि कि रूप हाय, अरूप उथले ताय,
साधे कि रे ओइ पाय, पशुपति पड़ेछे ॥

—स्वामी चण्डकानन्द

(कनाड़ा—एकताला)

लम्बित गले मुण्डमाल दम्भिता घनि मुख-कराल,
स्तम्भिता पदे महाकाल, कम्पिता भये मेदिनी ॥
दिग्वसना चन्द्र - भाल एलाये पड़ेछे केशजाल,
शोभित असि करे कपाल प्रखरा शिखरि-नन्दिनी ।
चारिदिके कत दिकपाल, भैरबी शिबा ताल बेताल,
अति अपरूप रूप बिशाल काली कलुष नाशिनी ॥

—दाशरथी राय

(प्रसादी—एकताल)

अभय पदे प्राण सँपेछि ।
आमि आर कि यमेर भय रेखेछि ॥
काली नाम कल्पतरु, हृदये रोपन करेछि ।
ए देह बेचे भबेर हाटे दुर्गा नाम किने एनेछि ॥
देहेर मध्ये सुजन जे जन, तार घरेते घर करेछि ।
एबार शमन एले हृदय खुले देखाबो भेबे रेखेछि ॥
सारात्सार तारा नाम, आपन शिखाग्रे बेंधेछि ।
रामप्रसाद बले दुर्गा बले, यात्रा करे बसे आछि ।

—रामप्रसाद सेन

(बाउल—एकताल)

मा आछेन आर आमि आछि भाब्ना कि आछे आमार,
मार हाते खाइ परि मा नियेछेन आमार भार ॥
(प'ड़े) संसार पाके घोर बिपाके जखन् देख्बि अन्धकार।
(सेइ) घोर अँधारे मा आमारे माभै शुनाय बारे बार ॥
(एसे) छय जनाते एकइ साथे पथ भूलाय जे कतबार,
(सेइ) बिपद होते धरे हाते मा ये करिछेन उद्धार ॥
(एत) भूले थाकि तबुओ देखि भोले ना मा एक्टि बार,
(एमन) स्नेहेर आधार के आछे आर मा ये आमार आमि मार ॥

—मनमोहन चक्रबर्त्ती

(केदार – तेताला)

भज रे श्यामापद पंकज राज।
पिओ पिओ पिओ मधु हये मातोवारा ॥
मा, मा, मा झङ्कार मन-मधुकर,
झरुक अबिरल अखण्ड अमृतधार,
अहर्निशि अनिमेषे मार मुख नेहार,
तारा, तारा, तारा बले हये बाओ हारा ॥

—स्वामी तपानन्द

(बागेश्री—दादरा)

(आर) लुकाबि कोथा मा काली ।
बिश्व भूबन आँधार करे तोर रूपे मा सब भूलालि ।
सुखेर गृह श्मशान करे बेडास् मा तुइ आगुन ज्वालि ।
(आमाय) दु:ख देओयार छले मा, तोर भुबन भरा रूप देखालि ।।
पूजा करे पाइनि तोरे (मागो) एबार चोखेर जले एलि ।
बुकेर व्यथाय आसन पाता बस् मा सेथा दुख्-दुलाली ।।

—नजरूल

(परज-बहार—झाँपताल)

गया गंगा प्रभासादि काशी काँची केबा चाय ,
काली काली काली बले अजपा यदि फुराय ।
त्रिसन्ध्या जे बले काली पूजा सन्ध्या से कि चाय ,
सन्ध्या तार सन्धाने फेरे कभू सन्धि नाहि पाय ।।
जप यज्ञ पूजा होम आर किछु ना मने लय ,
मदनेर जाग यज्ञ ब्रह्ममयीर रांगा पाय ।
काली नामेर एतइ गुण केबा जानते पारे ताय ,
देबादिदेब महादेब यार पंचमुखे गुण गाय ।।

—मदन

खमाज—चौताल (सञ्चार—धमार)

जगत जननी जागियाछे आजि जय मा तारिणी गाओ रे ।
बाजाओ डङ्का नाहिक शङ्का घुचे गेछे भव भय रे ॥
नेहारि दानब-निपीड़ित धरा, दानब-दलनी पागलेर पारा,
मुखे अट्टहास त्रिभुवन-त्रास बुझिबा सृष्टि जाय रे ॥
डाकिनी जोगिनी नाचिछे संगे, ग्रासिछे दानब कत ना रंगे,
रुधिर लेगेछे सकल अंगे पदभरे धरा टले रे ।
दानब नाशिते असिमुण्डधरा, भकतेर तरे बराभयकरा,
रूद्र मधुरे अपरूप तारा; हेरिले प्राण जुड़ाय रे ॥
—स्वामी चण्डिकानन्द

(इमन-कल्याण—धमार)

बामा केरे एलो चिकुरे ।
बिहरे आनन्दमयी शबहृदि प'रे ॥
बसन नाहिक गाय, पद्मगन्धे अलि धाय,
चले जेते ढले पढे आसब भरे ॥
जे ठेकेछे राङ्गा पाय, हत-दिति-सूतचय,
स्पशमात्र शिब हय समर माझारे,
कमलाकान्तेर भाषी, सबनाशि, धरे असि
करिलि सब काशीबासी जनमेर तरे ॥
—कमलाकान्त चक्रवर्ती

(इमन-कल्याण—तेवरा)

सिंहचारी स्वपथ धाओये, असुर-सुरगण गगन छाओये,
रक्त-बीज-मारी करे रुधिर धारे ।
इन्द्र चन्द्र करत ध्यान, भये धरणी कम्पमान,
आओये हरि शङ्खनादे सकल चरण पाओये ।।
ब्रह्मा हरि हर धरणी अम्बर, सिद्ध किन्नर सजल जलधर,
ज्योतिः संचारे ।।

(मनोहरसाही—झाँपताल)

सदानन्दमयी काली, महाकालेर मनोमोहिनी ।
(तुमि) आपनि नाच, आपनि गाओ मा आपनि दाओ मा करतालि ।।
आदिभूता सनातनी शून्यरूपा शशी-भाली ।
ब्रह्माण्ड छिल ना जखन, मुण्डमाला कोथाय पेलि ।।
सबे मात्र तुमि यंत्री आमरा तोमार तन्त्रे चलि ।
(तुमि) जेमनि नाचाओ तेमनि नाचि, जेमनि बलाओ तेमनि बलि
अशान्त कमलाकान्त दिये बले मा गालागालि ।
(एबार) सर्व्वनाशी धरे असि धर्माधर्म दुटो खेलि ।।

—कमलाकान्त चक्रवर्ती

(मिश्र आसावरी—एकताला)

श्यामा मा कि आमार काल रे।
लोके बले काली कालो, आमार मन तो बले ना कालो रे ॥
कखनओ श्वेत कखनओ पीत कखनओ नील लोहित रे,
(आमि) आगे नाहि जानि केमन जननी, भाबिये जनम गेलोरे;
कखनओ पुरुष कखनओ प्रकृति कखनओ शून्यरूपा रे,
(मायेर) ए भाब भाविये कमलाकान्त सहजे पागल ह'लरे ॥

—कमलाकान्त चक्रबर्ती

(काफी-सिन्धु—यत्)

मजलो आमार मन-भ्रमरा श्यामापद नील कमले।
(श्यामापद नील कमले, कालीपद नील कमले)
यत बिषय मधु तुच्छ हल कामादि कुसुम सकले ॥
चरण कालो भ्रमर कालो कालोय कालो मिशे गेले,
पंचतत्व प्रधान मत्त रंग देखे भंग दिले ॥
कमलाकान्तेर मने, आशापूर्ण एतो दिने,
(ताय) सुख दुख समान् हल आनन्द-सागर उथले ॥

—कमलाकान्त चक्रबर्त्ती

(आड़ाना—झांपताल)

दुर्गे दलनी दुःख दारिद्र-दहनी,
दुष्ट-विदारिणी हर-शम्भु जाया ॥
असुर - संहारिणी रक्तबीज-नाशिनी
दीन-अभय वरा सुर-नर पाया ॥
संसार - तारिणी तारा तरणी ते
उद्धरे कृपाली जो परमा माया,
सप्तद्वीप नव खण्ड त्रैलोक्य - व्यापित
याचे सुयश चारु आनन्द-दाया ॥

(मालकोश—धमार)

ईश्वरी परमा ।
निर्गुणा त्रिगुणा एका हओ नाना ।
अचिन्त्य अतुलना तुमिइ आमार मा ॥
जगत जीब ईश भिन्न ब्यबहारे
लीला कर सृजन पालन संहारे
ए माया सराये स्वरूप महामाये
देखाओ सच्चिदानन्दमयि ! शुद्धा भूमा ॥

—स्वामी तपानन्द

(परज-बहार—झाँपताल)

पाबि ना क्षेपा मायेरे क्षेपार मत ना क्षेपिले ,
सेयान पागल बुच्‌कि बगल, काज हबे ना ओरूप होले ॥
शुनिस्‌ने तुइ भबेर कथा, ए जे बन्ध्यार प्रसब व्यथा,
सार करे श्रीनाथेर कथा चोखेर ठुलि दे ना खुले ॥
माया मोह भोग तृष्णा देबे तोरे जतइ ताड़ा ,
बोबार मत थाक्‌बि बसे, से कथाय ना दिये साड़ा ;
निवृत्तिरे लये साथे, भ्रमण कर तत्वपथे ,
नृत्य कर प्रेमे मेते, सदा काली काली ब'ले ॥
मजा आछे ए पागले, जानबि आसल्‌ पागल्‌ हले ,
'आयरे पागल्‌ छेले' ब'ले ऐ पागली माये नेबे कोले ,
फुराबे पागलेर मेला घुचिबे त्रितापेर ज्वाला ,
शान्तिधामे करबि लीला ए युक्ति प्रेमिक बले ॥

—प्रेमिक

(इमन-कल्याण—एकताल)

अग्निमन्त्रे दीक्षित कर सन्ताने तब आज ।
आशीर्बादेर बर्म पराओ घुचाये दैन्य साज ॥

तप्त कर मा हृदय-रुधिर, दूर करे दाओ भीति अश्रुनीर।
दाँड़ाइ आमरा मा तोरे घिरिया बिश्व-सभार माझ ॥
मानुष आमरा, नहि तो मा हीन, तुइ यार मा से
कि कभु दीन ?
तबे केन मिछे, पड़े थाका पिछे, केन ए अलीक लाज ?
एसो एसो एसो, एसो मा आमार, दशप्रहरण-धारिणी ,
हास मा अट्ट अट्ट हास्य भूलोके द्युलोक नादिनी ;
(मोरा) करि बिदूरित स्वार्थ द्वन्द्व साधिया तोमार काज ॥

—स्वामी चण्डिकानन्द

(शंकरा—ठुमरी)

का'र बामा रणे नाचिछे।
सुधा पाने ढल ढल ढले पड़िछे ॥
एकेतो नीरद-काय त्रिभङ्ग भङ्गिमा ताय ,
कालिन्दी-सलिले येन जबा भासिछे ॥

—रघुनाथ राय देओयान

(चंद्रकोश—एकताला)

मूर्त आजिके मृत्यु-रूपिणी नृत्य करिछे रङ्गे ।
अट्ट हासिछे दानब नाशिछे डाकिनी योगिनी संगे ॥
प्रलय अनल ज्वले त्रिनयने रूद्र झंझा गरजे सघने ,
दैत्य-दलनी अमर-पालिनी, त्राहि मे चिर-प्रपन्ने ॥

स्वामी चण्डिकानन्द

(भैरवी—झाँपताल)

भवानी दयानी महावाक्वाणी
सुर-नर-मुनि-जन मानि सकल बुधज्ञानी ।
जगजननी जगजानि महिषासुर-मर्दिनी ,
ज्वालामुखी चण्डी अमरपद - दानी ॥

(कानाड़ा—एकताल)

श्रीदुर्गा नाम भुलोना, भुलोना, भुलोना ।
श्रदुर्गा स्मरणे समुद्रमन्थने विषपाने विश्वनाथ मलोना ॥
यद्यपि कखनो विपद घटे श्रीदुर्गास्मरण करियो संकटे ।
ताराय दिये श्री र सुरथ राजार लक्ष असिर घाते प्राण गेलना ॥

बिभु नामे एक राजार छेले यात्रा करेछिल श्रीदुर्गा बले।
आसिवार काले समुद्रे र जले डुबेछिल तबु मरण होल ना ॥

—रामप्रसाद

(जंगला—त्रिताल)

जय दुर्गे दुर्गति परिहारिनी, शुम्भविदारिनी मात भवानी।
आदिशक्ति परब्रह्म स्वरूपिणी, जगजननी चहुँ बेदबखानी ॥
ब्रह्मा शिव हरि अर्चन कीनो, ध्यान धरत सूर नर मुनि ज्ञानी।
दशभुजा कर खड़्ग विराजे, सिंह सवार सकल वरदानी।
ब्रह्मानन्द शरण में आयो, भब भय नाश करो महारानी ॥

ब्रह्मानन्द

(जंगला—एकताला)

से कि एमनि मेयेर मेये।
यार नाम जपिये महेश बाँचेन हलाहल खेये ॥
सृष्टि स्थिति प्रलय करे मा कटाक्षे हेरिये।
आबार अनन्त ब्रह्माण्ड राखे उदरे पूरिये ॥

जे चरणे शरण ल'ये देबता बाँचेन दाये।
देबेर देब महादेव यार चरणे लुटाये ॥
प्रसाद बले रणे चले मा रणमयी हये।
शुम्भ निशुम्भके बधे हुङ्कार छाड़िये ॥

— रामप्रसाद सेन

(खमाज—एकताल)

दनुजदलनी, निजजन-प्रतिपालिनी श्रीकाली ॥
चण्ड मुण्ड खण्ड खण्डि, महिषासुर छिन्दि भिन्दि
शुम्भ निशुम्भ सभट समरे निमेषे महाकाली ॥
ध्यावत तुया पावत, इन्द्रादिक—सुर अष्टसिद्धि
अर्थादिक चतुरवर्ग तुया कृपा मृडानी ;
माङ्गे तुझे अचला भक्ति, दीजे निज दास जानि,
सदा भक्तवत्सल हो मातः तु बडी कृपाली ॥

(खमाज—कहारवा-आद्धा)

समरे नाचेरे कार ए रमणी
नाशिछे तिमिरे तिमिर बरणी ॥
हुहुँकार रबे मगना ताण्डवे,
चमके दमके जेन रे दामिनी ॥

अट्ट अट्ट हासि समर उल्लासि,
दितिसुत नाशे दनुज - दलनी ।।
असुर संहारे असिर प्रहारे,
बराभय करे सृजन - पालिनी ।।
वामा भयङ्करा भीषणे मधुरा,
हर मनोहरा मानस मोहिनी ।।
संसार - अरण्ये अनन्य शरण्ये,
श्री रामप्रसन्ने शरण दायिनी ।।

—रामप्रसन्न वन्द्योपाध्याय

(हामिर—तेताला)

नव - सजल - जलधर - काय ।
श्यामारूप हेरिले, कालीरूप हेरिले, प्राण गले जाय ।।
कपाले सिन्दुर, कटिते घुङ्गुर, रतन-नूपुर पाय (मायेर)
हासिते हासिते दानव नाशिछे, रुधिर लेगेछे गाय (मायेर) ।।
चरण युगल अति सुशीतल, प्रफुल्ल कमल प्राय (आ मरि)
कमलाकान्तेर मन निरन्तर, भ्रमर हइते चाय (ओ पदे) ।।

—कमलाकान्त चक्रवर्ती

(हामिर— तेताला)

जगत-जननी-जगदौम्ब भवानी ; कृपा करणी दुःखहरणी
सुख करणी ।
प्रणत जन शरणी भवजलधि तरणी ॥
मैं पतित सेवक घरणनको, मुझपर कृपादृष्टि अव् कीजे
महामाया योगिनी शिवानी ॥
प्रणत शरणी, भव जलधि तरणी ॥

—अज्ञात

(मारोवा—त्रिताल)

धाखूना समर आलो करे रे कार कामिनी ।
सजल जलद जिनिया काय, दशने प्रकाशे दामिनी ॥
एलाये चाँचर-चिकुर-पाश, सुरासुर माझे ना करे त्रास ।
अट्टहासे दानब नाशे, रण प्रकाशे रङ्गिनी ॥
किबा शोभा करे श्रमज-बिन्दु, घन तनु घेरि कुमुदबन्धु,
अमिय सिन्धु हेरिये इन्दु मलिन ए कोन मोहिनी ;
एकि असम्भब भव-पराभव पदतले शब-सदृश नीरब,
कमलाकान्त कर अनुभब, के बटे ए गजगामिनी ॥

—कलाकान्त चक्रवर्त्ती

(प्रसादी—एकताला)

भाव कि भेवे पराण गेल (मायेर) ।
(जाँर) नामे हरे काल, पदे महाकाल, ताँर केन काल रूप हल ।।
कालो रूप अनेक आछे, ए बड़ आश्चर्य कालो,
(जाँरे) हृद्माझारे राख्ले परे हृदयपद्म करे आलो ।।
नामे काली रूपे काली ; कालो हतेओ अधिक कालो,
(ओ रूप) जे देखेछे सेइ मजेछे अन्य रूप लागे ना भालो ।।
प्रसाद बले कुतुहले, एमन् मेये कोथाय छिलो,
(जाँरे) ना देखे नाम शुने काने मन गिये ताय लिप्त हलो ।।

—रामप्रसाद सेन

(छायानट—खेमटा)

तुले ने राङ्गा जबा मायेर पाये साजबे भालो !
चल् त्वरा, पूजबो तारा घुचे जाबे मनेर कालो ।।
नाचबे श्यामा हृद्कमले, धोबो चरण नयन जले ।
बदन भरे डाकबो ओमा ! मायेर रूपे जगत् आलो ।।

—गिरीशचन्द्र घोष

(पिलू-बहार—झाँपताल)

मन बलि भज काली इच्छा हय तोर जे आचारे ।
गुरुदत्त महामन्त्र दिबानिशि जप करे ॥
शयने प्रणाम ज्ञान, निद्राय करो माके ध्यान,
आहार करो मने करो आहुति दिइ श्यामा मारे ॥
जत शोनो कर्णपुटे सबइ मायेर मन्त्र बटे,
काली पञ्चाशत वर्णमयी बर्णे बर्णे नाम धरे ॥
आनन्दे रामप्रसाद रटे, मा-बिराजेन सर्बघटे
नगर फेरो मने करो प्रदक्षिण श्यामा मारे ॥

—रामप्रसाद सेन

(प्रसादी—एकताला)

डूब् देरे मन काली बले, हृदि रत्नाकरेर अगाध जले ॥
रत्नाकर नय शून्य कखन, दु'चार डुवे धन ना पेले ।
तुमि दम् सामर्थे एक् डूबे जाओ, कुल कुण्डलिनीर कूले ॥
ज्ञान समुद्रेर माझे रे मन, शान्तिरूपा मुक्ता फले ।

तुमि भक्ति क'रे कुडाये पावे, शिव जुक्ति मतो चाइले ॥
कामादि छय कुम्भीर आछे, आहार लोभे सदाइ चले।
तुमि बिबेक्-हल्‌दि गाय मेखे जाओ, छोंबेना तार गन्ध पेले ॥
रतन माणिक्य कत प'ड़े आछे सेई जले।
रामप्रसाद बले, झम्प दिले मिल्‌बे रतन पले पले ॥

—रामप्रसाद सेन

(कालेंडा— झाँपताल)

जतने हृदये रेखो आदरिणी श्यामा माके।
(मन) तुइ द्याख्‌ आर आमि देखि, आर जेन केउ नाहि देखे ॥
कामादिरे दिये फाँकि, आय मन बिरले देखि।
रसनारे संगे राखि, से जेन मा बले डाके ॥
कुरुचि कुमन्त्री जत, निकट हते दिओ नाको,
ज्ञान नयने प्रहरी रेखो, से जेन साबधाने थाके ॥
कमलाकान्तेर मन, भाइ आमार एइ निबेदन,
दरिद्रे पाइले धन से कि अजतने राखे ॥

—कमलाकान्त चक्रबर्ती

(हाम्बिर—तेताला)

जगत-जननी-जगदौम्ब भवानी ; कृपा करणी दुःखहरणी
सुख करणी ।

प्रणत जन शरणी भवजलधि तरणी ।।

मैं पतित सेवक घरणनको, मुझपर कृपादृष्टि अब् कीजे
महामाया योगिनी शिवानी ।।

प्रणत शरणी, भव जलधि तरणी ।।

—अज्ञात

(मारोवा—त्रिताल)

घाखना समर आलो करे रे कार कामिनी ।
सजल जलद जिनिया काय, दशने प्रकाशे दामिनी ।।
एलाये चाँचर-चिकुर-पाश, सुरासुर माझे ना करे त्रास ।
अट्टहासे दानब नाशे, रण प्रकाशे रङ्गिनी ।।
किबा शोभा करे श्रमज-बिन्दु, घन तनु घेरि कुमुदबन्धु,
अमिय सिन्धु हेरिये इन्दु मलिन ए कोन मोहिनी ;
एकि असम्भब भब-पराभब पदतले शब-सदृश नीरब,
कमलाकान्त कर अनुभब, के बटे ए गजगामिनी ।।

—कलाकान्त चक्रवर्त्ती

(प्रसादी — एकताला)

भाब कि भेबे पराण गेल (मायेर) ।
(जाँर) नामे हरे काल, पदे महाकाल, ताँर केन काल रूप हल ॥
कालो रूप अनेक आछे, ए बड़ आश्चर्य कालो,
(जाँरे) हृद्माझारे राख्ले परे हृदयपद्म करे आलो ॥
नामे काली रूपे काली ; कालो हतेओ अधिक कालो,
(ओ रूप) जे देखेछे सेइ मजेछे अन्य रूप लागे ना भालो ॥
प्रसाद बले कुतुहले, एमन् मेये कोथाय छिलो,
(जाँरे) ना देखे नाम शुने काने मन गिये ताय लिप्त हलो ॥

—रामप्रसाद सेन

(छायानट—खेमटा)

तुले ने राङ्गा जबा मायेर पाये साजबे भालो !
चल् त्वरा, पूजबो तारा घुचे जाबे मनेर कालो ॥
नाचबे श्यामा हृद्कमले, धोबो चरण नयन जले ।
बदन भरे डाकबो ओमा ! मायेर रूपे जगत् आलो ॥

—गिरीशचन्द्र घोष

(पिलू-बहार—झाँपताल)

मन बलि भज काली इच्छा हय तोर जे आचारे।
गुरुदत्त महामन्त्र दिबानिशि जप करे ॥
शयने प्रणाम ज्ञान, निद्राय करो माके ध्यान,
आहार करो मने करो आहुति दिइ श्यामा मारे ॥
जत शोनो कर्णपुटे सबइ मायेर मन्त्र बटे,
काली पञ्चाशत वर्णमयी बर्णे बर्णे नाम धरे ॥
आनन्दे रामप्रसाद रटे, मा-बिराजेन सर्बघटे
नगर फेरो मने करो प्रदक्षिण श्यामा मारे ॥
—रामप्रसाद सेन

(प्रसादी—एकताला)

डूब् देरे मन काली बले, हृदि रत्नाकरेर अगाध जले ॥
रत्नाकर नय शून्य कखन, दु'चार डुबे धन ना पेले।
तुमि दम् सामर्थे एक् डूबे जाओ, कुल कुण्डलिनीर कूले ॥
ज्ञान समुद्रेर माझे रे मन, शान्तिरूपा मुक्ता फले।

तुमि भक्ति क'रे कुडाये पावे, शिव जुक्ति मतो चाइले ॥
कामादि छय कुम्भीर आछे, आहार लोभे सदाइ चले।
तुमि बिबेक्-हल्दि गाय मेखे जाओ, छोंबेना तार गन्ध पेले ॥
रतन माणिक्य कत प'ड़े आछे सेई जले।
रामप्रसाद बले, झम्प दिले मिल्बे रतन पले पले ॥
—रामप्रसाद सेन

(कालेंडा– झाँपताल)

जतने हृदये रेखो आदरिणी श्यामा माके।
(मन) तुइ द्याख् आर आमि देखि, आर जेन केउ नाहि देखे ॥
कामादिरे दिये फाँकि, आय मन बिरले देखि।
रसनारे संगे राखि, से जेन मा बले डाके ॥
कुरुचि कुमन्त्री जत, निकट हते दिओ नाको,
ज्ञान नयने प्रहरी रेखो, से जेन सावधाने थाके ॥
कमलाकान्तेर मन, भाइ आमार एइ निबेदन,
दरिद्रे पाइले धन से कि अजतने राखे ॥
—कमलाकान्त चक्रबर्ती

(कीर्त्तन—एकताला)

एकबार बिराज गो मा हृदि कमलासने ।
तोमार भुवन भरा रूप्टि एकबार देखे लई मा नयने ॥
तुमि अन्नपूर्णा मा, श्मशाने श्यामा, कैलाशेते उमा;
तुमि बैकुण्ठे रमा,
धर बिरिञ्चि-शिव-बिष्णुरूप सृजन - लय - पालने ॥
तुमि पुरुष कि नारी, बुझिते नारि,
स्वयं ना बुझाले ताकि बुझिते पारि,
तुमि आधा राधा आधा कृष्ण साजिले वृन्दाबने ॥
तुमि जगतेर माता, जोगीजनानुगता,
अनुगत जने कृपा कल्पलता,
तोमाय मा बले डाकिले नाकि कोले नाओ भक्त जने ॥
दु:ख दैन्यहारिणी, चैतन्यकारिणी,
अन्य किछू चाइ ना विना चरण दुखानि,
आमि प्रेम सरोजे साजाबो पद बासना मने मने ॥
परिव्राजक भिखारी साध मनेते भारी,
मधुहासिमाखा मा'र मुखखानि हेरि ।
बसे मायेर कोले मा मा ब'ले मातिबो जोगध्याने ॥

—स्वामी कृष्णानन्द

(खमाज—यत्)

कोन् हिसाबे हरहृदे दाँड़ायेछ मा पद दिये।
साध् करे जिभ् बाढ़ायेछ 'मा' जेन कतो न्याका मेये।
जेनेछि जेनेछि तारा, तारा गो तोर एम्नि धारा,
तोर मा कि तोर बावार बुके दाँड़ियेछिलो एम्नि करे।

(बेहाग मिश्र—एकताला)

तुइ मा आमार हियार हिया, तुइ मा आमार आँखिर आलो।
ओइ चरणे शरण निये, मा गो आमार प्राण जुड़ालो॥
झंझा-रवे भय जबे पाइ—तोरइ कोले मुख्टि लुकाइ,
मधु-हासिर झरणा-धाराय, दाओ धुये सब मनेर कालो॥
चलेछि जे गहन - पथे, बड़इ कठिन, बड़इ पिछल्,
पाये पाये बाजे आमार, आपन हाते गड़ा शिकल्।
'मा' ब'ले मा डाक्ले तोरे, बुकेर माझे पाइ कतो बल्।
दूर करे मोर सकल बाधा, आँधारे दीप तुमिइ ज्वालो॥
जोगी ऋषि पाय ना ध्याने, तोमार तत्व तोमार सीमा ;
कतो कविइ धन्य ह'लो, छन्दे गेये तोर महिमा,
नाइ मा आमार साधन-भजन, नाइ मा आमार ज्ञान गरिमा ;
सारा हृदय दिये शुधु, तोमारे मा बासबो भालो।

—अनिलवरण राय

(मनोहरसाही—झाँपताल)

एमनि महामायार माया रेखेछ कि कुहक करे ।
ब्रह्मा बिष्णु अचैतन्य जीवे कि जानते पारे ॥
बिल करे घुनी पाते, मीन प्रवेश करे ताते ।
जातायातेर पथ आछे, तबू मीन पालाते नारे ॥
गुटीपोकाय गुटी करे, पालालेओ पालाते पारे ।
महामायाय बद्ध गुटी आपनार जाले आपनि मरे ॥

—राजा नवचन्द्र

(मिश्र आलाहिया—झाँपताल)

के जाने मा तोमार माया महामाया रूपिणी ।
बिराजित सर्बघटे, मा तुमि बिश्वब्यापिनी ॥
प्रथमे ते महाकाली, द्वितीये ते तारा ;
तृतीये षोड़शी रूपा, तुमि मा त्रिपुरा !
चतुर्थे भुबनेश्वरी, अपरूप माधुरी ;
ह'ले मा बिचित्र नारी हर मनमोहिनी ॥

पंचमे परमेश्वरी, भैरवी आकारा,

बिभूति भूषित अंगे, शिरे जटाभारा;

कि हेरिलाम मा अद्भुत, भूतनाथ आबिर्भूत,

चित्त भित्त सशंकित, हर शुलपाणि (मा) ॥

षष्ठे छिन्नमस्ता रूपा धारण करिले।

निज मुण्ड केटे मागो, करेते राखिले।

रक्त उठे माँ तीन धार, एक धार करे आहार;

आरो अन्य दुइ धार पिये दूइ जोगिनी ॥

सप्तमेते धुमावती, अष्टमे बगला,

नवमे मातङ्गी रूपा, दशमे कमला,

कि दिये बर्णिब मागो, तुमि वर्णमाला,

कृपा करि ए दासेरे तारोगो मा हररानी ॥

—संकलित

———

रामचन्द्र-संगीत

(प्रणाम:)

रामाय रामचन्द्राय, रामभद्राय वेधसे ।
रघुनाथाय नाथाय, सीतायाः पतये नमः ।।

(इमन-कल्याण—तेवरा)

श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन, हरण-भव-भय दारुणं ।
नव-कंज-लोचन, कंज-मुख-कर , कंज-पद कंजारुणं ।।
कन्दर्प अगणित अमित छवि नव नील-नीरज-सुन्दरं ।
पट पीत मानहु तड़ित रुचि-शुचि नौमि जनक सुता-वरं ।।
भजु दीनबन्धु दीनेश दानव दैत्य-वंश निकन्दनं ।
रघुनन्द आनन्द-कन्द कौशल-चन्द दशरथ-नन्दनं ।।
शिर मुकुट कुण्डल तिलक चारु उदार अंग-बिभूषणं ।
आजानु-भुज शर-चाप-धर, संग्राम-जित खर-दूषणं ।।
इति बदत तुलसीदास शंकर-शेष-मुनि-मन-रंजनं ।
मम हृदय-कंज निवास कुरु कामादि - खल-दल-भंजनं ।।

—तुलसीदास

(सिन्धु-खम्बाज—कहारवा)

इतनी बिनती रघुनन्दन से,
दुख द्वन्द्व हमारा मिटाओ जी ॥
अपने पदपंकज पिंजर में;
चित-हँस हमारा बैठाओ जी ॥
तुलसीदास कह कर जोड़ी
भव सागर पार उतारो जी ॥

—तुलसीदास

(झिंझिट-खम्बाज—एकताला)

ठमकी चलत रामचन्द्र बाजत पैजनियाँ।
किलकि किलकि उठत धाइ, गिरत भूमि लटपटाइ,
धाई मातु गोद लेत दशरथ की रानियाँ ॥
अंचल रज अंग लाई, विविध भाँति सों दुलारी,
तन मन धन बारि बारि कहत मृदु बचनियाँ ॥
विद्रुम से अरुण अधर बोलत मुख मधुर मधुर,
सुभग नासिका में चारु लटकत लटकनियाँ ॥
तुलसीदास अति आनन्द देखि के मुखारविन्द,
रघुवर छबि के समान रघुवर छबि बनियाँ ॥

—तुलसीदास

(दुर्गा—झाँपताल)

भज मन राम राम।
सुन्दर श्यामल रूप मनोहर गुणधाम ॥
सकल रिपु-नाशन, धनुधारी नारायण
योगी भोला नृत्य करे गाहे राम राम ॥

(गौड़ सारंग—तेताला)

भज मन राम नाम सुखदाई।
घड़ि घड़ि पल पल अवधि बितत सब
फिर पाछे पछताई ॥
भाई बन्धु सब कुटुम्ब कबीला
देखत जीया ललचाई।
अंत समै कोई काम न आवत
छत्र कहे समुझाई ॥

(भैरवी—कहारवा)

मनुवा भजले सीताराम ॥
भजले सीताराम मनुवा काहे न जपते राम ।
दिन दिया जो हरिगुण गावे गुरु दिया जो नाम ॥
राम गढ़ के बैठे रामजी, सब की मुजरा लीजै ।
जो जैंसा नौकरी करेगा, उनको तैसा दीजे ॥
लड़का बाला लालन पालन, तिनको दूध पिलावे,
मरण काल में शरण लेके, बाबा करके बोलावे ।
एक नर भूले, दू नर भूले, भूले जगत संसार—
जान सुनके जो नर भूले, उनके नाही पार ॥

—तुलसीदास

(झिंझिट—एकताला)

सीतापति रामचन्द्र, रघुपति रघुराई ।
भजले अयोध्यानाथ, दूसरा न कोई ॥
रसनारस, नाम लेत, सन्तन को दरश देत ।
ईषत मुखचन्द्र-बिन्दु, सुन्दर सुख-दाई ॥
हसन बोलन चतुरचाल, अयन वयन दृग-विशाल ।
भृकुटि-कुटिल तिलक-भाल, नासिका सुहाई ॥

केशर को तिलक भाल, मानो रबि प्रातःकाल ।
मानो गिरि शिखर फोड़ि, सुरसरि बहिराई ।।
मोतियन को कण्ठमाल, तारागण उर विशाल ।
श्रवण कुण्डल झलमलात, रति-पति छबि छाई ।।
सखा सहित सरयुतीर, बिहरे रघुवंश बीर ।
तुलसीदास हरष निरखि, चरण रज पाई ।।

—तुलसीदास

(हैमन्त—कहारवा)

मङ्गल मूरति मारुति-नन्दन, सकल अमङ्गल-मुल-निकन्दन ।
पवन-तनय-सन्तन-हितकारी, हृदय विराजित अवध-विहारी ।।
मातु-पिता-गुरु-गणपति शारद, शिवा समेत शम्भु-शुक-नारद ।
चरण बन्दि विनवौं सब काहू, देहु राम-पद नेह निवाही ।
बन्दौं राम-लक्षमण-वैदेही, ये तुलसी के परम सनेही ।

—तुलसीदास

(बागेश्री—झाँपताल)

विनती सुनो मोरी, अवध पुरके बसैया ।
तुम बिन कवन मोरे दुःखके हरैया ।।
जहाँ जहाँ परि भीर ताहाँ ताहाँ दियो धीर ।
जानकी पति राम भवके तरैया ।।

(पिलू—तेताला)

रघुवर तुमको मेरी लाज
सदा सदा मैं शरण तिहारो तुमहि गरीब निवाज ॥
पतित-उधारण विरद तुम्हारो
श्रवणन सुनि आवाज।
हों तो पतित पुरातन कहिये पार उतारो जहाज ॥
अघ-खण्डन दुख-भञ्जन जनके,
यही तिहारो काज।
तुलसीदास पर किरपा करिये भकति-दान देहु आज ॥
—तुलसीदास

(खम्बाज—एकताल)

जय सीतापति सुन्दर तनु प्रजारंजनकारी,
राघव रामचन्द्र जयतु सत्यव्रत धारी।
धरणीपूत चरण परशे, पुरवासिगण मगन हरषे ;
आकाश हइते नित्य बरषे देवता कृपा वारि ॥

— • —

श्री हरिसंगीत

(राज विजय—तेवरा)

हरि हरि जपत रे।

जपन करन तुम होवे रे भवपार,

जो सृजन करत त्रिभूवन रे और सब जीवरे,

जो मुक्ति देत करत प्रतिपालन रे।

जो धरत बहु रूप निमिख रे, धरणीधर रे,

अब कहत गोपेश, सो नाम पार ना पावे रे॥

—गोपेश बनार्ज्जी

(कीर्त्तन—एकताला)

चिन्तय मम मानस हरि चिद्घन निरञ्जन।

किबा अनुपम भाति, मोहन मूरति, भकत हृदय रञ्जन॥

नब रागे रञ्जित, कोटी शशी बिनिन्दित,

किबा बिजली चमके, अरूप आलोके पुलके शिहरे जीवन॥

हृदि कमलासने, भाव ताँर श्रीचरण,

देख शान्त मने, प्रेम नयने, अपरूप प्रिय-दर्शन ।

चिदानन्द रसे भक्तियोगावेशे हओरे चिर मगन ।।

—त्रैलोक्यनाथ सन्याल

(विभाष—कव्वाली)

हरिगुण गावे सब सुख पावे, क्यों नहीं मन हरि नाम रहना ?

ज्ञान दृष्टि में विचार करके, देखो जगमें हुआ कोई नहि

अपना ।।

—पूरिजी

(आसावरी—कव्वाली)

हरि बिना तेरा कौन सहायी ?

हरि बिनका की माता पिता सूत बनिता को काहुँको भाई ?

धन धरनी और सम्पत नगरी जो माने अपनाई,

तन छूटे कुछ सङ्ग ना चले कहाँ वाहि लपटाई ।

—श्रीपुरिजी

(भटियाली—कहरवा)

पीलेरे अवधूत हो मतवारा, प्याला प्रेम हरिरस का रे।
बाल अवस्था खेल गँवाई, तरुण भये नारी वश का रे॥
वृद्ध भयो कफ वायु ने घेरा, नहीं जाय वसकारे मस्का रे॥
नाभ कमलमें है कस्तुरी कैसे भरम मिटे पशुका रे।
बिना सत्गुरु नर ऐसाहि ढूँढे, जैसा
मृग फिरे बनका रे।

(पुरिया—सुरफाँक्ता)

सुमिरण हरिको करो कैसे होवे भवपार।
रहो शिव जान-मान कहो हैं, पुराण में भगवान आप
करतार॥
दीन-बन्धु दयासिन्धु पतित पावन आनन्द कन्द तीसे कहता
हूँ पुकार।
तानसेन कहे निरमल सदा रहिए, नरदेह न हो बार-बार॥
—तानसेन

श्री श्री कृष्ण-संगीत

प्रणाम

कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने ।
प्रणत-क्लेशनाशाय गोविन्दाय नमो नमः ।।

(मिश्र-बेहाग—तेताला)

रिणि झिणि रिणि झिणि मंजीर बाजे,
बहे यमुना उजान, गाहे कल कल तान
'मीरा के चितचोर गिरिधारी नागर
नाचत आँगन - माझे ।
सुनि मुरली ध्वनि मधु माधवी राते
झरे प्रेम सलिल मम नयन पाते,
मम चित्तेर बान गाहे आनन्द गान
हृदि-यमुना तीरे सुनि कल कल तान
एसो कृष्ण मुरारि, सुन्दर गिरिधारि,
(एसो) मीरा के हृदय माझे ।।

—मीरा बाई (अनुवाद)

(वृन्दावनी सारंग—कहारवा)

गाओ रे सघने बीणा हरिगुण गाओ रे ।
सुरागे सुताने भरा, ललित पीयूषपरा
उदारा मुदारा तारा ताहाते मिशाओ रे ।।
गले दोले मृदु हिल्लोले बनमाला,
अधरे धरेछे हासि लाल बिजली खेला,
गोप कुल तारण पतितपावन
भज हरि श्रीचरण नाम बिलाओ रे ।।

—गिरिशचन्द्र घोष

(मिश्र विहाग—कहारवा)

मम मन मंदिरे रह निशिदिन
कृष्ण मुरारि श्रीकृष्ण मुरारि ।
बंदना गाने तब बाजूक जीवन बीण ।।
भक्ति प्रीति माला चन्दन
तुमि निओ हे निओ चितनंदन,
जीवन मरण तब पूजा निबेदन
सुन्दर हे मनोहारी ।।

एसो नन्दकुमार आनन्दकुमार
हबे प्रेम प्रदीपे आरति तोमार,
नयन यमुना झरे अनिबार
तोमारि बिरहे गिरिधारी ॥

(देश मिश्र—एकताला)

केशब कुरू करुणा दीने, कुँजकाननचारी ।
माधब मनमोहन, मोहन मुरली धारी ॥
(हरिबोल, हरिबोल, हरिबोल, मन आमार)
ब्रज किशोर, कालीय हर, कातर-भय-भञ्जन,
नयन बाँका, बाँका शिखिपाखा, राधिका हृदि-रञ्जन,
गोबर्धन धारण, बन कुसुम भूषण, दामोदर कंस दर्पहारी
श्याम रास-रस बिहारी (हरिबोल इत्यादि)
—गिरीशचन्द्र घोष

(पिलु—कहारबा)

सुन्दर लाला नन्द दुलाला नाचत श्रीवृन्दाबन में।
भाले चन्दन तिलक मनोहर अलका शोभे कपोलन में ॥
शिरे चूड़ा नयन विशाला कुन्दमाला हिया पर दोले ।

पहिरन पीत पटाम्बर बोले रुणु झुणु नुपुर चरणण में ॥
कोई गावत पंचम तान, बंसी पुकारे राधा नाम,
मंगल ताल मृदंग रसाल बजावत कोई रंगन में ॥
राधा कृष्ण एक तनु होय, निधुबन में जो रंग मचाई ।
विश्वरूप जो भगवान सोहि लीला करत वृन्दावन में ॥
—विश्वरूप गोस्वामी

(मिश्र खमाज—तेताला)

भज राधाकृष्ण, गोपाल कृष्ण कृष्ण कृष्ण बल मुखे ।
नामे बुक भरे जाय अभाब मिटाय, स्वभाब जागाय महासुखे ॥
हरि दीनबन्धु, चिर दीनबन्धु, जीबेर चिर सुखे दुखे ।
भजरे अन्ध, चरणारबिन्द, दुस्तर ए माया बिपाके ।
भज मूढ़मति, तब चिर साथी, जाँहार करुणा लोके लोके ।
लीलामय हरि एसेछे नदीयापुरी, राधार पीरिति लये बुके ॥
—ब्रजेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय

(मिश्र खमाज—कहारवा)

भैयारे कन्हैयारे मोरे दरश दिखाये जा रे ।
श्यामलिया प्यारे वंशीवारे मेरे छतियापे आ बा रे ॥
मेरो भैया बरजलाल ब्रजबाल सैया नन्ददुलाला ।
यमुना किनारे धीर समीरे बाँशरी बाजाये जा रे ॥
प्राण की प्राण भैया मेरो भिक्षा मांगि दरशन तेरो ।
नयन में ठारो पियास निवारो मेरे राजन की राजा रे ॥

—व्रजेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय

(खमाज—एकताला)

लटकि लटकि चलत मोहन आवे ।
आवे मोहन अधरे मुरली मधुर मधुर बाजे ॥
चञ्चल कुण्डल चपल दोलनी मौर मुकुट चन्द्र कलनी,
मन्द हसनी जियकी रहनि मोहन मुरति राजे ॥
भ्रकुटि-कुटिल कज्जल नयन, अधर अरुण मधुर बयान,
गति गयन्द चारु तिलक भाल पर बिराजे ॥
लछमन दास श्याम रूप नखशिख शोभा अनूप,
रसिक भूप वदन निरखि कोटी मदन लाजे ॥

—लछमन दास

(भैरवी—कहारवा

साधन करना चाहिरे मनवाँ भजन करना चाही।
प्रेम लगाना चाहिरे मनवाँ प्रीति करना चाही॥
नित नाहन से हरि मिले तो जल जन्तु होय।
फल मूल खाके हरि मिले तो बादुर बाँदराय॥
तुलसी पूजन से हरि मिले तो मै पूजूं तुलसीझाड़।
पाथर पूजन से हरि मिले तो मैं पूजूँ पहाड़॥
तिरण् भखन से हरि मिले तो बहुत मृगी अजा।
स्त्री छोड़न् से हरि मिले तो तहुत रहे है खोजा॥
दूध पिने से हरि मिले तो बहुत वत्स बाला।
मीरा कहे बिना प्रेम से नहीं मिले नन्दलाला॥

—मीराबाई

(बेहाग-खमाज—एकताला)

मम मानस-माधवी कुञ्जे श्याम बिहर गो निशिदिन।
आमार पराण-राधारे पागल करिया बाजाओ मोहन बीण॥
(तब) बीणार छन्दे जारिये हिया, उठिबे कुञ्ज मुञ्जरिया।
(मम) नयन-सलिले यमुना बहिबे लहरि छूटिबे क्षीण॥
(कबे) दिनशेषे नामिबे निशि, निबिड़ जलदे घेरिबे दिशि।
(कबे) आँखिर पलके आँधारे मिशि निमिषे हबो बिलीन॥

(भजन—कहरवा)

तुम्हारे कारण सब सुख छोड़्या अबमोहि क्यों
बरसाओ हो।
बिरह बिथा लागि ऊर अन्तर सो तुम आओ बुझाओ हो॥
अब छोड़त नहीं बणै, प्रभुजी हँसकर तुरत बुलाओ हो।
मीरा दासी जनम जनम की अंगसे अंग लगाओ हो॥

—मीराबाई

(खमाज—एकताल)

परब्रह्म परमेश्वर पुरुषोत्तम परमानन्द।
नन्दके नन्दन आनन्दकन्द यशोदानन्द श्रीगोविन्द॥
करुणामय कमल नयन, कृपासिन्धु सर्वचैन,
पुराण कर्त्ता किशोर; गुणनिधान गोकुलचन्द्र॥
मधुसूदन मदनमोहन, मुरलीधर सर्ब सहन,
मेघश्याम मूरत वीणा गाबत मनगुण आनन्द;
दीननाथ दु:ख:भंजन, भक्तवत्सल जगवन्दन,
जगजीवन, जगन्नाथ, काटत दु:ख फन्द धन्द॥

—ज्योतिरिन्द्रनाथ ठाकुर

(झिझिट—एकताला)

मेरे तो गिरिधर गोपाल दूसरो न कोई ॥
जाके सिर मौर मुकुट मेरो पति सोई ।
शङ्ख चक्र गदा पद्म कण्ठमाल होई ॥
तात मात भ्रात बन्धु आपन न कोई ।
अब तो बात फैल गयी जाने सब कोई ॥
सन्तन संग बैठ-बैठ लोक लाज खोई ।
छाड़ दइ कुल की कान क्या करेगा कोइ ॥
अँसुअन जल सींच सींच प्रेम बीज बोई ।
मीरा प्रभु लगन लागि, जो होय सो होई ॥

—मीराबाई

(पिलु—कहारवा)

आँखिया हरि दरशन की प्यासी ।
देख्यो चाहत कमल नयन को निशिदिन रहत उदासी ॥
केशर तिलक मोतिन की माला, वृन्दाबन के वासी ।
नेह लगाय त्यागी गये तृणसम, डारि गये गल फाँसी ॥
काहु के मन की को जानत, लोगन के मन हाँसी ।
सूरदास प्रभु तुम्हारे दरश बिना लौहे करवत कासी ॥

—सूरदास

(भटियाली—कहारवा)

प्रभु ! मैंने चाकर राखोजी,

(गिरधारीलाल) चाकर राखोजी ॥

चाकर रहसुं बाग लगासुं, नित उठ दरशन पासु ।
वृन्दाबन की कुंज गलिन में तेरी लीला गासुँ ॥
चाकरीमें दरशन पाउँ, सुमिरण पाउँ खरची ।
भाव भगती जागीरी पाऊँ, तिनु बाताँ सरसी ॥
मौर मुकुट पीताम्बर सोहै, गल बैजन्ती माला ।
वृन्दावन में धेनु चरावे, मोहन मूरलीवाला ॥
हरे हरे नित वाग लगाउँ, बिच बिच राखूं क्यारी ।
साँवरिया के दरशन पाऊँ ; पहर कूसुममी सारी ॥
योगी आया योग करणकु, तप करणने सन्यासी ।
हरि भजनकुँ साधु आये, वृन्दाबन के बासी ॥
मीराके प्रभु गहिर गम्भीरा, सदा रहोजी धीरा ।
आधिरात प्रभु दरशन दीन्हें, प्रेम - नदीके तीरा ॥

—मीराबाई

(खमाज—कहारवा)

पीतम प्यारे बंशीवारे तु आजा कन्हैया आजा ।
लिये ग्वाल बाल नन्दलाल मोहन मुरली की धून सुनाजा ॥
मैं तो गोबर्धनमें जाऊँ साथ मैं गोवर्धनमें जाऊँ ।
बनकूञ्जन बाट यमुनाजी का घाटपे आके गैया चराजा ॥
टेर कदम तले सब सखा संग नाना खेलन धूम मचाजा ।
भूख लागे तो माखन मिश्री मेरोई हाथ से खाजा ॥
दहि दूध मलाई लेत चलूँ तू आजा हो मेरे राजा ।
दास विश्वरूप तोंहे बिनती करत है श्यामल सूरत दिखाजा ॥
—विश्वरूप गोस्वामी

(इमन भुपाली—कहारवा)

श्याम-सुन्दर मन-मन्दिर में आओ, आओ !
हृदय-कुञ्ज में राधा नाम की बंशी सुनाओ सुनाओ ॥
बहत यमुना नयन नीर के आओ श्याम बही यमुना तीरपे,
बैठि बनठन् भक्त गोपिन काहे तुम बिलमाओ, आओ ॥

चञ्चल मोहन चरण कमलपे मधुर नूपुर बजाओ,
प्रीत-चन्दन मनके मेरे लेके अङ्ग सजाओ ;
विरह की मोर पपिहा बोले
प्रेम की नैया डगमग डोले
आओ कन्हैया रास रचइया मधुर सूरत दिखलाओ, आओ ॥
—नजरूल

(भैरवी-तेताला)

जगजन मोहन संकटहारी कृष्ण मुरारि श्रीकृष्ण मुरारी ।
रास रचावत श्याम बिहारी परम योगी प्रभु भवभयहारी ।
गोपीजन-रञ्जन ब्रज-भयहारी, पुरुषोत्तम प्रभु गोलक-चारी ॥
बन्शी बजावत बन-बन-चारी त्रिभुवन-पालक भक्त-भिखारी ।
राधाकान्त हरि शिखि-पाखा-धारी कमलापति जय
गोपी-मनहारी
—नजरूल

(मिश्र-खमाज- कहारवा)

साजे नवल किशोर चाँदेर तिलके
तार वनफुल माला दोले ।

(खमाज—कहारवा)

पीतम प्यारे बंशीवारे तु आजा कन्हैया आजा ।
लिये ग्वाल वाल नन्दलाल मोहन मुरली को धून सुनाजा ॥
मैं तो गोबर्धनमें जाऊँ साथ मैं गोवर्धनमें जाऊँ ।
बनकूञ्जन वाट यमुनाजी का घाटपे आके गैया चराजा ॥
टेर कदम तले सब सखा संग नाना खेलन धूम मचाजा ।
भूख लागे तो माखन मिश्री मेरोई हाथ से खाजा ॥
दहि दूध मलाई लेत चलूँ तू आजा हो मेरे राजा ।
दास विश्वरूप तोंहे बिनती करत है श्यामल सूरत दिखाजा ॥
—विश्वरूप गोस्वामी

(इमन भुपाली—कहारवा)

श्याम-सुन्दर मन-मन्दिर में आओ, आओ !
हृदय-कुञ्ज में राधा नाम की बंशी सुनाओ सुनाओ ॥
बहत यमुना नयन नीर के आओ श्याम बही यमुना तीरपे,
बैठि बनठन् भक्त गोपिन काहे तुम बिलमाओ, आओ ॥

चञ्चल मोहन चरण कमलपे मधुर नूपुर बजाओ,
प्रीत-चन्दन मनके मेरे लेके अङ्ग सजाओ ;
विरह की मौर पपिहा बोले
प्रेम की नैया डगमग डोले
आओ कन्हैया रास रचइया मधुर सूरत दिखलाओ, आओ ॥

—नजरूल

(भैरवी-तेताला)

जगजन मोहन संकटहारी कृष्ण मुरारि श्रीकृष्ण मुरारी ।
रास रचावत श्याम बिहारी परम योगी प्रभु भवभयहारी ।
गोपीजन-रञ्जन ब्रज-भयहारी, पुरुषोत्तम प्रभु गोलक-चारी ॥
बन्शी बजावत बन-बन-चारी त्रिभुवन-पालक भक्त-भिखारी ।
राधाकान्त हरि शिखि-पाखा-धारी कमलापति जय
गोपी-मनहारी

—नजरूल

(मिश्र-खमाज- कहारवा)

साजे नवल किशोर चाँदेर तिलके
तार वनफुल माला दोले ।

से जे बंशीवाला मोहिल भुवन,
तार मोहन मुरली बोले,
तार बनफूल माला दोले ॥
मोर आनन्द से जे नन्ददुलाल
से जे छन्ददुलाल मोर बन्ददुलाल
रहे कदम्बमूले यमुनार कूले
बाँशीते उजान बोले ।
निधुबने सखा लये खेले हरि शिशु हये
अधरे मधुर हासि भाषे,
जेथा चले श्यामराय फूल जागे पाय पाय
धूलिकणा पदछाया माथे,
जबे आमार जीबने आसि डाकिबे बाजाय बांशी
जेन अंध नयन जागे प्रेमेर मलय लागे
हृदय दुआर जेन खोले ॥

—अजयकुमार भट्टाचार्य

(मालकोश—तेताला)

लाग रहो रे मन राधावरसे ;
और कहे कछु और उपरसे ॥
दिन रातिया आखियाँ आगे मेरी
ठाढ़ रहे कछु रूप सुधर से,
आनन्द घन प्रभु लाये नेहा,
प्रेम रङ्गोगी मैं गिरिधरवर से ॥

(जौनपुरी—तेताला)

इतनी विनती अब सुनिये मोरि।
बनवारी कृष्ण मुरारी, शरणागत के तुम हितकारी ॥
मैं हूँ दीन अनाथ नाथ तुम,
भक्तन के अघ सङ्कट-हारी ;
तुम्हारे चरण शरण, अब आओ,
काट द्वन्द्व फन्द अति भारी ॥

(दरबारी—एकताला)

नब जलधर पीताम्बर श्याम बिपिनचारी।
बङ्किमठाम कुसुम-भूषण गोपनारी-मनोहारी ॥
अतुल रातुल चरणराजे, धीर मधुर नूपुर बाजे।
मोहन साजे मोहे फूलधनु, नटबर बनवारी ॥

सुधाकर किबा श्रीमुख कमल प्रेम पीयूष ढल ढल,
बिमल फुल्ल अधर युगल मधुर मुरलीधारी ॥

(खमाज—कहारवा)

आओ रे कन्हैया बंशी बजाइया निकुञ्ज कानने,
आबीर कुङ्कुम कुसुम चन्दन लागाबो राङ्गा चरणे ॥
सुनो हे केशब तब श्याम अंगे,
मोरा सखि सबे फाग् दिबो रंगे ;
लाले लाल नन्दलाल कालो तमाल रंजित पीत बसने ॥
ओ निठुर हरि करोना चातुरि
छलना जानिना मोरा ब्रजनारी,
चल त्वरा करि रांगा पाये पड़ि दियो ना व्यथा पराणे ॥
—स्वामी चण्डिकानन्द

(दरबारीकानाडा—तेताला)

गिरिधर ब्रजधर मुरली अधर धर । धरणीधर माधो पीतांबर ॥
सीस मुकुटधर, चरण नुपुरधर ॥
करधर कमल पुष्प सारंगधर ॥
कंबुकंठधर कौस्तुभ मणिधर ।
सूरदास प्रभु गोप भेग्धर ॥ —सूरदास

श्रीश्री रामकृष्ण-संगीत

प्रणाम

निरंजनं नित्यमनन्तरूपं भक्तानुकम्पाधृतविग्रहं वै ।
ईशावतारं परमेशमीड्यं तं रामकृष्णं शिरसा नमामः ॥

—स्वामी अभेदानन्द

* आरत्रिक भजन *

मिश्र बहार—चौताल (ताल फेरता)

खण्डन भव-बन्धन, जग-वन्दन बन्दि तोमाय ।
निरंजन, नर-रूप-धर, निर्गुण, गुणमय ॥
मोचन अघदूषण, जग-भूषण, चिद्घनकाय ।
ज्ञानांजन-बिमल नयन, बीक्षणे मोह जाय ॥
भास्वर भाब-सागर, चिर-उन्मद-प्रेम-पाथार ।
भक्तार्ज्जन - जुगलचरण, तारण - भव - पार ॥
जृम्भित - युग - ईश्वर, जगदीश्वर, योगसहाय ।
निरोधन, समाहित-मन निरखि तब कृपाय ॥
भंजन - दुखगंजन, करुणाघन, कर्म-कठोर ।
प्राणार्पण, जगत-तारण, कृन्तन - कलिडोर ॥

बंचन - कामकांचन, अतिनिन्दित - इन्द्रियराग।
त्यागीश्वर, हे नरवर! देह पदे अनुराग॥
निर्भय, गतसंशय, दृढ़निश्चय - मानसबान।
निष्कारण-भकत-शरण, त्यजि जाति-कुल-मान॥
सम्पद तव श्रीपद, भव-गोष्पद-बारि जथाय।
प्रेमार्पण, समदरशन, जग जन-दुख जाय॥
नमो नमो प्रभु! बाक्य-मनातीत मनोबचनैकाधार।
ज्योतिर ज्योति उजल-हृदि कन्दर तुमि तमो-भंजन हार॥
धे धे धे लंग रंग भंग, बाजे अंग संग मृदंग,
गाहिछे छन्द भकतवृन्द आरती तोमार॥
जय जय आरती तोमार, हर हर आरती तोमार
शिव शिव आरती तोमार।

—स्वामी विवेकानन्द

* श्रीश्री रामकृष्ण स्तोत्रम् *

ॐ—ह्रीं-ऋतं त्वमचलो गुणजित् गुणेड्यः
न—क्तन्दिवं सकरुणं तव पादपद्मम्।
मो—हङ्कषं बहुकृतं न भजे यतोऽहं
तस्मात्त्वमेव शरणं मम दीनबन्धो!

भ—क्तिर्भगश्च भजनं भवभेदकारी
ग—च्छन्त्यलं सुविपुलं गमनाय तत्त्वम् ।
व—क्त्रोद्धृतन्तु हृदि मे न च भाति किंचित्
तस्मात्त्वमेव शरणं मम दीनबन्धो !!
ते—जस्तरन्ति तरसा त्वयि तृप्ततृष्णा,
रा—गे कृते ऋतपथे त्वयि रामकृष्णे ।
म—र्त्यामृतं तवपदं मरणोर्म्मिनाशम्
तस्मात्त्वमेव शरणं मम दीनबन्धो !
कृ—त्यं करोति कलुषं कुहकान्तकारि
ष्णा—न्तं शिवं सुबिमलं तब नाम नाथ !
य—स्मादहं त्वशरणो जगदेकगम्य
तस्मात्त्वमेब शरणं मम दीनबन्धो !!
ॐ स्थापकाय च धर्मस्य सर्ब-धर्म-स्वरूपिणे,
अवतार-बरिष्ठाय रामकृष्णाय ते नमः ॥
ॐ नमः श्री भगवते रामकृष्णाय नमो नमः ।
ॐ नमः श्री भगवते राकृष्णाय नमो नमः ।
ॐ नमः श्री भगवते रामकृष्णाय नमो नमः ॥
—स्मामी विवेकानन्द

(साहाना—झाँपताल)

दुखिनी ब्राह्मणी कोले के शुयेछ आलो करे,
के रे ओरे दिगम्बर एसेछ कुटीर घरे ॥
भूतले अतुल-मणि, के एलि रे जादुमणि,
तापिता हेरे अबनी, ऐसेछ कि सकातरे ॥
व्यथिते कि दिते देखा, गोपने ऐसेछ एका,
बदने करुणा माखा हाँस काँद कार तरे ॥
मरि मरि रूप हेरि, नयन फिराते नारि,
हृदय-सन्ताप-हारी, साध धरि हृदि परे ॥

—गिरीशचन्द्र घोष

(भैरवी—एकताल)

प्रेमानन्दे मन रे गाहो रामकृष्ण नाम ।
गाहो रामकृष्ण नाम जप रामकृष्ण नाम ।
नामसुधा पाने रहो मत्त अबिराम ॥
कामारपुकुर ह'लो पुण्य ब्रजधाम ।
(सेथा) सखागण लये करे लीला अभिराम ।
(मम) मानस मुकुरे भासे से छबि सुठाम ॥

नमो नमो चन्द्रादेबी नमो क्षुदिराम ।
कृपामयी माँ जननी लहो गो प्रणाम ।
जयरामबाटीर माटी चन्दन समान,
(आमार) मा जननीर जन्मभूमि महातीर्थ धाम ।
(मायेर) चरणे शरण निले पूरे मनस्काम ।।

—प्रमथनाथ गांगुली

(बाउल—एकताला)

शिशुर मतो 'मा' 'मा' बले काँदिये घुरे बेड़ाय
ठाकुरेर कि भाव हइल हाय ।
उलंग पागल पारा, दुनयने बहे धारा,
दिबानिशि 'मा' नाम छाड़ा अन्य नाहि रसनाय ।।
पशु पाखी तरुलता, सब के शुधाय मायेर कथा,
'बल् रे आमार मा पाइ कोथा, के देखेछो आमार माय' ।।
मायेर मन्दिरे गिये, पड़े थाके हत्या दिये ;
बले "मागो ना खाइये प्राण तजिब रांगा पाय" ।
'देखा देमा ओमा आमार' एइ बलिया छाड़े हुङ्कार ।
कतो मतो भावेर विकार, सर्व अंगे बिकास पाय ।।

गौर फि रे नदे छेढ़े आइल दक्षिणेश्वरे,
रामकृष्ण रूप धरे जीवे कि रे प्रम शिखाय ?
—वृन्दावन चन्द्र घोष

(जय जयन्ती—झांपताल)

तुमि ब्रह्म, 'रामकृष्ण', तुमि कृष्ण, तुमि राम।
तुमि विष्णु ; तुमि जिष्णु, प्रभबिष्णु, प्राणाराम ।।
तुमि आधेय - आधार, तुमि ब्रह्म निराकार।
तुमि नर - रूप - धर, बिजित - कनक - काम ।।
अपार - करुणा सिन्धु, तुमि देव दीनबन्धु।
बाचे इन्दु कृपा बिन्दु चरणे करि प्रणाम ।।
—शरत्चन्द्र चक्रवर्त्ती

(पटदीप—कहारवा)

नगनाभिराम मोर नयनाभिराम।
एसो रामकृष्ण मोर नयनाभिराम।
एसो यशोदा दुलाल तुमि रघुपति राम ।।
दक्षिणेश्वरे तब लीला किबा मनोहर
कभु श्यामा रूप धर कभु साजो शंकर।

श्रीराधार भावे कभु काँदे तब अन्तर,
घुलाय लुटाये बलो कोथा तब घनश्याम ॥
पंचबटीर मूले जान्हवी किनाराय,
जेचे प्रेम बिलाइते डाको ओरे आय आय।
भक्त कुसुम जत आनिले आपन साथ
नन्दन काननेर सुन्दर पारिजात।
से कुसुमे भरि साजि आपनि पुजारि साजि,
करिले आपन पूजा धरि मुखे निज नाम ॥
—प्रमथनाथ गाँगुली

(गजल—कहारवा)

सीमा के बीच असीम देश का कौन अतिथि आया रे।
जान पहचान न है तथापि दिल में अच्छा भया रे ॥
क्या यह है अवध बिहारी ; वृन्दावन का क्या बनचारी।
जड़ विज्ञान का दर्पहारी, कौन अतिथि आया रे ॥
वेद, बाइबेल, पुराण, कुराण, तन्त्र इसमें है मूर्त्तिमान।
बान्धा प्रेम से सभी के प्राण, कौन जादूगर आया रे ॥

सभी मत का साधन किया, भेद व द्वन्द दूर कर दिया।
विश्वजन को अपना लिया, कौन दिलारा आया रे॥
जो हो सो हम न जाने, अगण का गुण कौन बखाने ?
केवल यही दिल में माने, हमारा प्यारा आया रे॥

—स्वामी मेघेश्वरानन्द

(आसावरी—एकताला)

नमो नमो देव, नमो नरदेव, नमो भव भयहारी।
भुवन पावन नमो नारायण रामकृष्ण - रूपधारी॥
मद - गर्वित - दुष्ट - दलने, साधू सज्जन पालने,
धरम-स्थापने आसिले भुवने जुगे जुगे अवतरि॥
दखिनसहरे कतोना साधना, जीवे तराहते कतोना भावना,
दीन दुखी तरे दूनयन झरे जगजन-दुख-हारी।
सकल जीवेते एक नारायण, मन्दिरे जाँरे करे आराधन,
शिखाले मानवे ए नव साधन, बितरिले प्रेमबारि॥

—स्वामी चण्डिकानन्द

(भैरवी—तेताला)

भारत-भाग्य-गगने राजे नवीन तपन-भातिमा ।
नबारुण रागे दशदिशि भातिल, जागिल पराणे चेतना ॥
सुप्त जनार खुलिल नयन,
रिक्त हियाय मृदु स्पन्दन,
(हेरि) निखिल-जन-मन आनन्दे मगन ।
कोटि कण्ठ तुलि गाहिछे जय,
'रामकृष्ण जय' 'रामकृष्ण जय'
(शुनि) आसिछे सकल भकत दल पाये ढालिते संचित वेदना ।

—स्वामी पुरुषात्मानन्द

(मालकोश—तेवरा)

श्रीराम तुँहि, कृष्ण तुँहि, परब्रह्म नारायण
तुँहि आदि शकति ।
तुँहि सृजन-पालन-संहरण कर, शान्ति-विधारण
तुँहि ब्रह्मज्योति ॥

जगन्नाथ प्रकट हो यह पुण्य भूमि मे,
शिखावत सब-धरम-समज्ञान-प्रतीति ।
धन्य रामकृष्ण तुम दयाल भगवान,
देहूं प्रभु ज्ञान धन और शुध भकति ॥

—स्वामी अपूर्वानन्द

(मिश्र भूपाली—तेवरा)

परम गुरु सिद्ध जोगी मातृभक्त युगावतार ।
परमहंस श्रीरामकृष्ण लह प्रणाम नमस्कार ॥
जागाले भारत श्मशान-तीरे अशिब-नाशिनी महाकालीरे,
मातृनामेर अमृतनीरे, भासाले निज भारत आबार ॥
सत्य जुगेर पुण्यस्मृति, आनिले कलिते तुमि तापस,
पाठाले भारत देशे देशे ऋषि पुण्य-तीर्थ-बारि कलस ।
मन्दिरे, मसजिदे, गीर्जाय, पूजिले ब्रह्मे समश्रद्धाय,
तव नाम-माखा प्रेम-निकेतन भरियाछे ताई त्रिसंसार ॥

—नजरुल

(মালকোশ—তেতালা)

পাঞ্চজন্য—পাঞ্চজন্য,
শোনো শোনো সবে পাতি কান।
আবার আসিলো নামি
আসিলো রে ভগবান॥ ৩॥
দুর্জন-নাশন গর্জন শোনো তাঁর
প্রচণ্ড তাণ্ডবে হরিছে ধরার ভার,
কংস-পূতনা ত্রাসী ঘন ঘন হুঁকার
দৈত্য-শাসন আজি হবে চির অবসান॥
নির্যাতিত অগনন গণ নারায়ণ
লাঞ্ছিত হতমান ক্ষত শত সজ্জন,
আর্ত এ ধরণীর অশ্রুর প্লাবন
হৃদয় কাঁদায়ে তাঁর নয়নে আনিলো বান।
তাই ফিরে ভয়হারী অবতরি করুণায়
কাংগালে তারিতে এলো কাংগালের বেশে হায়,
'মাভৈঃ' 'মাভৈঃ' রবে ওই ডাকে আয় আয়
অযাচিতে বরাভয় সবারে করিছে দান॥
—স্বামী চণ্ডিকানন্দ

(बेहाग—त्रिताल)

(आजि) कामारपुकुरे चलो मन ।
सुखेर नेशाय घूरि जनम-जनम धरि
कतो रबे विषाद मगन ॥
कामारपुकुरे आसि नित्यलीलाय
अरूप धरिया रूप भुबन भुलाय ;
कतो ना आदरे तोरे डाके आय आय,
चले आय, ओरे चले आय ;
चले आय, जुड़ाबि जीवन ॥
—स्वामी चण्डिकानन्द

(सूरठ मल्लार—तेवरा)

श्रीरामकृष्ण एलोरे एबार । गाहिछे सुरनर बन्दना ताँर ॥
मूरति धरिल ज्ञान करम, प्रेमधन तनु नयनाभिराम,
तारक ब्रह्म रामकृष्ण नाम, स्मरणे पराण उथले सबार ॥
सुप्तहिया जत उठिछे जागिया, गाहिछे आशा गीति पुलके मातिया ॥
जीबन देबता ! मिनति चरणे, जागो तुमि आजि आमार पराणे,
थाको सदा मम धियाने गियाने, हृदय आसने बिराज आमार ॥
—स्वामी चण्डिकानन्द

(पिलु-बारोया—एकताल)

बंग-हृदय-गोमुखी हइते करुणा-गङ्गा बहिया जाय।
एसो छुटे एसो के आछो मानब शुष्क कण्ठ पिपासाय ॥
व्यर्थ-बासना-अनल-दाहन, सहिले कतो ना जनम मरण,
आलेयार साथे छुटिते छुटिते श्रमज-सलिल-सिक्त-काय,
स्निग्ध सलिले बारेक डुबिले सकल ज्वाला जुड़ाबे ताय ॥
जान्हबी-तीरे तृष्णा-कातर, अन्ध जे जन खोंजे सरोबर,
रामकृष्ण-पूत-गंगा ब्रह्मानन्द सागरे धाय ;
होक् अबसान व्यर्थ-प्रयाण, एसो छुटे एसो धरि गो पाय ॥

—स्वा० प्रेमेशानन्द

(भैरवी—एकताला)

मलय समीरे भेसे आसे कि मधुर गीति-लहरी।
चलो देखे आसि उजलिछे दिशि कोटि-शशी-रूप माधुरी ॥
तप-क्षीण-काय, क्षुदिराम हाय, साधना करि कठोर,
कोन् देवताय आनिला धराय नन्दन-बन-बिहारी ॥
पाप-ताप भरा, ए मलिन धरा स्वार्थ-कलुषमय,
एई मरुभूमे बुझि एल नेमे सिञ्चिते प्रेम-बारि।

के आच्छो अलस, हृदय-नीरस, स्वार्थ-मोहते भुलिया,
(आजि) प्रेमेर दीक्षा, त्यागेर शिक्षा, लह आपना
पासरी ॥

—स्वामी प्रेमेशानन्द

(सिन्धु विजय—तेवरा)

के तुमि तमोनाशन नाथ जगत-तारण,
राजित रामकृष्ण नामे, सुधामय।
जुगे जुगे तब शुभ आगमन बिदित आगम पुराणे,
दुरित-दलन भकत-पालन; उद्धरण जन माया घोरे ॥
नित्य चिन्मय आनन्दमय, स्वरूप तोमारि सनातन,
भकत-प्राण-ताप-हरण, देह धारण लीला तरे ॥
ज्योति-बिमल बिकास - कारण, चिर मोह-मन-बारण,
चकित भुबन तब दरशने, प्रणत जगजन करजोड़े,
सर्ब-धरम - समान - कारण, नाना - मत-योग - साधन,
काम-काञ्चन-लेश-बिहीन, निरञ्जन ! नमि भकति भरे ॥

—नीरदरञ्जन मजुमदार

(इमन-पूरवी—एकताला)

तुमि काङ्गाल बेशे एसेछो हरि काङ्गाले करुणा करिते हे,
प्रेम बितरिते मरुसम चित्ते, पतित जने तारिते है ॥
रामकृष्ण नामे अमिय ढाला, हेरिले ओ रूप जुड़ाय ज्वाला,
[तब] चरण तले पराण सँपिले, भाबना पलाय दूरेते हे ॥
करि तब कथा अमृत पान, जागिया उठिछे अबश पराण,
हताश हृदये शत आशा जागे, तोमार मधुर नामेते हे ॥

—स्वामी प्रेमेशानन्द

(मूलतान—एकताला)

'रामकृष्ण' नाम-अमिय पिओ रे मन आमार,
(नामे) जुड़ाबे तापित तनु घुचिबे मोह-आँधार ॥
(आजि) प्रकृतिर सने मिशाइये तान,
गाओ हे ताँहार महिमार गान,
(हृदे) 'रामकृष्ण' रामकृष्ण' जपो रे मन अनिबार ॥

(बाउल—दादरा)

एसेछे नूतन मानुष देखबि जदि आय चले,
(ताँर) बिबेक-बेराग्य-झुलि दुइ काँधे सदा झुले ॥

श्रीबदने मा मा बाणी पड़ि गङ्गा सलिले,
(बले) ब्रह्ममयी गेल मा दिन देखा तो नाहि दिले ॥
नास्तिक अज्ञानी नरे सरल कथाय शिखाले,
जेइ काली सेइ कृष्ण नाम भेद एक मूले ॥
'एकोया' 'वाटर' 'पानि' 'बारि' नाम देय जले,
'आल्ला' 'गॉड' 'ईशा' 'मुशा' 'काली' नाम भेदे बले ॥
दीन, धनी, मानी, ज्ञानी विचार नाइ जाति कुले,
आपन-हारा पागल-पारा सरले नेहारिले ॥
दु' बाहु तुलिये डाके, आयरे तोरा आय चले,
तोदेर तरे कृपा करे बसे आछि बिरले :
जतन करि पारेर तरी बेंधेछि भबेर कूले ॥

—देबेन्द्रनाथ मजुमदार

(कौमुदी-खाम्बाज—एकताला)

रामकृष्ण-चरण-सरोजे मज रे मन मधुप मोर ।
कण्टके आवृत विषय-केतकी थेकोना थेकोना ताहे बिभोर ॥
जनम-मरण-विषय-व्याधि, निरबधि कत सहिबे आर ।
प्रेम-पीयूष पियरे श्रीपदे, भवेरि जातना रवे ना तोर ॥

धर्माधर्म-सुख-दुःख-शान्ति-ज्वाला-द्वन्द्व-खेला माझे नाहि
निस्तार,
ज्ञान कृपाणे परम जतने काटोरे काटोरे करम डोर ;
'रामकृष्ण' नाम बलो रे वदने, मोहेरे जामिनि हइबे भोर ।
दुःस्वपन ज्वाला रवे ना छुटे जाबे तोर घुमेरि घोर ॥
—देवेन्द्रनाथ मजूमदार

(जग्नी-खाम्बाज—कारफा)

'रामकृष्ण', श्याम, श्यामा, शिबे भेद भेब ना आमार मन ।
नाम रूपेर गेलापे ढाका आछेन सेइ एक निरञ्जन ॥
चिनिर छाँचे ऊट हाथी घोड़ा पुतुल पाखी रथ हय जेमन,
आर जेमन् मन लय से तेमन एक चिनिते सब गठन ॥
भेद भावना मन छाड़ना, सुख पावे ना ताय कखन,
बहुते एक देखले तबे पाबि रे सेइ मोक्षधन ॥
अस्थि मांस मेद शोणिते सकल शरीर हय सृजन,
एक आत्माराम बिहरेन ताय के हिन्दु भाई के जबन ॥

साध जदि तोर थाके रे मन पेते सत्य सनातन;
(तबे) भासिये दे ना द्वेषाद्वेषी, पर ना चोखे प्रेमाञ्जन ॥
—देवेन्द्रनाथ मजुमदार

(बाउल—दादरा)

पाखी तुइ ठिक् बसे थाक् रामकृष्ण नामेर मास्तुले ।
(ओरे) वृथा उड़ा नड़ा चड़ा कूल पाबि ना अकूले ॥
(ओ) तुइ जेदिक् जाबि देख्ते पाबि जले जलाकार ।
(ओ तार) नाहि अन्त दिग्‌दिगन्त अपार पाथार ।
(ओ तोर) धरबे डाना घोर जातना पड़बि महामुस्किले ॥
(ओ से) अनन्त अनन्त भावे अन्त के करे,
प्रधान ग्रन्थ बेद बेदान्त गेल चुप मेरे,
पुराणेरा दिशेहारा सार कैल नाम शेषकाले ।
एदिके अबिद्या माया पिशाची कराल्
पातियाछे मनमोहिनी रूप—रसादिर जाल ।
(पाखी तुइ) पड़बि फाँदे मरबि केंदे प्राण हाराबि बेहाले ॥
(ओइ मास्तुल छेड़े चले एले) ॥

(बसन्त—तेवरा)

आबार जदि एले हरि आबार दिले दरशन।
आबार जीबे दिले अभय ओहे श्रीमधुसूदन॥
ज्वालाओ तबे प्राणेर आगुन ज्वलुक शिखा द्विगुण द्विगुण,
वज्र बीणाय झङ्कृत करो स्पन्दित होक त्रिभुवन॥
पाञ्चजन्य बाजाओ आबार द्वापरेर सेइ रूद्र-तान,
जे गान सुने सब्यसाचीर क्लैब्य छाड़ि आत्मदान।
अभीर मन्त्रे उठुक् भारत्, मुग्ध नेत्रे देखुक जगत्
कर्म जादेर धर्मेरि तरे, सेइ जातिर आर नाइ मरण॥

—स्वामी चण्डिकानन्द

(भजन—कहारवा)

(सुर—प्रेम मुदित मन से कह राम राम)
प्रेम भरे मन रे गाह रामकृष्ण नाम।
श्रीरामकृष्ण नाम, श्रीरामकृष्ण नाम, श्रीरामकृष्ण नाम।
आनन्द वर्षक नाम मम प्राणाराम,

रामकृष्ण नाम, श्रीरामकृष्ण नम, श्रीरामकृष्ण नाम ॥
अन्तरे जतने राखो मन रे अविराम
दीन काङ्गालेरइ धन रामकृष्ण नाम ।
रामकृष्ण नाम, श्रीरामकृष्ण नाम, श्रीरामकृष्ण नाम ॥
एकइ वृन्ते फुटिल रे राधा, कृष्ण, श्याम,
शिव, काली, ब्रह्मा, विष्णु, श्यामा, सीताराम ।
नाम ब्रह्मा एकइ जेने मन रे गाह नाम,
जनम मरण साथी रामकृष्ण नाम,
रामकृष्ण नाम, श्रीरामकृष्ण नाम, श्रीरामकृष्ण नाम ॥

—प्रमथनाथ गाँगुली

—:*:—

श्रीश्री सारदेश्वरी-संगीत

प्रणाम:

जननीं सारदां देवीं रामकृष्णं जगद्‌गुरुम् ।
पादपद्मे तयो: श्रित्वा प्रणमामि मुहुर्मुहु: ।।

"स्तव"

प्रकृतिं परमामभयां बरदाम्
नररूपधरां जनतापहराम् ।
शरणागत-सेवक तोषकरीम्
प्रणमामि परां जननीं जगताम् ।।१।।

गुणहीन - सुतानपराध - युतान,
कृपयाऽद्य समुद्धर मोहगतान् ।
तरणीं भवसागर पारकरीम्
प्रणमामि परां जननीं जगताम् ।।२।।

बिषयं कुसुमं परिहृत्य सदा,
चरणाम्बुरुहामृत-शान्ति - सुधाम् ।
पिव भृङ्गमनो भवरोगहराम्
प्रणमामि परां जननीं जगताम् ।।३।।

कृपां कुरु महादेवि सुतेषु प्रणतेषु च,
चरणाश्रयदानेन कृपामयि नमोऽस्तुते ।
लज्जापटावृते नित्यं सारदे ज्ञानदायिके,
पापेभ्यो नः सदा रक्ष कृपामयि नमोऽस्तुते ॥४॥

रामकृष्ण-गतप्राणां तन्नाम-श्रवणप्रियाम्
तद्भावरञ्जिताकारां प्रणमामि मुहुर्मुहुः ।
पवित्रं चरित्रं यस्या पवित्रं जीवनं तथा,
पवित्रतास्वरूपिण्यै तस्यै कुर्मो नमो नमः ॥५॥

देवीं प्रसन्नां प्रणतार्तिहन्त्रीम्
योगीन्द्र पूज्यां युगधर्म पात्रीम् ।
तां सारदां भक्ति-विज्ञान-दात्रीम्
दयास्वरूपां प्रणमामि नित्यम् ॥६॥

स्नेहेन बध्नासि मनोऽस्मदीयम्
दोषानशेषान् सगुणी करोषि ।
अहेतुना नो दयसे सदोषान्
स्वाङ्के गृहीत्वा यदिदं विचित्रम् ॥७॥

प्रसीद मातर्विनयेन याचे
नित्यं भव स्नेहवती सुतेषु।
प्रेमैकविन्दुं चिरदग्ध चित्ते,
विषिञ्च चित्तं कुरु नः सुशान्तम् ॥८॥

(देश—कहारवा)

दे गो मा देखा दे, सारदे शुभदे,
ज्ञान भक्ति दे, ज्ञान दे मा ज्ञान दे।
तापित तारण तरे एले यदि करुणाय,
आमारे केन मा तबे राखिबे ना रांगा पाय।
दिन जाय, आयु जाय, देखिते देखिते हाय,
आर कबे दिबि देखा बलो गो मा बरदे॥

—स्वामी चण्डिकानन्द

(बाउल—आड़-खेमटा)

मा एसेछे मोदेर की आर भाबना भाइ।
भबेर बोझा दूरे फेले आय सकले नाचि गाइ॥
मा जे जगत्तारिणी, भव भय हारिणी,
धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष सर्ब दायिनी।

(आबार) ना चाहिते सफल दिये सन्तानेर मन भूलाय ।
ओरे, के आछिस् कोथाय, सबे आयरे छूटे आय ।
एमन् सुदिन पेये रे भाइ हारासने हेलाय ।
(शुधु) जय मा बले दाँड़ा रे तुइ देख्बि दुखेर नाम्टि नाइ ।।
—स्वामी चण्डिकानन्द

(आड़ाना—एकताला)

आसिले जननी आसिले आबार, हरिते धरार पापेर भार ।
जुड़ाते दग्ध हृदयेर ज्वाला, मुछाते सबार नयन धार ।।
जुगे जुगे मागो आसिया धराय, कत ना जातना सहितेछो हाय ।
पराण मोदेर पाषाणेर प्राय, पासरि धरम तबू बारे बार ।।
सहन-मूरति रूपे राम सने, अचला भक्ति सिखाले भुबने ।
राधा रूपे पुनः दिले दरशन प्रेमेर महिमा करिते प्रचार ।।
रामकृष्ण लीला करिते पुरण, मा ह'थे सबार तब आगमन ।
पापी तापी कतो लभिलो शरण, कोल् दिले सबे ना करि विचार ।।
दिशेहारा होये भ्रमिताम् भये, दिले मा अभय आपनि आसिये ।
माया मरीचिका दाओ मा घुचाये, प्रकाशो अबश हृदये सबार ।।
—स्वामी चण्डिकानन्द

(भैरवी—दादरा)

मा आमादेर मानुष कर
ए मिनति, तोमार पाय ।
तोमार छेले हये जेन
दिन काटे ना घुलो खेलाय ॥
मिथ्या जतइ मोहन बेशे
मन भुलाते आसुक् हेसे ।
आमरा जेन अचल थाकि
तोमारि चरण सेबाय ॥
तुमि मोदर प्राणेर प्राण
तुमि मोदेर ध्यान ज्ञान ।
तोमार तरे गेये गान
जेन मोदेर जीबन जाय ॥

—स्वामी चण्डिकानन्द

(मिश्र-कालिडा—तेताला)

नमो नमो नमो जननी ।
ब्रह्मसनातनी कलुष-बिनाशिनी सुरनर-शुभ-दायिनी ॥

कखनो साकारा कभु निराकारा
कखनो पुरुष कभु प्रकृति रूपिनी।
कभू घर असि कखनो बा बाँशी
भक्तबिलासी कभु समर बासिनी॥
कखनो बा माया छले
नेमे आसो घरा तले
तापिते करिते कोले
पतित पाबनी।
नमो नारायणि भूभार हारिणि
नमो नमो मातः करुणा रूपिनी॥
—स्वामी चण्डिकानन्द

(इमनभुपाली—खेमटा)

आमरा मायेर छेले, आमरा मायेर छेले,
आमरा कि कम् आसुक ना यम्
जिनबो अबहेले।
पथेर परे बिपद पेले दल्ते पारि पदतले,
(मोदेर) हुंकारेते सागर शुकाय
पाहाड़ पड़े ढले॥

चन्द्र सूर्य ग्रह तारा मायेर कथाय घूर्‌छे तारा,
एमन् मायेर छेले मोरा
दुर्ब्बल के बले ?
मोदेर आबार पाप कोथाय, स्वर्ग नरक के बलो चाय ?
काज फुराले सन्ध्या बेलाय
मा करिबे कोले ॥
—स्वामी चण्डिकानन्द

(भैरवी—तेवरा)

धरणीर भार हरिते आबार एले मा आद्या शकति ।
निखिल मातृ-हृदय-सागर - मन्थन - सुधा - मूरति ॥
बिबिड़ कानने बन-फलाशने भूशयने निशि जापन,
निशाचर देशे बसि काराबासे सहिले मरण बेदना ।
अमल-चरिता निर्बासिता तूमि मा जनक-दुहिता,
सन्तान तरे माया-तनु धरे आसिले बिश्व-प्रसूती ॥
गोपनन्दिनी श्रीराधारूपिनी कुलमान-तेयागिनी,
सँपि प्राणमन जीबन-जौवन कृष्णप्रेमे पागलिनी ।

विरह-अनले आपना दहिले भूतले जीब-मङ्गले ।
मानव-हृदय करि मधुमय बितरी शुद्धा-भकति ।।
ब्राह्मण-सुता जपे तपे रता रामकृष्ण - पूजिता ,
पापी तापी जने कृपा बितरणे सारदे सदा सम्मता ।
लाज-कुण्डिता अबगुण्ठिता करुणा - रस - मण्डिता,
(तब) सन्तान कोटि हेर भूमे लुटि जानाय चरणे प्रणति ।।

—स्वामी प्रमेशानन्द

(बाउल—दादरा)

(आमार) माके देखे जा रे ।
दीनतारिणी धराय एलो आनन्द आर धरे ना रे ।।
विश्वराणी धराय एसे दुखिनी ब्राह्मणी बेशे ।
निच्छे कोले हेसे हेसे कतो काङ्गालेरे ।।
करे ना से गुणेर विचार अहेतुक् दया जे ताँर ।
स्नेहेर कथा बल्बो कि आर बइछे शतधारे ।।
मायेर पाय निले शरण घुचे जाय जन्म-मरण ।

हृद-माझारे पाय दरशन डाके जे जन तारे ॥
शोन् बलि मा मनेर कथा घुरबो ना आर हेथा सेथा ।
तोर पायेते रेखे माथा दिबानिशि थाकि पड़े ॥
—स्वामी चण्डिकानन्द

(खमाज—एकताला)

करुणा-पाथार जननी आमार एले मा करुणा करिते ।
तापितेर तरे नरदेह ध'रे अशेष जातना सहिते ॥
त्रिदिब त्यजिया ए धराय आसा, सन्तान तरे
कतो काँदाहासा ।
अहेतुक तव एइ भालबासा, पारि कि गो मोरा बुझिते ॥
शत जनमेर जत पाप हाय, दियाछि ढालिया ओइ राङ्गा पाय,
सकलि तो तुमि सहिले हेलाय, कोल् दिते कतो तापिते ।
एतो जदि मागो करुणा एबार, ए दीन सन्ताने काँदायो
ना आर,
नयन भरिया दाओ प्रेमधार—पदपङ्कज धोयाते ॥
—स्वामी चण्डिकानन्द

(इमन खमाज—दादरा)

एल तोर दुष्ट छेले, तुष्ट करे ने मा कोले ।
जाबो आर कार काछे मा, बाबा निदय गेछेन् फेले ॥
शुनिनि तोमार कथा, बेड़ाई खेले हेया सेथा,
ताई कि गो मा कओना कथा पेये बेथा हृदकमले ॥
तुमि जदि एमन हबे' छेलेरे कि उपाय तबे,
नामे कलंक रबे, मरव केंदे मा मा बले ॥
सुपुत्रे कुपुत्रे माता, प्रसबे पाय समान ब्यथा,
ए कि मा दारुण कथा—नाई व्यथा कुपुत्र बोले ॥
जा हबार हबे रे भाई, मा बले डाकि सबाई,
देखि मा केमन् करे थाकते पारे छेले भुले ॥

—देवेन्द्रनाथ मजुमदार

श्रीश्री विवेकानन्द्-संगीत

* प्रणाम मन्त्र *

नमः श्रीयतिराजाय विवेकानन्दसूरये ।
सच्चितसुखस्वरूपाय स्वामिने तापहारिणे ॥

(सूरट-मल्लार—तेवरा)

बिबेकानन्द एलो रे एबार ।
ओइ शोनो ताँर बिजय-हुँकार ॥
'नर' ऋषि आजि धरा धामे एलो ,
छाड़िया सप्त - ऋषि - मंडल
बराभय कर कमल युगल ,
मुछाबे सकल कालिमा धरार ॥
क्षात्रवीर्य ब्रह्म ज्ञान धरिलो नर रूप नयनाभिराम ।
भारत-आत्मा मूर्तिमान, श्री रामकृष्णे निबेदित प्राण ॥
घोषिल धराते बारता महान,
'मानुषइ देवता' नब समाचार ॥

—स्वामी चण्डिकानन्द

(मालकोष—दादरा)

क्षात्रबीर्य ब्रह्मतेज मूर्त्ति धरिया एलो एबार ।
गगने पबने उठिल रे ओइ ! माभैः माभैः हुहुँकार ॥
आश्वास दिल शंकित जने, पुलक जागाल हताश जीबने
'उतिष्ठत' गरजि सघने सुप्ति नाशिल ए बसुधार ॥
'अमृतस्य पुत्र' आमरा, मृत्यु मोदेर नाहिरे आर,
कार् भये तबु कँदे दिशेहारा, 'उठे दाँड़ा ! मिछे स्वपन छाड़ ॥
त्याग ओ सेबार बिजयकेतन, निर्भये तोल बिदरि' गगन,
धन्य हइबे बिश्वभुबन, साथे आछे सदा आशीष तार ॥
—स्वामी चण्डिकानन्द

(भैरवी—एकताला)

धरम-भेद भंजन बन्दि जगत-बन्दन ।
ज्ञान भकति बितरणे नर शरीर धारण ॥
बिगत गेह बन्धन, बिजित मीन केतन ,
रूपे काम गंजन, बाणी बीणा निन्दन ॥
प्रेम मत्त नर्त्तन, अभीरभीः गर्ज्जन ,
भूधर सागर लंघन, जीब तारण कारण ।

कूट कपटी मर्द्दन, सज्जन मनोमोहन,
बिश्व-मानब बन्दे तोमाय रामकृष्ण नन्दन ॥
—स्वामी प्रेमेशानन्द

(इमन-कल्याण—एकताला)

'बीर सेनापति विवेकानन्द ओई जे डाकिछे' आय रे आय ।
आह्वाने तार आपना भुलिया कतो महारथी छुटिया जाय ॥
आत्मत्यागेर अग्निमन्त्रे दीक्षीत हये नबीन तन्त्रे,
भोगबाद् जात दैत्य दलिते, आपना सँपिते के जाबि आय ॥
स्वार्थ द्वन्द्व भोग कोलाहल एनेछे जगते शुधु हलाहल,
निभाते आजिके एई दाबानल, प्रेमबारि से जे एनेछे हाय ॥
एसो देब एसो करुणा निदान, लह आजि मम तनु मन प्राण,
कृपा करि करो ए आशीष दान, तब काजे जेन जीबन जाय ॥
—स्वामी चण्डिकानन्द

(खमाज—एकताला)

के तुमि बाजाले नबीन रागेते भारतेर प्राण बीणा ।
मधुर झंकारे मुग्ध जगत चकिते गाहे बन्दना ॥
ललित छन्दे गभीर मन्द्रे;
पशिल से तान रन्ध्रे-रन्ध्रे,
जागिल सुप्त लुप्त गौरब भारतवर्ष दीना ॥

हिमाद्रि - शिखरे जलनिधि-तीरे
प्राच्ये प्रतीच्ये दिगदिगन्तरे
बेदान्त महिमा केबलि प्रचारे बर्णिते नारि सीमा ॥
(करि) गुरुपदे मन प्राण समर्पण,
महायोगी बेश करिले धारण,
ज्ञान, भक्ति, योग, जीब सेबा व्रत करिले उद्दीपन ॥
—नीरदरंजन मजूमदार

(अड़ाना-मिश्र—तेवरा)

जय विवेकानन्द संन्यासी-बीर चीर-गैरिक-धारी ।
जय तरूण योगी श्रीरामकृष्ण-व्रत-सहायकारी ॥
जज्ञाहुतिर होम - शिखा सम
तुमि तेजस्वी तापस परम ।
भारत-अरिन्दम, नमो नमः, विश्व-मठ बिहारी ॥
मदगर्बित बल-दर्पीर देशे महाभारतेर बाणी
शुनाये बिजयी घुचाइले स्वदेशेर अपजश ग्लानि ।
नब भारते आनिले तुमि नब बेद,
मुछे दिले जाति धर्मेर भेद ;
जीबे ईश्वरे अभेद आत्मा जानाइले उच्चारी ॥
—नजरूल

(इमन-कल्याण—तेवरा)

बीर दर्पे बिजय गाओ हे, निखिल भारत पदे लुटाओ हे
दीर्घ सुप्ति स्वार्थ तृप्ति दूरे घुचाओ हे ॥
भिक्षावृत्ति कौपीन-बास, बेद-गौरब करि प्रकाश,
भ्रमिला धरणी त्यजि आवास, माथे तुलि तारे लओ हे ।
जुग जुगान्त निद्रातुर, शुनो हे भारत भैरब सुर,
अगौरब से करेछे दूर शिर तुलि दाँडाओ हे ।
पूजिछे पश्चिम, पूजिछे पूरब, जय-जय रब उठिछे नब नब
कीर्त्ति गाथा गाओ हे ।

—स्वामी प्रमेशानन्द

(छाया-खमाज—कहारवा)

मूर्त्त महेश्वर-मुज्जल-भास्कर मिष्ठ ममर-नर वन्द्यम्
बन्दे वेदतनु-मुज्झित-गर्हित-कांचन-कामिनी-बन्धम् ॥
कोटिभानूकरदीप्तसिंहमहो ! कटितट कौपीन बन्तम्
अभीरभी हुँकार-नादित-दिङ्मुख-प्रचण्ड-ताण्डव-नृत्यम् ॥
भुक्ति-मुक्ति कृपा-कटाक्ष-प्रेक्षण मघदलबिदलन दक्षं
बाल-चन्द्र धर-मिन्दू-बन्द्य-मिह नौमि गुरु विवेकानन्दम् ॥

—शरतचन्द्र चक्रवर्त्ती

(शिवरंजनी—तेताला)

जय बीरेश्वर बिवेक भास्कर जय जय श्री बिवेकानन्द ।
इन्दु निभानन सुन्दर लोचन बिश्व मानव चिरबन्द्य ॥
प्रेम ढल ढल कान्ति सुबिमल अधिगत बेद बेदान्त ।
त्याग तितिक्षा तपस्या उज्ज्वल, चित्त निरमल शान्त ॥
कर्म्म-भक्ति-ज्ञान त्रिशूल धारण छेदन जीब मोह बन्ध ।
ब्रह्म परायण नमोनारायण देहि देहि चरणारबिन्द ॥

—स्वामी चण्डिकानन्द

(वागेश्री—एकताला)

के रे नरेन्द्रबर बीरेश्वर देहधारी ।
सिद्ध महाबिद्याबले अबिद्या बिनाशकारी ॥
तमाच्छन्न बसुमती, हेरि कि व्यथित अति
बिलाइते ज्ञान-ज्योति के एनेछे सहकारी ॥
रहि परहिते रत, शिखावे कि महाव्रत,
ऐसेछे आश्रित-रत जन-मन-तापहारी ।
गुरुपदे बलिदान जीबन-जौबन मान,
हयेछो कि अधिष्ठान, साजिते दीन-भिखारी ॥

—गिरिशचन्द्र घोष

(साहाना—झाँपताल)

के तुमि नबीन जोगी गुरुचरण-ध्याने,
निगमन महाजोगे सकति-पूरित प्राणे ॥
उजलिया ज्योर्तिमय सप्तऋषि ग्रहचय,
किरण राशि बिकाशि' छिले कि अमरधामे ॥
नाशिते मोह-तामसे उदित भारताकाशे,
ज्ञान-अरुण प्रकाशे पूरित धरा सामगाने ॥
हृदय करुणाखनि, प्रेमिकेर शिरोमणि,
सतत प्रमत्तचित दीन दुःख बिमोचने ॥
कठोर करम-जोगी स्वीय बिलासे बिरागी,
मोहन-मूरति यति प्रणमि तब चरणे ॥

—निरदरञ्जन मजुमदार

(बसन्त बहार—एकताला)

कोटि भास्कर निन्दित भाति त्यागेर मूरति खानि।
(तब) चरण परशे पूता धरणी बदने बेद बाणी ॥
बराभय - कर - कमल -जुगले

हृदये करुणासिन्धु उथले,
प्रेम-पीयूष गले, जय गुरु महाज्ञानी ॥
समन्वय बाणी करिते प्रचार
अहेतु करुणा बशे अबतार
सुषुप्त भारते जागाते आबार आगत शुलपाणि ॥
—स्बामी तपानन्द

(आलाइया—एकताला)

के तुमि सन्यासी बेशे प्रेमिकेर शिरोमणि ।
कषित काञ्चन जिनि प्रेमे गड़ा तनुखानि ॥
मुड़ाये चाँचर केश धरेछो जोगीर बेश ।
नेहारिले प्रेमाबेश ए जीबन धन्य मानि ॥
सबारेइ बासो भालो काङ्गालेरे कोले तोलो
जारे तारे दाओ प्रेम, कुलमान नाहि गणि ।
हे नरेन्द्र बीरेश्वर हृदयरञ्जन मोर,
चरणे शरण चाहि, राखो पदे दास जानि ॥
—स्वामी प्रेमेशानन्द

(छायानट—एकताला)

श्रीरामकृष्ण - हृदय - रञ्जन हे नरेन्द्र नमि तोमाय।
सारदानन्दन भुबन-बन्दन विवेकानन्द प्रणमि पाय॥
जुग-देबतार स्नेह आबाहने ऋषिधाम छाड़ि एले तुमि नेमे।
'उठो जागो जागो' गरजि सघने, जागाले मानब सुचेतनाय॥
तब देब-देहे श्रीरामकृष्ण करिया नित्य अधिष्ठान।
निरबधि अजाचित करुणाय आर्त्त धराय करिला त्राण॥
हे मोर देबता, तोमार जीबने रामकृष्ण-रूप अतुल भुबने,
एतो रूप जे गो धरे ना नयने कोटि रति-पति मुरछा जाय॥

(सोहिनी—तेताला)

रामकृष्ण-पद-शरणजीबन जय बिवेकानन्द नामधारी।
रूद्र अबतार भैरब हुँकारे त्रासे चराचर-चारी॥ (प्रभु)
तेजदृप्त तब स्थिर कंठरब अभीरभीः मंत्र प्रचारी।
नाशि भबभय दिले बराभय, निर्भय करि नरनारी॥ (प्रभु)
स्निग्ध कमल आँखि, प्रेम अमिय माखि झरिल जीबेर मुख चाहि;
भोग-बिलासी देह साजाले भिखारी स्नेहे त्याग तीरथे अबगाहि।
गाहे अकिञ्चन तब गुण कीर्त्तन चाहे कृपा - नयने नेहारि!
देह पदाश्रय, दीन - दयामय अपार करुणा भयहारी॥

—हृषीकेश चक्रबर्ती

निराकार-संगीत

(खट भैरवी—कहारवा)

दयाघन तोमा हेन के हितकारी ?
सुखे दुखे सम बन्धु एमन के, शोक ताप भयहारी ?
संकट-पूरित घोर भबार्णव, तारे कोन् काणडारी ;
कार प्रसादे दूर-पराहत रिपुदल बिप्लबकारी ?
पाप-दहन परिताप निबारि, के देय शान्तिर वारि ;
त्यजिले सकले, अन्तिम काले, के लय क्रोड़ प्रसारि ॥

—सत्येन्द्रनाथ ठाकुर

(आलाइया—झांपताल)

तोमारेइ करियाछि जीबनेर ध्रुबतारा ।
ए समुद्रे आर कभू हबो नाको पथहारा ।
जेथा आमि जाइ नाको, तुमि प्रकाशितो थाको ,
आकुल नयन जले ढालो गो किरण धारा ॥

तब मुख सदा मने, जागितेछे संगोपने,
तिलेक अन्तर हले ना हेरि कूल किनारा ॥
कखनो बिपथे जदि, भ्रमिते चाहे ए हृदि,
अमनि ओ मुख हेरि सरमे से हय सारा।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

(आलाहिया—एकताला)

देह ज्ञान दिव्य ज्ञान, देह प्रीति, शुद्धा प्रीति
तुमि मंगल - आलय, तुमि मंगल - आलय ॥
धैर्य देह, वीर्य देह, तितिक्षा संतोष देह,
विबेक वैराग्य देह, देह ओ-पदे आश्रय ॥

(भैरव—तेताला)

गाओये जगपति जग-वन्दन, ब्रह्म सनातन पातक-नाशन।
एक देब त्रिभूबन-परिपालक, कृपा सिन्धु सुन्दर भव-नायक ॥
सेवक - मनोमद मंगल - दाता विद्या - सम्पद-बुद्धि-बिधाता।
याचे चरण भक्त कर जोड़े, बितर प्रेम-सुधा चित्त-चकोरे ॥

(काफी—कहारवा)

जानि तुमि मंगलमय, (जानि हे) प्रति पलके पाइ परिचय ।
सुखे राख दुखे राख जे बिधान हय; किछुतेइ नाहि भय ॥
धार जाइ करो प्रभु, (मोरे) त्यजिबेना कभु, एइ भरसा मोर ।
एसो प्रभु एसो प्रभु हृदय माझे, शुभ हइबे निश्चय ॥

(भैरव—झाँपताल)

अनुपम - महिम - पूर्ण ब्रह्म कर ध्यान ,
निरमल पबित्र ऊषाकाले ॥
भानु नब ताँर सेइ प्रेम - मुखच्छाया ,
हेर ओइ उदयगिरि शुभ्र भाले ॥
मधुर समीरण बहिछे एइ शुभदिने ,
ताँर गुण गान करि अमृत ढाले,
मिलि सबे जाइ चल भगबत-निकेतने ,
प्रेम-उपहार लये हृदय-थाले ॥

—द्विजेन्द्रनाथ ठाकुर

(वड़-हंस-सारंग—चौताल)

(तारे) आरति करे चन्द्र तपन, देव मानव वन्दे चरण।
आसीन सेइ विश्व-शरण, ताँर जगत-मन्दिरे ॥
अनादि काल अनन्त गगन, सेइ असीम महिमा मगन,
ताहे तरंग उठे सघन आनन्द नन्द नन्दरे ॥
हाते लये छय ऋतुर डालि, पाये देय घरा कुसुम ढालि
कतइ बरन कतइ गंध, कत गीति, कत छन्दरे ॥
बिहग गीत गगन छाय, जलद गाय, जलधि गाय,
महापवन हरषे धाय, गाहे गिरि - कन्दरे।
कत कत शत भकत-प्राण, हेरिछे पुलके गाहिछे गान,
पुण्य किरणे फुटिछे प्रेम, टुटिछे मोहबंध रे ॥
—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

(आड़ाना—एकताला)

मन्दिरे मम के आसिले हे!
सकल गगन अमृतमगन, दिशि गेल मिशि,
अमानिशि दुरे-दुरे ॥
सकल दुयार आपनि खुलिल, सकल प्रदीप आपनि ज्वलिल,
सब बीणा बाजिल नब नब सुरे-सुरे ॥
—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

(सिंधु विजय—तेवरा)

ओइ जे देखा जाय आनन्दधाम
अपूर्व शोभन भव-जलधिर पारे, ज्योत्तिर्मय ॥
शोक तापित जन सबे चल, सकल दुख हबे मोचन ।
शान्ति पाइबे हृदय माझे, प्रेम जागिबे अन्तरे ।
कत जोगीन्द्र ऋषि मुनिगण, ना जानि कि ध्याने मगन,
स्तिमित-लोचन कि अमृत-रस पाने भुलिल चराचर ;
कि सुधामय गान गाइछे सुरगण, बिमल बिभुगुण बन्दन,
कोटि चन्द्र तारा उलसित, नृत्य करिछे अबिराम ॥

—ज्योतिरिन्द्रनाथ ठाकुर

(इमन-कल्याण—तेवरा)

सत्यमंगल प्रेमयय तुमि ध्रुबज्योति तुमि अंधकारे ॥
तुमि सदा यार हृदे बिराज, दुख ज्वाला सेइ पासरे,
सब दुःख ज्वाला सेइ पासरे ॥
तोमार ज्ञाने, तोमार ध्याने,

तब नामे कतो माधुरी ।

जेइ भकत सेइ जाने,

तुमि जानाओ जारे सेइ जाने ॥

ओहे, तुमि जानाओ जारे सेइ जाने ॥

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

(प्रसादो-लूम-झिंझट—दादरा)

के तोमारे जानते पारे; तुमि ना जनाले परे
बेद बेदान्त पाय ना अन्त, खुजे बेड़ाय अंधकारे ॥
जाग ज्ञान तपोजोग, सकलइ हय कर्म भोग,
कर्म तोमार मर्म कि पाय तुमि सर्ब कर्म पारे,
सृष्टि जोड़ा तोमार माया काया नाई केबलि छाया,
माठेर माझे आकाश घेरा, घुरे सारा चारि धारे ॥
तुमि प्रभु इच्छामय, जदि तोमार इच्छा हय,
असाध्य सुसाध्य तार; तुमि कृपा कर जारे ॥
तब कृपा आशा करि रयेछि जीबन धरि,
कृपानाथ कृपा करि, एसो ब'सो हृद्‌माझारे ॥

—देबेन्द्रनाथ मजुमदार

(गजल—काहारवा)

तुझसे हमने दिलको लगाया, जो कुछ है सो तूहीं है।
एक तुझको अपना पाया, जो कुछ है सो तूहीं है॥
सबके मकान दिलका मकीन तूं, कौन सा हैं जिसमें नहीं तुँ
हर एक दिलमें तूँही समाया, जो कुछ है सो तूहीं है।
क्या मलायक् क्या इनसान् क्या हिन्दू क्या मुसलमान्
जैसे चाहा तूने बनाया, जो कुछ है सो तूहीं है॥
काबा में क्या, और दैर में क्या, तेरी परस्तिश होगी सबजा।
आगे तेरे शिर सबोंने झुकाया जो कुछ हैं सो तूहीं हैं॥
अर्श से लेकर फर्श जमीं तक, और जमीन से अर्शबरी तक ;
जहां मैं देखा तूहीं नजर आया, जो कुछ हैं सो तूहीं हैं॥
सोचा समझा देखा भला तू ऐसा न कोई ढुँढ़ निकाला,
अब यह समझ में जाफर की आया, जो कुछ है सो तूही है॥
—जाफर अली

(भैरबी—यत्)

प्रभु मेरे अबगुण चित न धरो॥
समदरशी है नाम तिहारो, चाहे तो पार करो॥
इक लोहा पूजा में राखत इक रहत ब्याध पर ;
पारस के मन द्विधा नहीं है, दुहुँ एक कांचन करो॥

एक नदिया इक नार कहाबत, मैलो नीर भरो,
जब मिलि दोनों एक बरण भये सुरसरि नाम धरो ॥
इक जीब इक ब्रह्म कहावत सूरदास झगरो,
अज्ञान से भेद होवे ज्ञानी काहे भेद करो ॥

—सूरदास

(मिश्र काफी—झाँपताल)

सुन्दर तोमारि नाम दीन शरण हे।
बरषे अमृतधार, जुड़ाय श्रबन प्राणरमण हे ॥
एक तब नाम धन, अमृत भबन हे,
अमर हय सेइ जन, जे करे कीर्त्तन हे ॥
गभीर विषाद राशि निमेषे बिनाशे,
जखनि तब नाम सुधा श्रबणे परशे।
हृदय मधुमय तब नाम गाने
हय हे हृदयनाथ चिदानन्दधन हे ॥

—पुण्डरीकाक्ष मुखोपाध्याय

(जय-जयन्ति—झाँपताल)

तुमि नाहि दिले देखा, के तोमाय देखिते पाय ?
तुमि ना डाकिले काछे सहजे कि चित धाय ?
तुमि पूर्ण परात्पर, तुमि अगम्य अपार,
ओहे नाथ साध्य कार, ध्यानेते धरे तोमाय ॥
मनेरे बुझाइ एत तुमि बाक्यमनातीत,
तबु प्राण ब्याकुलित, तोमारे देखिते चाय ॥
दिये दीने दरशन, कर हे दुःख मोचन,
ओहे लज्जानिबारण शीतल कर हृदय ॥
—बेचाराम चट्टोपाध्याय

(भैरवी—एकताला)

आमार माथा नत करे दाओ है तोमार चरण धुलार-तले ।
सकल अहंकार हे आमार, डुबाओ चोखेर जले ॥
निजेरे करिते गौरब दान, निजेरे केबलि करि अपमान,
आपनारे शुधु घेरिया घेरिया, घुरे मरि पले पले ॥

आमारे ना जेन करि प्रचार, आमार आपन काजे,
तोमारई ईच्छा करो हे पूर्ण, आमार जीवन माझे।
जाचि हे तोमार चरम शान्ति, पराणे तोमार परमकान्ति,
आमारे आड़ाल करिया दाँड़ाओ, हृदय पद्म-दले ॥
—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

(भैरवी—एकताला)

तुमि निर्मल कर, मंगल-करे मलिन मर्म मुछाये ,
तव पुण्य किरण दिये जाक् मोर, मोह कालिमा घुचाये ॥
लक्ष्यशून्य लक्ष बासना, छुटिछे गभीर आधारे ,
जानिना कखन, डूबे जाबे कोन् अकूल गरल पाथारे
प्रभु, बिश्व-बिपद-हन्ता, तुमि दाँड़ाओ रूधिया पन्था ,
तव श्रीचरणतले, निये एसो मोरे, मत्त-बासना घुचाये ॥
आछो, अनल अनिले, चिरनभोनीले, भूधर, सलिले,
गहने,
आछो, बिटपिलताय, जलदेर गाय, शशी, तारकाय,तपने,
आमि नयने बसन बांधिया बसे आधारे मरिगो काँदिया;
आमि, देखि नाइ किछु, बुझिनाइ किछु, दाओ हे
देखाये बुझाये ॥
—रजनीकान्त सेन

(बाउल—आड़ खेमटा)

डुब् डुब् डुब् रूपसागरे आमार मन।
तलातल पाताल खुंजले पाबिरे प्रेम रत्नधन।
डुब् डुब् डुब् डुबले पाबि हृदय माझे वृन्दावन।
दीप् दीप् दीप् ज्ञानेर बाति ज्वलबे हृदे अनुक्षण ॥
ड्यां ड्यां ड्यां ड्याङ्गाय डिंगे चालाय आबार से कोन् जन्
कुबीर बले शोन् शोन् शान् भाब गुरु श्रीचरण ॥

—कुबीर

(आशावरी—झाँपताल)

जागो जागो सकले अमृतेर अधिकारी ॥
नयन मेलिया देखो करुणानिधान, पापतापहारी।
पूरब अरुण ज्योति महिमा प्रचारे, बिहग जश गाय ताँहारि ।;
हृदय कपाट खुलि देखरे जतने, प्रेममय मूरति जनचितहारी
डाकरे नाथे, बिमल प्रभाते, पाइबे हृदये शान्तिर बारि ॥

—द्विजेन्द्रनाथ ठाकुर

(बेहाग—कहारबा)

तोमार असीमे प्राणमन लये, जत दूरे आमि धाइ—
कोथाओ दुःख, कोथाओ मृत्यु, कोथाओ बिच्छेद नाइ ॥
मृत्यु से घरे मृत्युर रूप, दुःख हय हे दुःखेर कूप,
तोमा होते जबे हइये बिमुख आपनार पाने चाइ ॥
हे पूर्ण, तब चरणेर काछे, जाहा किछु सब आछे आछे आछे,
नाइ-नाइ भय से शुधु आमारि, निशिदिन काँदि ताइ ।
अन्तर ग्लानि संसार-भार , पलक फेलिते कोथा एकाकार,
जीबनेर माझे स्वरूप तोमार राखिबारे जदि पाइ ॥

(मिश्र-बहार—तेताला)

मम प्राण-शतदल होक प्रनमि कमल तव चरणे
ओगो तब चरणे ।
(आमार) हृदयनाथ होक् तन्मय तोमारि शरणे
ओगो तोमारि स्मरणे

(तब) पूजार बेदी होक् आमार ए मन,
आरति प्रदीप होक् मोर ए दुटि नयन;
लहो मोरे पाय तोमारि सेबाय, जीबने मरणे
ओगो जीबने मरणे ।

(मिश्र देश—एकताला)

एइ लभिनु संग तब, सुन्दर हे सुन्दर ।
पुण्य ह'लो अंग मम धन्य ह'लो अन्तर ॥
आलोके मोर चक्षु दुटि मुग्ध ह'ये उठ्ल फुटि,
हृद्-गगने पबन ह'लो सौरभेते मन्थर, सुन्दर, हे सुन्दर ॥
एइ तोमारि परश-रागे चित ह'लो रंजित,
एइ तोमारि मिलन-सुधा रइल प्राणे संचित ।
तोमार माझे एम्नि करे नबीन करि लओ जे मोरे,
एइ जनमे घटाले मोर, जन्म-जनमान्तर, सुन्दर हे सुन्दर ॥
—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

(भैरवी—एकताला)

अन्तर मम बिकशित कर अन्तर तर हे ।
निर्मल कर उज्वल कर सुन्दर कर हे ॥
जाग्रतो कर उद्यतो कर निर्भय कर हे ।
मंगल कर निरलस निःसंशय करो हे ।
जुक्त कर हे सबार संगे, मुक्त कर हे बन्ध,
संचार कर सकल कर्मे, शान्त तोमार छन्द ॥
चरणपद्मे मम चित निःष्पन्दित कर हे ।
नन्दित कर नन्दित कर नन्दित कर हे ॥

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

विविध-संगीत

(बाउल—दादरा)

जदि तोर डाक् शुने केउ ना आसे, तबे एकला चलोरे ।
एक्ला चलो, एक्ला चलो, एक्ला चलो एक्ला चलो रे ॥
जदि केउ कथा ना कय—(ओरे ओरे ओ अभागा !)
जदि सबाइ थाके मुख् फिराये, सबाइ करे भय—
तबे पराण खुले,
ओ तुइ मूख फुटे, तोर मनेर् कथा एक्ला बलो रे ॥
जदि सबाइ फिरे जाय—(ओरे ओरे ओ अभागा !)
जदि गहन पथे जाबार काले केउ फिरे ना चाय—
तबे पथरे काँटा,
ओ तुइ रक्तमाखा चरणतले एक्ला दलो रे ॥
जदि आलो ना घरे—(ओरे ओरे ओ अभागा !)
जदि झड़ बादले आँधार राते दुआर देय घरे—
तबे बज्रानले,
आपन बुकेर पाँजर ज्वालिये निये एक्ला ज्वलो रे ।

—रबीन्द्रनाथ ठाकुर

(भैरवी — दादरा)

सकल देशेर भगबान नमि तोमार पाय।
तोमार काजे तोमार ध्याने जेन जीबन जाय॥
सकल जातेर ऋषि जत सबार पाये हइ गो नत,
धन्य करो जीबन मोदेर दिये पद - छाय॥
आम्रा सबाई एकटि जात, एकइ भगवान्,
एकइ सुरे थाकुक् बाँधा मोदेर सकल प्राण।
'सत्य' मोदेर ध्रुबतारा, आर हबो ना लक्ष्यहारा,
सफल हबे सकल जीबन सत्येरि सेबाय॥

—स्वामी चण्डिकानन्द

(मिश्र-केदारा—एकताला)

धन धान्ये पुष्पे भरा आमादेर एइ बसुन्धरा;
ताहार माझे आछे देश एक—सकल देशेर सेरा,
(से जे) स्बप्न दिये तैरी से जे स्मृति दिये घेरा;
एमन देशटि कोथाओ खुंजे पाबे ना को तुमि,
सकल देशेर रानी से जे आमार जन्मभूमि॥
चन्द्र सूर्य ग्रह तारा, कोथाय एमन उजल धारा?

कोथाय एमन खेले तड़ित एमन उजल कालो मेघे ?
(ओ तार) पाखीर डाके घुमिये उटि, पाखीर डाके जेगे ।
एमन देशटि कोथाओ ... ... इत्यादि ॥
एमन स्निग्ध नदी काहार ? कोथाय एमन धुम्र पाहाड़ ?
कोथाय एमन हरित क्षेत्र आकाश तले मेशे ?
(एमन) धानेर उपर ढेउ खेले जाय बातास काहार देशे ?
एमन देशटि कोथाओ ... ... इत्यादि ॥
पुष्पे पुष्पे भरा शाखी, कुञ्जे कुञ्जे गाहे पाखी,
गुञ्जरिया आसे अलि पुञ्जे पुञ्जे धेये ;
(तारा) फूलेर उपर घुमिये पड़े फूलेर मधु खेये ।
एमन देशटि कोथाओ ... ... इत्यादि ॥
भायेर मायेर एतो स्नेह, कोथाय गेले पाबे केह ?
ओमा, तोमार चरण दु'टि बक्षे आमार धरि ;
(आमार) एइ देशेते जन्म—जेन एइ देशेतेइ मरि ।
एमन देशटि कोथाओ ... ... इत्यादि ॥

—द्विजेद्रलाल राय

(मिश्र—तेताला)

उठोगो, भारतलक्ष्मी ! उठो आदि जगत-जन पूज्या !
दुःख दैन्य सब नाशि, कर दूरित भारत-लज्जा ।
छाड़गो, छाड़ शोक-शय्या कर सज्जा
पुनः कमल कनक धन-धान्ये ॥
जननी गो, लहो तुले बक्षे, सान्त्वन-बास देहो तुले चक्षे;
काँदिछे तब चरण तले त्रिशति कोटि नर नारी गो, ॥
काण्डारी ! नाहिको कमला, दुःख-लाञ्छित भारतबर्षे,
शङ्कित मोरा सब जात्री, काल सागर-कम्पन दर्शे,
तोमार अभय पद-स्पर्शे नव हर्षे,
पुनः चलिबे तरणी शुभ लक्ष्ये,
जननी गो, लहो तुले बक्षे, सान्त्वन-बास देहो तुले चक्षे;
काँदिछे तब चरणतले त्रिंशति कोटि नर नारी गो ॥
भारत-श्मशान करो पूर्ण पुनः कोकिल-कुजित-कुञ्जे,
द्वेष-हिंसा करि' चूर्ण, कर पूरित प्रेम-अलि-गुञ्जे,
दूरित करि पाप-पुञ्जे, तपः-तुञ्जे,
पुनः बिमल कर भारत पुण्ये ॥

जननी गो लह तुले बक्षे, सान्त्वन-बास देह तुले चक्षे;
काँदिछे तब चरण तले त्रिशति कोटि नर-नारी गो ॥
—अतुल प्रसाद सेन

(मिश्र—तेताला)

हओ धरमेते धीर हओ करमेते बीर,
हओ उन्नत - शिर, नाहि भय ।
भुलि भेदाभेद ज्ञान हओ सबे आगुआन,
साथे आछे भगबान,—हबे जय ॥
नाना भाषा, नाना मत नाना परिधान ;
बिबिधेर माझे देखो मिलन महान ;
देखिया भारते महा-जातिर उत्थान—जगजन मानिबे बिस्मय ॥
तेत्रिस कोटि मोरा नहि कभु क्षीण,
होते पारि दीन, तबु नहि मोरा हीन ।
भारते जनम पुन: आसिबे सुदिन—ओइ देखो प्रभात उदय ॥
न्याय बिराजित जादेर करे, बिघ्न पराजित तादेर शरे,
साम्य कभु नाहि स्वार्थे डरे—सत्येर नाहि पराजय ॥
—अतुल प्रसाद सेन

(मिश्र-खाम्बाज—तेताला)

बल बल बल सबे, शत बीणा-बेणु-रबे ,
भारत आबार जगत-सभाय श्रेष्ठ आसन लबे ।
धर्मे महान हबे , कर्मे महान हबे ,
नब दिनमणि उदिबे आबार पूरातन ए पूरबे ।।
आज ओ गिरिराज रयेछे प्रहरी
घिरि तिन दिक् नाचिछे लहरी,
जायनि शुकाये गङ्गा गोदाबरी, एखनओ अमृतबाहिनी ।
प्रति प्रान्तर, प्रति गुहाबन
प्रति जन-पद तीर्थ अगनन, कहिछे गौरब-काहिनी ।।
बिदूषी मैत्रेयी खना लीलाबती,
सती ओ साबित्री सीता अरुन्धती,
बहु बीरबाला बीरेन्द्र-प्रसूति आमरा ताँदेरी सन्तति ।
अनले दहिया राखे जारा मान,
पति पुत्र तरे सुखे त्यजे प्राण आमरा ताँदेरी सन्तति ।।

(मिश्र भूपाली—कहारवा)

मातृमन्त्र ओठे ए भारतवर्षे—
बन्दे मातरम्, बन्दे मातरम्, बन्दे मातरम् ॥
दुलिछे ओ रबे भैरब हरषे—
गैरिक गङ्गा काञ्चनजङ्घा
असीम सुनील व्योम ॥
मायेर हिरन्मय पदतले प्रोज्ज्वल,
दुले ओठे भारतेर जोबन धूलिदल ।
असंख्य संघात, छोड़ गम्भीरे नादे,
दोले अलकामृत नन्दित सिन्धु
दोले बिच्छेदमय विश्व बिमर्षेर
सन्तान मिलनेर अमर आनन्देर मन्द्रित उद्यान ॥

—नरेन्द्र देव

(भीमपलश्री—तेताला)

मोरा बिघ्न-बाधा-भरा पथ दलि, आलो-तीर्थ लागि
दूर-पाने चलि ।
मोरा स्वर्ग-सुधा आनि धूलि तटे दिबो फलफुले
ढाकि मरुस्थली ॥

मोरा दिब बाणी कोटि मूकजने, दीबो दीप ज्वाली
तमोलीन मने ।
नब-सुख हासि आनि म्लान मुखे, दिब विश्व-सेबाव्रते
आत्मबलि ॥
मोरा भीम बले जुझि बिघ्न साथे रामकृष्ण-कृपाशिष
धरि माथे ।
जाब तुच्छ करि जरा, मृत्यु, व्याधि,
जेथा प्रेम-पाराबार छलछलि ॥
—ब्रह्मचारी ज्योतिर्मय चैतन्य

(मिश्र-बेहाग—एकताला)

आदर्श तब शंकर सीता भुलिओ ना तुमि भुलियो ना ।
भुलिओ ना तुमि महा पबित्र एइ भारतेर धूलिकणा ॥
भारत-सन्तान देबता तोमार, खुँजिते ईश्वर कोथा जाबे आर ?
महा उपचारे त्याग ओ सेबार, कर कर तार आराधना ॥
उच्च कण्ठे बल बल तुमि, भारत-सन्तान आमार भाइ ।
मूर्ख काङ्गाल द्विज चण्डाल, देबता आमार एँरा सबाइ ।
प्राणपणे तुमि बलो दिनरात, जगत जननी, ओगो उमानाथ,
मानुष करिया दाओ गो आमाय, किछु आमि चाहिबोना ।
—स्वामी चण्डिकानन्द

(बाउल—दादरा)

नीचुर काछे नीचु होते शिख्लि नारे मन् !
सुखी जनेर् करिस् पूजा, दुःखीर अजतन ! (मूढ मन) !!
लागेनि जार पाये धूलि, कि निबि तार चरण-धूलि ?
नय रे सोणाय, बनेर काठेइ हय रे चन्दन ! (मूढ मन)
प्रेम-धन मायेर मतन् दुःखी सुतेइ अधिक् जतन ;
एइ धनेते धनी जे जन सेइ तो महाजन ! (मूढ मन)
वृथा तोर कृच्छ साधन; सेबाइ नरेर श्रेष्ठ साधन !
मानबेर परम तीर्थ, दीनेर श्रीचरण ! (मूढ मन)
मतामतेर तर्के मत्त, आछिस् भुले सरल सत्य ;
—सकल घरे सकल नरे आछेन नारायण ! (मूढ मन !)

—अतुल प्रसाद सेन

* श्रीश्री सूर्य प्रणाम *

जवाकुसुम सङ्काशं काश्यपेयं महाद्युतिम् ।
ध्वान्तारिं सर्व पापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम् ॥

ॐ

सस्वर वेदमन्त्राः

प्रार्थना

ॐ गणानां त्वा गणपतिग्ं हवामहे कविं कवीना-
मुपमश्रवस्तमम् । ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ
नः शृण्वन्नूतिभिः सीद सादनम् ॥

ॐ हंस हंसाय विद्महे परमहंसाय धीमहि ।
तन्नो हंसः प्रचोदयात् ॥

ॐ भूः। ॐ भुवः। ओग् सुवः। ॐ महः। ॐ जनः। ॐ तपः। ओग् सत्यम्। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्। ओमापो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः सुवरोम्॥

ॐ वेदात्मनाय विद्महे हिरण्यगर्भाय धीमहि। तन्नो ब्रह्म प्रचोदयात्॥

ॐ कात्यायनाय विद्महे कन्यकुमारि धीमहि। तन्नो दुर्गिः प्रचोदयात्॥

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥

ॐ नमो हिरण्यबाहवे हिरण्यवर्णाय हिरण्यरूपाय हिरण्यपतयेऽम्बिकापतय उमापतये पशुपतये नमो नमः ॥

ऋतग् सत्यं परं ब्रह्म पुरुषं कृष्णपिङ्गलम् ।
ऊर्ध्वरेतं विरूपाक्षं विश्वरूपाय वै नमो नमः ॥

ईशान-स्सर्वविद्याना-मीश्वर-स्सर्वभूतानां ब्रह्माऽधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपति-र्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम् ॥

ॐभूर्भुव-स्सुवः ॥ ॐ नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

शान्तिमन्त्राः

ॐ सह नाववतु । सह नौ भुनक्तु । सह वीर्यं करवावहै । तेजस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहै ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ १ ॥

ॐ शं नो मित्रः शं वरुणः । शं नो भवत्वर्यमा । शं न इन्द्रो बृहस्पतिः । शं नो विष्णुरुरुक्रमः । नमो ब्रह्मणे । नमस्ते वायो । त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि । त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि । ऋतं वदिष्यामि ।

सत्यं वदिष्यामि । तन्मामवतु । तद्वक्तारमवतु ।
अवतु माम् । अवतु वक्तारम् ।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ २ ॥

ॐ भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवाः । भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः । स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाग्ं सस्तनूभिः । व्यशेम देवहितं यदायुः । स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः । स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः । स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः । स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ ३ ॥

ॐ नमो ब्रह्मणे नमो अस्त्वग्नये नमः पृथिव्यै नम ओषधीभ्यः। नमो वाचे नमो वाचस्पतये नमो विष्णवे बृहते करोमि ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ ४ ॥

ॐ यश्छन्दसामृषभो विश्वरूपः। छन्दोभ्योऽध्यमृताश्सम्बभूव । स मेन्द्रो मेधया स्पृणोतु । अमृतस्य देवधारणो भूयासम् । शरीरं मे विचर्षणम् । जिह्वा मे मधुमत्तमा। कर्णाभ्यां भूरि विश्रुवम् । ब्रह्मणः कोशोऽसि मेधया पिहितः। श्रुतं मे गोपाय ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ ५ ॥

ॐ तच्छं योरावृणीमहे। गातुं यज्ञाय। गातुं यज्ञपतये। दैवी स्वस्तिरस्तु नः। स्वस्तिर्मानुषेभ्यः। ऊर्ध्वं जिगातु भेषजम्। शं नो अस्तु द्विपदे। शं चतुष्पदे। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ ६॥

ॐ मधुवाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः। मधु नक्त मुतोषसि मधुमत्पार्थिवगं रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता। मधुमान्नो वनस्पति-र्मधुमागं अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ ७॥

ॐ नमो वाचे या चोदिता या चानुदिता तस्यै वाचे नमो नमो वाचे नमो वाचस्पतये नमो ऋषिभ्य मन्त्रकृद्भ्यो मन्त्रपतिभ्यो मा मामृषयो मन्त्रकृतो मन्त्रपतयः परादुर्माऽहमृषीन्मन्त्रकृतो मन्त्रपतीन्परादां वैश्वदेवीं वाचमुद्यासगं शिवामदस्तां जुष्टां देवेभ्यः शर्म मे द्यौः शर्म पृथिवी शर्म विश्वमिदं जगत्। शर्म चन्द्रश्च सूर्यश्च शर्म ब्रह्मप्रजापती।

भूतं वदिष्ये भुवनं वदिष्ये तेजो वदिष्ये यशो वदिष्ये तपो वदिष्ये ब्रह्म वदिष्ये सत्यं वदिष्ये तस्मा अहमिदमुपस्तरण मुपस्तृण उपस्तरणं मे प्रजायै

पशूनां भूयादुपस्तरणमहं प्रजायै पशूनां भूयासं प्राणापानौ मृत्योर्मापातं प्राणापानौ मा मा हासिष्टं मधु मनिष्ये मधु जनिष्ये मधु वक्ष्यामि मधु वदिष्यामि मधुमतीं देवेभ्यो वाचमुद्यासगँ शुश्रूषेण्यां मनुष्येभ्यस्तं मा देवा अवन्तु शोभायै पितरोऽनुमदन्तु ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥८॥

ॐ वाङ्मे मनसि प्रतिष्ठिता मनो मे वाचि प्रतिष्ठित मावीरावीर्म एधि वेदस्य म आणीस्थः श्रुतं मे मा प्रहासीरनेनाधीते - नाहोरात्रान् संदधाम्यृतं वदिष्यामि सत्यं वदिष्यामि तन्मामवतु तद्वक्तार-

मवत्ववतु मामवतु वक्तारमवतु वक्तारम् ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥९॥

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥१०॥

स एष नेति नेत्यात्माऽगृह्यो नहि गृह्यतेऽशीर्यो नहि शीर्यतेऽसङ्गो नहि सज्यतेऽसितो न व्यथते न रिष्यत्यभयं वै जनक प्राप्तोऽसीति होवाच याज्ञवल्क्यः स होवाच जनको वैदेहोऽभयं त्वा गच्छताद्याज्ञवल्क्य यो नो भगवन्नभयं वेदयसे नमस्तेऽस्त्विमे विदेहा अयमहमस्मि ॥

बृ० उ० ४-२-४

अथ ईशावास्योपनिषत्

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं......

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

ॐ ईशा वास्यमिदगं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत् ।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम् ॥१॥

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतगं समाः ।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे ॥२॥

असुर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसाऽऽवृताः
तागं स्ते प्रेत्याभिगच्छन्ति ये के चात्महनोजनाः ॥३॥

अनेजदेकं मनसो जवीयो नैनद्देवा आप्नुवन्पू-र्वमर्षत् ।

तद्धावतोऽन्यानत्येति तिष्ठत्तस्मिन्नपो

मातरिश्वा दधाति ॥४॥

तदेजति तन्नेजति तद्दूरे तद्वन्तिके ।

तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः ॥५॥

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्येवानुपश्यति ।

सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विजुगुप्सते ॥६॥

यस्मिन्सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूद्विजानतः ।

तत्र को मोहः कः शोक एकत्वमनुपश्यतः ॥७॥

स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरगं शुद्धमपापविद्धम्

कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान्
व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः ॥८॥

अन्धं तमः प्रविशन्ति येऽविद्यामुपासते ।
ततो भूय इव ते तमो य उ विद्यायागं रताः ॥९॥

अन्यदेवाहुर्विद्ययान्यदाहुरविद्यया ।
इति शुश्रुम धीराणां ये नस्तद्विचचक्षिरे ॥१०॥

विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयगं सह ।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते ॥११॥

अन्धं तमः प्रविशन्ति येऽसम्भूतिमुपासते

ततो भूय इव ते तमो य उ सम्भूत्यागं् रताः ॥१२॥

अन्यदेवाहुः सम्भवादन्यदाहुरसम्भवात् ।

इति शुश्रुम धीराणां ये नस्तद्विचचक्षिरे ॥१३॥

सम्भूतिं च विनाशं च यस्तद्वेदोभयगं् सह ।

विनाशेन मृत्युं तीर्त्वा सम्भूत्याऽमृतमश्नुते ॥१४॥

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम् ।

तत्वं पूषन्नपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये ॥१५॥

पूषन्नेकर्षे यम सूर्य प्राजापत्य व्यूह रश्मीन् समूह

तेजो यत्ते रूपं कल्याणतमं तत्ते पश्यामि

योऽसावसौ पुरुषः सोऽहमस्मि ॥१६॥

वायुरनिलममृतमथेदं भस्मान्तगं शरीरम् ।

ॐ ३ क्रतो स्मर कृतगं स्मर क्रतो स्मर

कृतगं स्मर । ॥१७॥

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव

वयुनानि विद्वान् । युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां

ते नमउक्तिं विधेम । ॥१८॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

नारायणोपनिषत्

ॐ अथ पुरुषो ह वै नारायणोऽकामयत प्रजाः सृजेयेति। नारायणात्प्राणो जायते। मनः सर्वेन्द्रियाणि च। खं वायुर्ज्योतिरापः पृथिवी विश्वस्य धारिणी। नारायणाद् ब्रह्मा जायते। नारायणाद् रुद्रो जायते। नारायणादिन्द्रो जायते। नारायणात्प्रजापतयः प्रजायन्ते। नारायणाद् द्वादशादित्या रुद्रा वसवस्सर्वाणि च छन्दांसि। नारायणादेव समुत्पद्यन्ते। नारायणे प्रवर्तन्ते। नारायणे प्रलीयन्ते। ॐ। अथ नित्यो नारायणः। ब्रह्मा

नारायणः । शिवश्च नारायणः । शक्रश्च नारायणः ।
द्यावापृथिव्यौ च नारायणः । कालश्च नारायणः ।
दिशश्च नारायणः । ऊर्ध्वश्च नारायणः । अधश्च
नारायणः । अन्तर्बहिश्च नारायणः । नारायण एवेदगं
सर्वम् । यद्भूतं यच्च भव्यम् । निष्कलो निरंजनो
निर्विकल्पो निराख्यातः शुद्धो देव एको नारायणः ।
न द्वितीयोऽस्ति कश्चित् । य एवं वेद । स
विष्णुरेव भवति स विष्णुरेव भवति ॥

ओमित्यग्रे व्याहरेत् । नम इति पश्चात् ।

नारायणायेत्युपरिष्टात् । ओमित्येकाक्षरम् । नम इति द्वे अक्षरे । नारायणायेति पंचाक्षराणि । एतद्वै नारायणस्याष्टाक्षरं पदम् । यो ह वै नारायण-स्याष्टाक्षरं पदमध्येति । अनपब्रुवस्सर्वमायुरेति । विन्दते प्राजापत्यं रायस्पयोषं गौपत्यम् । ततोऽमृतत्वमश्नुते ततोऽमृतत्वमश्नुत इति य एवं वेद ॥ प्रत्यगानन्दं ब्रह्म पुरुषं प्रणव-स्वरूपम् । अकार उकार मकार इति । तानेकधा समभरत्तदेतदोमिति । यमुक्त्वा मुच्यते योगी जन्म-संसारबन्धनात् । ॐ नमो नारायणायेति मन्त्रोपासकः ।

वैकुण्ठभुवनलोकं गमिष्यति । तदिदं परं पुण्डरीकं विज्ञानघनम् । तस्मात्तदिदावत्मात्रम् । ब्रह्मण्यो देवकी-पुत्रो ब्रह्मण्यो मधुसूदनोम् । सर्वभूतस्थमेकं नारायणम् । कारणरूपमकार परब्रह्मोम् । एतदथर्वशिरोयोधीते प्रातर-धीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति । सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति । माध्यन्दिनमादित्याभि-मुखोऽधीयानः पंचपातकोपपातकात्प्रमुच्यते । सर्ववेद पारायण पुण्यं लभते । नारायणसायुज्यमवाप्नोति नारायण सायुज्यमवाप्नोति । य एवं वेद । इत्युपनिषत् ॥

आचार्योपदेशः

ॐ ॥ वेदमनूच्याचार्योऽन्तेवासिन-मनुशास्ति । सत्यं वद । धर्मं चर । स्वाध्यायान्मा प्रमदः । आचार्याय प्रियं धनमाहृत्य प्रजातन्तुं मा व्यवच्छेत्सीः । सत्यान्न प्रमदितव्यम् । धर्मान्न प्रमदितव्यम् । कुशलान्न प्रमदितव्यम् । भूत्यै न प्रमदितव्यम् । स्वाध्याय प्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम् ॥

देवपितृकार्याभ्यां न प्रमदितव्यम् । मातृदेवो भव । पितृ देवो भव । आचायदेवो भव । अतिथि-

देवो भव। यान्यनवद्यानि कर्माणि। तानि सेवि-
तव्यानि। नो इतराणि। याण्यस्माकगं सुचरितानि।
तानि त्वयोपास्यानि।

नो इतराणि। ये के चास्मच्छ्रेयागं सो ब्राह्मणा:।
तेषां त्वयासने न प्रश्वसितव्यम्। श्रद्धया देयम्।
अश्रद्धयाऽदेयम्। श्रिया देयम्। ह्रियां देयम्। भिया
देयम्। संविदा देयम्। अथ यदि ते कर्मविचिकित्सा
वा वृत्तविचिकित्सा वा स्यात्॥ ॐ शान्ति:
शान्ति: शान्ति:।

बृहदारण्यकोपनिषत्

(चतुर्थोऽध्याय:)

अथ ह याज्ञवल्क्यस्य द्वे भार्ये बभूवतुर्मैत्रेयी च कात्यायनी च तयोर्ह मैत्रेयी ब्रह्मवादिनी बभूव स्त्रीप्रज्ञैव तर्हि कात्यायन्यथ ह याज्ञवल्क्योऽन्यद्वृत्त-मुपाकरिष्यन् ॥ १ ॥ मैत्रेयीति होवाच याज्ञवल्क्य: प्रव्रजिष्यन्वा अरेऽहमस्मात्स्थानादस्मि हन्त तेऽनया कात्यायन्याऽन्तं करवाणीति ॥२॥ सा होवाच मैत्रेयी यन्नु म इयं भगो: सर्वा पृथिवी वित्तेन पूर्णा स्यात्स्यां न्वहं तेनामृताऽऽहो ३ नेति नेति होवाच याज्ञवल्क्यो यथैवोपकरणवतां जीवितं तथैव ते जीवितग्ं स्यादमृतत्वस्य तु नाऽऽशाऽस्ति वित्तेनेति ॥३॥ सा होवाच मैत्रेयी येनाहं नामृता स्यां किमहं तेन कुर्यां यदेव भगवान्वेद तदेव मे ब्रूहीति ॥४॥

स होवाच याज्ञवल्क्यः प्रिया वै खलु नो भवती सती प्रियमवृधद्धन्त तर्हि भवत्येतद्व्याख्यास्यामि ते व्याचक्षाणस्य तु मे निदिध्यासस्वेति ॥५॥ स होवाच न वा अरे पत्युः कामाय पतिः प्रियो भवत्यात्मनस्तु कामाय पतिः प्रियो भवति न वा अरे जायायै कामाय जाया प्रिया भवत्यात्मनस्तु कामाय जाया प्रिया भवति न वा अरे पुत्राणां कामाय पुत्राः प्रिया भवन्त्यात्मनस्तु कामाय पुत्राः प्रिया भवन्ति न वा अरे वित्तस्य कामाय वित्तं प्रियं भवत्यात्मनस्तु कामाय वित्तं प्रियं भवति न वा अरे पशूनां कामाय पशवः प्रिया भवन्त्यात्मनस्तु कामाय पशवः प्रिया भवन्ति न वा अरे ब्रह्मणः कामाय ब्रह्म प्रियं भवत्यात्मनस्तु कामाय ब्रह्म प्रियं भवति न

वा अरे क्षत्रस्य कामाय क्षत्रं प्रियं भवत्यात्मनस्तु कामाय क्षत्रं प्रियं भवति न वा अरे लोकानां कामाय लोकाः प्रिया भवन्त्यात्मनस्तु कामाय लोकाः प्रिया भवन्ति न वा अरे देवानां कामाय देवाः प्रिया भवन्त्यात्मनस्तु कामाय देवाः प्रिया भवन्ति न वा अरे वेदानां कामाय वेदाः प्रिया भवन्त्या-त्मनस्तु कामाय वेदाः प्रिया भवन्ति न वा अरे भूतानां कामाय भूतानि प्रियाणि भवन्त्यात्मनस्तु कामाय भूतानि प्रियाणि भवन्ति न वा अरे सर्वस्य कामाय सर्वं प्रियं भवत्यात्मनस्तु कामाय सर्वं प्रियं भवत्यात्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यो मैत्रेय्यात्मनि खल्वरे दृष्टे श्रुते मते विज्ञात इदँ गं सर्वं विदितम् ॥६॥ ब्रह्म

तं परादाद्योऽन्यत्राऽऽत्मनो ब्रह्म वेद क्षत्रं तं परादाद्योऽन्यत्राऽऽत्मनः क्षत्रं वेद लोकास्तं परादुर्योऽन्यत्राऽऽत्मनो लोकान्वेद देवास्तं परादुर्योऽन्यत्राऽऽत्मनो देवान्वेद वेदास्तं परादुर्योऽन्यत्राऽऽत्मनो वेदान्वेद भूतानि तं परादुर्योऽन्यत्राऽऽत्मनो भूतानि वेद सर्वं तं परादाद्योऽन्यत्राऽऽत्मनः सर्वं वेदेदं ब्रह्मेदं क्षत्रमिमे लोका इमे देवा इमे वेदा इमानि भूतानीदँ सर्वं यदयमात्मा ॥७॥ स यथा दुंदुभेर्हन्यमानस्य न बाह्याञ्छब्दाञ्छक्नुयाद् ग्रहणाय दुंदुभेस्तु ग्रहणेन दुंदुभ्याघातस्य वा शब्दो गृहीतः ॥८॥ स यथा शङ्खस्यध्मायमानस्य न बाह्याञ्छब्दाञ्छक्नुयाद् ग्रहणाय शङ्खस्य तु ग्रहणेन शङ्खध्मस्य वा शब्दो गृहीतः ॥९॥ स यथा वीणायै वाद्यमानायै न बाह्याञ्छब्दाञ्छक्नुयाद् ग्रहणाय वीणायै

तु ग्रहणेन वीणावादस्य वा शब्दो गृहीतः ॥१०॥
स यथाऽऽर्द्रैधाग्नेरभ्याहितस्य पृथग्धूमा विनिश्चरन्त्येवं
वा अरेऽस्य महतो भूतस्य निःश्वसितमेतद्यदृग्वेदो
यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्वाङ्गिरस इतिहासः पुराणं विद्या
उपनिषदः श्लोकाः सूत्राण्यनुव्याख्यानानि व्याख्या-
नानीष्टगँ हुतमाशितं पायितमयं च लोकः परश्च
लोकः सर्वाणि च भूतान्यस्यैवैतानि सर्वाणि निःश्वसि
तानि ॥११॥ स यथा सर्वासामपागँ समुद्र एकायन-
मेवगँ सर्वेषागँ स्पर्शानां त्वगेकायनमेवगँ सर्वेषगँ
गन्धानां नासिकैकायनमेवगँ सर्वेषागँ रसानां जिह्वै-
कायनमेवगँ सर्वेषागँ रूपाणां चक्षुरेकायनमेवगँ सर्वेषागँ
शब्दानागँ श्रोत्रमेकायनमेवगँ सर्वेषागँ संकल्पानां मन
एकायनमेवगँ सर्वासां विद्यानागँ हृदयमेकायनमेवगँ

सर्वेषां कर्मणागँ हस्तावेकायनमेवगँ सर्वेषामानन्दानामु-
पस्थ एकायनमेवगँ सर्वेषां विसर्गाणां पायुरेकायनमेवगँ
सर्वेषामध्वनां पादावेकायनमेवगँ सर्वेषां वेदानां वागे-
कायनम् ॥१२॥ स यथा सैन्धवघनोऽनन्तरोऽबाह्यः
कृत्स्नो रसघन एवैवं वा अरेऽयमात्माऽनन्तरोऽबाह्यः
कृत्स्नः प्रज्ञानघन एवैतेभ्यो भूतेभ्यः समुत्थाय तान्ये-
वानुविनश्यति न प्रेत्य संज्ञाऽस्तीत्यरे ब्रवीमीति
होवाच याज्ञवल्क्यः ॥१३॥ सा होवाच मैत्रेय्यत्रैव
मा भगवान्मोहान्तमापीपिपन्न वा अहमिमं विजानामीति
स होवाच न वा अरेऽहं मोहं ब्रवीम्यविनाशी वा
अरेऽयमात्माऽनुच्छित्तिधर्मा ॥१४॥ यत्र हि द्वैतमिव
भवति तदितर इतरं पश्यति तदितर इतरं जिघ्रति
तदितर इतरगँ रसयते तदितर इतरमभिवदति तदितर

इतरगँ् शृणोति तदितर इतरं मनुते तदितर इतरगँ्
स्पृशति तदितर इतरं विजानाति यत्र त्वस्य सर्वमा-
त्मैवाभूत्तत्केन कं पश्येत्तत्केन कं जिघ्रेत्तत्केन कगँ्
रसयेत्तत्केन कमभिवदेत्तत्केन कगँ् शृणुयात्तत्केन कं
मन्वीत तत्केन कगँ् स्पृशेत्तत्केन कं विजानीयाद्येनेदँ्
सर्वं विजानाति तं केन विजानीयात्स एष नेति
नेत्यात्माऽगृह्यो न हि गृह्यतेऽशीर्यो न हि शीर्यते-
ऽसङ्गो न हि सज्यतेऽसितो न व्यथते न रिष्यति
विज्ञातारमरे केन विजानीयादित्युक्तानुशासनाऽसि
मैत्रेय्येतावदरे खल्वमृतत्वमिति होक्त्वा याज्ञवल्क्यो
विजहार ॥१५॥

इति चतुर्थ अध्याये पञ्चमं ब्राह्मणम् ॥5॥

श्रीमहिषासुरमर्दिनी स्तोत्रम्

अयि गिरिनन्दिनि नन्दितमेदिनि विश्वविनोदिनि नन्दसुते
गिरिवरविन्ध्यशिरऽधिनिवासिनि विष्णुविलासिनि जिष्णुनुते ।
भगवति हे शितिकंठकुटुंबिनि भूरिकुटुम्बिनि भूरिकृते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥१॥
सुरवरवर्षिणि दुर्धरधर्षिणि दुर्मुखमर्षिणि हर्षरते
त्रिभुवनपोषिणि शंकरतोषिणि किल्बिषमोषिणी घोषरते ।
दनुजनिरोषिणि दितिसुतरोषिणि दुर्मदशोषिणि सिन्धुसुते
॥ २ ॥ जय जय०
अयि जगदम्ब मदम्ब कदम्बवनप्रियवासिनि हासरते
शिखरशिरोमणि तुङ्गहिमालय शृङ्गनिजालय मध्यगते ।
मधुमधुरे मधुकैटभगंजिनि कैटभभंजिनि रासरते
॥ ३ ॥ जय जय०
अयि शतखण्ड विखंडितरुण्ड वितुंडितशुंडगजाधिपते
रिपुगजगंड विदारणचंड पराक्रमशुण्ड मृगाधिपते
निजभुजदण्ड निपातितखंड विपातितमुंड भटाधिपते
॥ ४ ॥ जय जय०

अयि रणदुर्मद शत्रुवधोदित दुर्धरनिर्जर शक्तिभृते
चतुरविचार धुरीण महाशिवदूतकृत प्रमथाधिपते ।
दुरितदुरीह दुराशयदुर्मति दानवदूतकृतान्तमते
॥५॥ जय जय०

अयि शरणागत वैरिवधूवरवीरवराभयदायकरे
त्रिभुवन मस्तक शूलविरोधि शिरोधिकृतामल शूलकरे ।
दुमिदुमितामर दुंदुभिनाद महो मुखरीकृत तिग्मकरे
॥ ६ ॥ जय जय०

अयि निजहुँकृतिमात्र निराकृत धूम्रविलोचन धूम्रशते
समरविशोषित शोणितबीज समुद्भवशोणित बीजलते ।
शिवशिव शुम्भ निशुम्भमहाहव तर्पित भूत पिशाचरते
॥ ७ ॥ जय जय०

धनुरनुसंग रणक्षणसंग परिस्फुरदंग नटत्कटके
कनक पिशंगपृषत्कनिषंगरसद्भटश्रृंग हतावटुके ।
कृतचतुरंग बलक्षितिरङ्ग घटद्बहुरङ्ग रटद्बटुके
॥८॥ जय जय०

जय जय जीतजये जय शब्दपरस्तुति तत्पर विश्वनुते
झण झणझिझिमि झिकृतनूपुर सिंजितमोहित भूतपते ।
नटितनटार्ध नटीनटनायक नाटितनाट्य सुगानरते
॥९॥ जय जय०

अयि सुमनः सुमनः सुमनः सुमनः सुमनोहर कान्तियुते
श्रितरजनी रजनी रजनी रजनी रजनीकर वक्त्रवृते ।
सुनयनविभ्रमर भ्रमर भ्रमर भ्रमर भ्रमराधिपते
॥ १० ॥ जय जय०

सहितमहाहव मल्लमतल्लिक मल्लितरल्लक मल्लरते
विरचितवल्लिक पल्लिकमल्लिक झिल्लिकभिल्लिक वर्गवृते ।
सितकृतफुल्लि समुल्लसिताकृणतल्लजपल्लव सल्ललिते
॥ ११ ॥ जय जय

अविरलगण्डगलन्मदमेदुर मत्तमतंगज राजपते
त्रिभुवनभूषण भूतकलानिधि रूपपयोनिधि राजसुते ।
अयि सुदतीजन लालसमानस मोहनमन्मथ राजसुते
॥ १२ ॥ जय जय०

कमलदलामल कोमलकान्ति कलाकलितामल भाललते
सकलविलास कलानिलयक्रम केलिचलत्कल हंसकुले ।
अलिकुलसंकुल कुवलय मण्डल मौलिमिलद्बकुलालिकुले
॥ १३ ॥ जय जय०

करमुरलीरववीजितकूजित लज्जितकोकिल मंजुमते
मिलितपुलिंद मनोहरगुंजित रंजितशैल निकुंजगते ।
निजगुणभूत महाशबरीगण सद्गुणसंभृत केलिलते
॥ १४ ॥ जय जय०

कटितटपीत दुकूलविचित्र मयूखतिरस्कृत चन्द्ररुचे
प्रणतसुरासुर मौलिमणिस्फुरदंशुलसन्नख चन्द्ररुचे ;
जितकनकाचल मौलिपदोर्जित निर्भरकुंजर कुम्भकुचे
॥ १५ ॥ जय जय०

विजितसहस्रकरैक सहस्रकरैक सहस्रकरैकनुते
कृतसुरतारक संवरतारक संहरतारक सूनुसुते ।
सुरथसमाधि समानसमाधि समाधिसमाधि सुजातरते
॥ १६ ॥ जय जय०

पदकमलं करुणानिलये वरिवस्यति योऽनुदिनं स शिवे
अयि कमले कमलानिलये कमलानिलयः स कथं न भवेत् ।
तवपदमेव परंपदमेवनुशीलयतो मम किं न शिवे
॥ १७ ॥ जय जय०

कनकलसत्कल सिन्धुजलैरनुसिंचिनुते गुणरङ्गभुवं
भजति स किं न शचीकुचकुंभ तटीपरिरंभ सुखानुभवम् ।
तवचरणं शरणं करवाणि नतामरवाणि निवासि शिवम्
॥ १८ ॥ जय जय०

तव विमलेन्दुकुलं वदनेन्दुमलं सकलं ननु कूलयते
किमु पुरुहूतपुरीन्दुमुखी सुमुखीभिरसौ विमुखिक्रियते ।
मम तु मतं शिवनामधने भवति कृपया किमुत क्रियते
॥ १९ ॥ जय जय०

अयि मयि दीनदयालुतया कृपयैव त्वया भवितव्यमुमे ।
अयि जगतो जननी कृपयासि यथासि तथाऽनुमितासिरते ।
यदुचितमत्र भवत्युररी कुरुतादुरुतापमपाकुरुते
॥ २० ॥ जय जय०

বিদ্যাপীঠ গীত

বিদ্যাপীঠের তরুলতা মুগ্ধ করে মন।
হৃদয় মাঝে রচে সে যে সোনারি স্বপন ॥
তার তুলনা ভাই
দেখতে নাহি পাই
ভ্রমি ত্রিভুবন,
সাধের বিদ্যাপীঠ যে মোদের শোভার নিকেতন ॥
বিদ্যাপীঠের উদার মাঠে বিস্তারিত স্নেহ
মন ভরে দেয়, প্রাণ ভরে দেয়, সবল করে দেহ !!
ঘর ছাড়া পায় ঘর,
আপন হ'ল পর,
দেখেছ কি কেহ
বিদ্যাপীঠের প্রাঙ্গনেতে মিটিবে সন্দেহ।
বিদ্যাপীঠের গগনতলে দীপ্ত আলো জ্বলে রে।
সেই আলোকের শিখা বয়ে, ছাত্রদল্ চলে রে।
চলবো দেশ দেশান্তরে
ঘুরবো মরু প্রান্তরে
অভীঃ হবার বাণী সাধি নূতন জগৎ গড়বো রে।

—স্বামী হিরণ্ময়ানন্দ

तच्छंयोरावृणीमहे । गातुं यज्ञाय । गातुं यज्ञपतये । दैवो स्वस्तिरस्तु नः । स्वस्तिर्मानुषेभ्यः । ऊर्ध्वं जिगातु भेषजम् । शं नो अस्तु द्विपदे । शं चतुष्पदे । ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

हरिः ॐ तत् सत् ।

श्री रामकृष्णार्पणमस्तु ॥

श्रीरामकृष्ण-सुप्रभातम्

धर्मस्य हानिमभितः परिदृश्य शीघ्रं
कामारपुष्कर इति प्रथिते समृद्धे ।
ग्रामे सुविप्रसादने ह्यभिजात देव
श्रीरामकृष्णभगवन् तव सुप्रभातम् ॥ १ ॥

बाल्ये समाध्यनुभवः सितपक्षिपङ्क्ति
सन्दृश्य मेघपटले 'समवापि येन ।
ईशैक्यवेदनसुखं शिवरात्रिकाले
श्रीरामकृष्णभगवन् तव सुप्रभातम् ॥ २ ॥

नानाविधानपि सनातनधर्ममार्गान्
क्रैस्तादिचित्रनियमान् परदेशधर्मान् ।
आस्थाय चैक्यमनयोरनुभूतवांस्त्वं
श्रीरामकृष्णभगवन् तव सुप्रभातम् ॥ ३ ॥

हे कालिकापदसरोरुहकृष्णभृङ्ग
मातुस्समस्तजगतामपि शारदायाः ।
ऐक्यं ह्यदर्शि तरसा परमं त्वयैव
श्रीरामकृष्णभगवन् तव सुप्रभातम् ॥ ४ ॥

राखालतारकहरींश्च नरेन्द्रनाथम्
अन्यान् विशुद्धमनसः शशिभूषणादीन् ।
सर्वज्ञ आत्मवयुनं त्वमिहानुशास्ति
श्रीरामकृष्णभगवन् तव सुप्रभातम् ॥ ५ ॥

नित्यं समाधिजसुखं निजबोधरूपम्
आस्वादयन् तव पदे शरणागतांश्च ।
आनन्दयन् प्रशमयन्नुपतिष्ठसे त्वं
श्रीरामकृष्णभगवन् तव सुप्रभातम् ॥ ६ ॥

स्वीकृत्य पापमखिलं शरणागतैर्यद्
आजीवनं बहु कृतं दयया स्वदेहे ।
तज्जातखेदनिवहं सहसे स्म नाथ
श्रीरामकृष्णभगवन् तव सुप्रभातम् ॥ ७ ॥

प्रातः प्रणामकरणं तव पादपद्मे
संसारदुःखहरणं सुलभं करोति ।
मत्वेति भक्तिभरिताः प्रतिपालयन्ति
श्रीरामकृष्णभगवन् तव सुप्रभातम् ॥ ८ ॥

गातुं स्तुतीस्तव जना अमृतायमानाः
सम्प्राप्य दर्शनमिदं तव पादयोश्च ।
धन्या नरेश भवितुं मिलितास्समीपं

श्रीरामकृष्णभगवन् तव सुप्रभातम् ॥ ९ ॥

सन्दाय दर्शनसुखं शरणागतेभ्यो
मोहान्धकारमखिलं त्वमपाकुरुष्व ।
ज्ञानार्क भक्तिजलधे सकलार्तिहन्तः
श्रीरामकृष्णभगवन् तव सुप्रभातम् ॥ १० ॥

आहैतुकीति करुणा किल ते स्वभावो
दुष्टाः कठोरहृदया अपि ते भजन्ते ।
त्वामेव सर्वजगतां जननि प्रपात्रि
श्रीशारदेश्वरि रमे तव सुप्रभातम् ॥ ११ ॥

सुप्तांस्तु भारतजनान् स्ववचःप्रहारै-
रुद्बोधयन् विवशयन् निजधर्ममार्गे ।
प्रोत्साहयन् परमतां प्रकटीकरोषि
वीरेशदत्तमहिमन् तव सुप्रभातम् ॥ १२ ॥

प्रातरुत्थाय यो देवं रामकृष्णं स्मरन् स्मरन् ।
स्तोत्रमेतत्पठेद्भक्त्या सोऽमृतत्वाय कल्पते ॥ १३ ॥

—स्वामी हर्षानन्द पुरी

श्रीरामकृष्ण-मङ्गलाशासनम्

मङ्गलं देशिकेन्द्राय यमिनां चक्रवर्तिने ।
पराशक्तिस्वरूपिण्यै देव्यै भवतु मङ्गलम् ॥ १ ॥
सत्यसन्धस्य भक्तस्य क्षुदीरामस्य सूनवे ।
गदाधराय मेदिन्यामवतीर्णाय मङ्गलम् ॥ २ ॥
गदाधरसुनाम्ने च भक्त्यावेष्टितचेतसे ।
अनादृतान्यविद्याय मङ्गलं ब्रह्मचारिणे ॥ ३ ॥
भवतारणदक्षायाः सन्निधौ दक्षिणेश्वरे ।
अपूर्वकालिकापूजानिरतायास्तु मङ्गलम् ॥ ४ ॥
मथुरानाथविश्वाससेवानिर्वृतचेतसे ।
तपश्चरणशीलाय योगीशायास्तु मङ्गलम् ॥ ५ ॥
साधकव्याजसन्दिष्टसर्वाम्नायसुवर्त्मने ।
सर्वतन्त्रस्वतन्त्राय नित्यसिद्धाय मङ्गलम् ॥ ६ ॥
तपसि ब्रह्मचर्ये च या स्वस्य सहधर्मिणी ।
तस्याः श्रीशारदादेव्या भर्त्रे भवतु मङ्गलम् ॥ ७ ॥
तोतापुरीयतिप्राप्तचरमाश्रमहेतुके ।
समाधौ निर्विकल्पाख्ये सुदीर्घस्थाय मङ्गलम् ॥ ८ ॥
स्थिताय मातुरादेशात् जगदुद्धारकारणात् ।

पूर्णाहन्तास्थितौ भावमुखे भवतु मङ्गलम् ॥ ९ ॥
पश्यते मातरं स्त्रीषु मृत्पिण्डं काञ्चनं तथा ।
सर्वभूतेषु च ब्रह्म मायातीताय मङ्गलम् ॥ १० ॥
सदारोऽपि विरक्तानां यतीनां पुरतस्तु यः ।
सदाशिवस्वरूपाय तस्मै भवतु मङ्गलम् ॥ ११ ॥
ब्रह्मानन्दादिसच्छिष्यगणपूज्यपदाय ते ।
तेषूद्दीप्तात्मबोधाय परहंसाय मङ्गलम् ॥ १२ ॥
गजद्वेदान्तसिंहेन विवेकानन्दरूपिणा ।
अपास्तनिद्रा भूर्येण कारितास्मै च मङ्गलम् ॥ १३ ॥
संसारसागरोत्तारसेतुभूतांघ्रिरेणवे ।
गुरवे सर्वलोकानां रामकृष्णाय मङ्गलम् ॥ १४ ॥
ॐ स्थापकाय च धर्मस्य सर्वधर्मस्वरूपिणे ।
अवतारवरिष्ठाय रामकृष्णाय मङ्गलम् ॥ १५ ॥
मङ्गलं गुरुदेवाय देव्यै मात्रे च मङ्गलम् ।
मङ्गलं भक्तवृन्देभ्यः सर्वलोकाय मङ्गलम् ॥ १६ ॥

—स्वामी अचलानन्दसरस्वती

विद्यापीठ के प्रकाशित

अन्यान्य पुस्तकें

१। संगीत संग्रह (अष्टम संस्करण) [वांला भाषा में]

२। विवेकानन्देर कथा व गल्प [„]

३। संस्कृत वाटिका [देवनागरी भाषा में]
(सप्तम तथा अष्टम श्रेणी के लिए)

DE-NOVO / Cal. 359706

Rs. 4·00